चयनिका

बहाउल्लाह के पावन लेखों का संकलन

© National Spiritual Assembly of the Bahá'ís of India

"Chayanika"
Hindi Translation of
" Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh"

Second Edition : 1990
Revised Edition : May 2008

चयनिका अंग्रेजी में बहाउल्लाह के पवित्र लेखों का संग्रह "ग्लीनिंग्स फ्राम द राइटिंग्स ऑफ बहाउल्लाह" के कुछ चुने हुए अंशों का एक संक्षिप्त संकलन हैं। इसके विभिन्न पदों की क्रम संख्या "ग्लीनिंग्स" के क्रमानुसार ही रखी गई है। बीच–बीच में जिन पदों को इस संक्षिप्त संकलन में शामिल नहीं किया गया है उनकी संख्या पाठक को क्रम में नहीं मिलेगी।

वैसे "ग्लीनिंग्स फ्रॉम द राइटिंग्स ऑफ बहाउल्लाह" नामक पुस्तक का सम्पूर्ण अनुवाद भी उपलब्ध है।

इस संकलन के आरम्भ में बहाई धर्म का एक संक्षिप्त परिचय भी शामिल किया गया है, ताकि बहाई धर्म के सम्बन्ध में जानकारी पाने की जिज्ञासा रखने वालों को प्रभुधर्म का प्रारम्भिक परिचय मिल सकें।

प्रकाशक

बहाई धर्म : एक संक्षिप्त परिचय

बहाई धर्म का उदय उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग मध्य में फारस में हुआ। यह वह विश्व धर्म है जो समय के प्रवाह के साथ विश्वव्यापी राष्ट्रसंघ का स्वरूप ग्रहण करेगा, जिसकी स्थापना मानवजाति के लिए स्वर्ण युग का संकेत है, एक ऐसा युग जिसमें मानव नस्ल की एकता निर्विवाद रूप से स्थापित होगी, इसकी प्रौढ़ता अपना स्वरूप ग्रहण करेगी और एक विश्वव्यापी सभ्यता के उदय तथा प्रस्फुटन द्वारा इसका शानदार भविष्य प्रकाश में आयेगा। दुनिया के मानचित्र के प्रत्येक महाद्वीप में बहाई समुदाय के विकास की सामान्य प्रक्रिया भी यही सिद्ध करती है।

बहाई धर्म के प्रणेता ईश्वरीय अवतार बहाउल्लाह हैं। यद्यपि बहाउल्लाह का जन्म शिया इस्लाम परिवार में हुआ और मुस्लिम तथा इसाई धर्मावलम्बियों द्वारा इसके विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं में इसे शिया इस्लाम का एक अल्पज्ञात सम्प्रदाय माना गया, एक एशियाई पंथ समझा गया अथवा यह माना गया कि यह मुहम्मदन धर्म की एक और शाखा है, लेकिन वस्तुतः बहाई धर्म अब अपनी स्वतंत्र पहचान बना चुका है और इसकी पहचान, न केवल उन परस्पर विरोधी मतावलम्बियों के बीच, जिन्होंने अनेक पीढ़ियों से मानवजाति को विभाजित कर रखा है तथा उनके भाग्य को अंधकार में धकेल दिया है, पूरी दुनिया के जनसाधारण के बीच भी एक

स्वतंत्र धार्मिक प्रणाली के रूप में उभर रही है। बहाई घर्म उस अनादि अनन्त सत्य से सम्बंधित पुनर्वक्तव्य है जो विगत सभी धर्मों के मूल में है, जो इन धर्मों के अनुयायियों के बीच एकता की शिक्षा से सम्बंधित एक नया आध्यात्मिक उत्साह भरता है, जो उन्हें एक नई आशा और मानव–प्रेम की भावना से अनुप्राणित करता है, जो उनके धार्मिक सिद्धान्तों की मूलभूत एकता को नई दृष्टि देता है और जो उनके समक्ष उस यशस्वी सौभाग्य का द्वार खोलता है जिसकी प्रतीक्षा मानव समुदाय कर रहा है।

बहाउल्लाह के अनुयायी बहाई हैं और बहाई दृढ़तापूर्वक यह विश्वास करते हैं कि बहाउल्लाह द्वारा प्रतिपादित मौलिक सिद्धान्त यह है कि धार्मिक सत्य अपने में सम्पूर्ण नहीं है, अपितु एक–दूसरे का परिपूरक है, दिव्य प्रकटीकरण निरन्तर चलने वाली एक प्रगतिशील प्रक्रिया है, दुनिया के सभी प्रमुख धर्म दिव्य हैं, उनके मूल सिद्धान्त एक हैं, उनके उद्देश्य एक समान हैं, उनकी शिक्षायें एक ही सत्य के विभिन्न पहलू हैं, उनके कार्य एक दूसरे के पूरक हैं, वे अपने सिद्धान्तों के अनावश्यक तत्व में ही एक दूसरे से अलग हैं और उनके लक्ष्य मानव समाज के आध्यात्मिक विकास के विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मानवजाति जिस नये और महान युग में प्रवेश कर चुकी है, उस युग के संदेशवाहक बहाउल्लाह का उद्देश्य विघटन नहीं, अपितु पूर्व के प्रकटीकरणों में की गई भविष्यवाणियों को पूरा करना है, उन परस्पर विरोधी मतों को एक करना है, जिनसे वर्तमान समाज क्षत–विक्षत है। बहाउल्लाह का अवतरण जिस प्रतिज्ञाबद्ध के आने की बात श्रीमद्भगवद्गीता, पूर्व तथा नवविधान (ओल्ड और न्यू

टेस्टामेंट) और कुरान में कही गई है, उसे पूरा करता है। उनका उद्देश्य अपने पहले आये ईश्वरीय संदेशवाहकों के स्थान को ओछा दिखलाना नहीं है, अपितु उस मूलभूत सत्य को दुहराना है, जो इन शिक्षाओं को इस प्रकार प्रतिष्ठापित करता है कि ये शिक्षायें हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप हों, हमारी क्षमता के अनुकूल हों और जिस युग में हम रहते हैं उस युग की समस्याओं, दुःखों और जटिलताओं को दूर करने के निमित्त हों। उनके धर्मादेश का उद्देश्य इस बात की घोषणा करना है कि मानवजाति की शैशवावस्था से जुड़ी खलबली धीरे–धीरे खत्म हो रही है और यौवनावस्था की ओर बढ़ने का रास्ता तैयार कर रही है और उस युग के आगमन की घोषणा कर रही है, जब तलवार हल के फाल के रूप में बदल दी जायेगी, जब अधर्म का नाश होगा और धर्म की पुनर्स्थापना होंगी, जब ईसा मसीह द्वारा प्रतिज्ञाबद्ध प्रभु–साम्राज्य स्थापित होगा और धरती पर निश्चित तथा स्थायी रूप से शांति सुरक्षित की जा सकेगी। बहाउल्लाह ने अपने धर्म–प्रकटीकरण को अन्तिम अवस्था नहीं बतलाया है, अपितु यह वचन दिया है कि जिस सत्य को मानव–समुदाय के समक्ष प्रकट करने के लिए सर्वशक्तिसम्पन्न परमेश्वर ने उन्हें अधिकृत किया है वह अपने पूर्ण अनुपात में भविष्य में विभिन्न चरणों में प्रकट किया जायेगा।

बहाई धर्म ईश्वर की एकता के सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है, इसके अवतारों की एकता को मान्यता प्रदान करता है और सम्पूर्ण मानवजाति की एकता के सिद्धान्त का अनुमोदन करता है। यह मानवजाति के एक होने की आवश्यकता और अवश्यमभाविता की घोषणा करता है, यह स्वीकारता है कि यह स्थिति धीरे–धीरे

करीब आ रही है और यह दावा करता है कि ईश्वर की समान्तरकारी शक्ति, जिसका संचालन उसके चुने हुये संदेशवाहक द्वारा इस युग में किया जा रहा है, के अतिरिक्त कोई भी अन्य शक्ति एकीकरण की इस स्थिति को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकती। इसके अलावा बहाई धर्म समस्त मानवजाति से यह आग्रह करता है कि उनका प्राथमिक कर्त्तव्य यह है कि सत्य का स्वतंत्र अनुसंधान किया जाये। बहाई धर्म सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों और अंधविश्वासों की निन्दा करता है। यह घोषणा करता है कि धर्म का उद्देश्य मैत्री और सामंजस्य स्थापित करना है। यह विज्ञान के साथ अपने आवश्यक समन्वय का दावा करता है और यह मानता है कि धर्म शांतिपूर्ण और व्यवस्थित समाज के विकास का सर्वोत्तम साधन है। यह स्त्री–पुरुषों के समान अधिकार, अवसर और विशेष सुविधाओं का स्पष्ट समर्थन करता है अनिवार्य शिक्षा पर बल देता है, अत्यधिक गरीबी और धनाढ्यता की स्थितियों को समाप्त करने की सिफारिश करता है, पुजारी वर्ग को समाप्त करता है, गुलामी, तपश्चर्या, भिक्षावृत्ति और मठवाद की वर्जना करता है, एक विवाह प्रथा का प्रावधान देता है और तलाक को हतोत्साहित करता है। बहाई धर्म सरकार के प्रति पूरी निष्ठा के साथ वफादारी की आवश्यकता पर बल देता है, सेवाभाव से किये गये किसी भी कर्म को ईश्वर की उपासना का दर्जा देता है, एक सहायक अंन्तर्राष्ट्रीय भाषा की संरचना अथवा चयन का आग्रह करता है और उन संस्थाओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जो मानवजाति के बीच सामान्य शांति बहाल कर सके तथा उसे स्थायित्व प्रदान कर सके।

बहाई धर्म तीन केन्द्रीय विभूतियों के गिर्द केन्द्रित है जिनमें

प्रथम एक युवा थे, शिराज के निवासी, जिनका नाम मिर्जा अली मुहम्मद था और जो 'बाब' (द्वार) के रूप में जाने जाते थे। बाब ने 23 मई 1844 में, पच्चीस वर्ष की अवस्था में, अग्रदूत होने का दावा किया जो प्राचीन युगों के पवित्र ग्रंथों के अनुसार अपने से महान दूत के आगमन की घोषणा करेंगे और जिनके आगमन का उद्देश्य पिछले सभी युगों की पूर्णता होगी तथा मानवजाति के धार्मिक इतिहास में एक नये युगचक्र की शुरूआत होगी। उनकी ही जन्म भूमि में धार्मिक संस्थान और सरकार की व्यवस्थित शक्तियों द्वारा इतनी तेजी के साथ और इतने कठोर अत्याचारों का सिलसिला शुरू हुआ कि एक–के–बाद–एक अंधाधुन्ध बंदी बनाये जाने, अजरबयजान की पहाड़ियों में कैदी के रूप में भेजे जाने, माहकु और चिहरिक के किलों में कैद किये जाने और अन्ततः तबरीज के चौक पर 9 जुलाई 1850 में बन्दूकधारी दस्ते द्वारा प्राणदण्ड दिये जाने का इतिहास मिलता है। उनके कोई बीस हजार अनुयायी क्रूरता और निर्ममता के साथ मौत के घाट उतार दिये गये। बहुतेरे पश्चिमी लेखकों, राजनयिकों, यात्रियों और विद्वानों ने इसकी चर्चा अपने लेखों में की है। इनमें से कुछ तो इस घृणित अत्याचार के प्रत्यक्षदर्शी थे जिन्होंने द्रवित होकर अपनी पुस्तकों और डायरियों में इन घटनाओं को शब्दबद्ध किया है।

मिर्जा हुसैन अली, उपनाम बहाउल्लाह (ईश्वर के प्रकाश), जिनके आगमन की भविष्यवाणी बाब ने की थी, को भी उन्हीं अज्ञानता और धर्मान्धता की शक्तियों का सामना करना पड़ा। वह तेहरान में बन्दी बनाये गये और 1852 में अपनी जन्मभूमि से पहले बगदाद और फिर कुस्तुनतुनिया, एड्रियानोपल और अन्त में कैदियों

की नगरी अक्का में निर्वासित किये गये, जहाँ वह बन्दी के रूप में लगभग चौबीस साल तक रहे और सन् 1892 में उनका स्वर्गारोहण हुआ। अपने निर्वासन के दौरान, खासतौर से एड्रियानोपल और अक्का में उन्होंने अपने युग के विधान और आदेशों को शब्दबद्ध किया और सौ से भी अधिक ग्रंथों में अपने धर्म के सिद्धान्तों की व्याख्या की, पूर्व और पश्चिम के सम्राटों और शासकों को जिनमें ईसाई और मुस्लिम शासक शामिल थे, अपना संदेश दिया, पोप और इस्लाम के खलीफा, अमरीकी महाद्वीप के गणराज्यों के प्रधान दण्डाधिकारियों, सम्पूर्ण ईसाई धार्मिक संस्थान, शिया और सूफी इस्लाम के नेताओं और फारसी धर्म के पुरोहितों को सम्बोधित किया। इन लेखों में उन्होंने अपने धर्म–प्रकटीकरण का उद्घोष किया, अपने धर्म के प्रति उन लोगों का आह्वान किया और इसे अपनाने की बात कही, उनके नकारे जाने के परिणामों के प्रति आगाह किया और उनके अहंकार और अत्याचार के लिए उनमें से कुछ लोगों की भर्त्सना की।

उनके सबसे बड़े लड़के, अब्बास एफेंन्दी, जो अब्दुल बहा (बहा के सेवक) के नाम से जाने गये और जो बहाउल्लाह द्वारा उनके विधिसम्मत उत्तराधिकारी और उनकी शिक्षाओं के अधिकृत व्याख्याता नियुक्त किये गये और जो बाल्यावस्था से ही अपने पिता के साथ रहे और उनके निर्वासन तथा कष्टों के सहयोगी बने, सन् 1908 तक एक कैदी के रूप में रहे। सन् 1908 में युवा तुर्क क्रांति के परिणामस्वरूप वह कारावास से मुक्त हुये। हायफा में अपना निवास बनाते हुये वह शीघ्र ही मिस्र, यूरोप और उत्तरी अमेरिका की तीन वर्षों की यात्रा पर निकल पड़े, जिसके दौरान विशाल जनसमूहों

को उन्होंने सम्बोधित किया और अपने पिता की शिक्षाओं की व्याख्या की तथा उस विपत्ति के निकट आने की भविष्यवाणी की जो शीघ्र ही मानवजाति को आक्रांत करने वाली थी। प्रथम विश्व युद्ध के समय वह अपने घर वापस आये। वापस लौटते समय तब तक उनके जीवन पर खतरा बना रहा, जब तक जनरल एलेनबी के अधीन सेना ने फिलीस्तिनियों को मुक्त नहीं करा लिया। जनरल एलेनबी ने उनके प्रति और उनके साथ अक्का और हायफा में रह रहे सह–निर्वासितों के प्रति बड़ी सहानुभूति दिखलाई। 1921 में उनकी मृत्यु हो गई और कार्मल पर्वत पर बहाउल्लाह की इच्छा के अनुरूप बनी बाब की समाधि के पास ही उनकी समाधि बनी।

अब्दुल बहा के निधन के साथ ही बहाई धर्म का प्रथम तथा वीर काल समाप्त हुआ और रचनात्मक काल की शुरूआत हुई। इस काल के दौरान बहाई धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था का धीरे–धीरे प्रकाश में आना नियत था। इसकी स्थापना की भविष्यवाणी बाब द्वारा की गई थी, इसके विधान बहाउल्लाह द्वारा प्रकट किये गये थे और इसकी रूपरेखा अब्दुल बहा द्वारा उनके 'वसीयत एवम् विधानपत्र' में प्रस्तुत की गई थी। इस प्रशासनिक व्यवस्था की आधारशिला उन राष्ट्रीय और स्थानीय परिषदों द्वारा रखी जा रही है, जो प्रभु धर्म के अनुयायियों द्वारा निर्वाचित की जाती हैं। पूरी दुनिया की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्य विश्व न्याय मंदिर का निर्वाचन करते हैं।

विश्व न्याय मंदिर को स्थायी रूप से इसके विश्व आध्यात्मिक केन्द्र में, जहाँ इसके संस्थापकों की समाधियाँ हैं, स्थापित किया गया है।

बहाई धर्म की संस्थाओं के विरुद्ध कजार वंश के सम्राटों, इस्लाम के खलीफाओं, मिस्र के पादरियों और जर्मनी के नाजी शासन जैसे भयानक विरोधियों द्वारा किये गये प्रहारों के बावजूद बहाउल्लाह के युगधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था पृथ्वी के सभी महाद्वीपों में अपना शाखा–विस्तार कर चुकी है और विश्व के अनेक देशों में पूर्णतः स्थापित हो चुकी है। अपने हल्के प्रतिनिधित्व के साथ ही सही, बहाई धर्म सभी नस्लों के लोगों को अपने में शामिल कर चुका है और इसके समर्थकों में विभिन्न सम्प्रदायों के ईसाई, सुन्नी और शिया सम्प्रदायों के मुस्लिम, यहूदी, हिन्दू, सिक्ख, पारसी और बौद्ध हैं। यह नियत है कि बहाई प्रशासनिक व्यवस्था बहाई विश्व राष्ट्रमंडल के रूप में विकसित होगी। अपनी नियुक्त एजेन्सियों द्वारा इसने दुनिया की पचास से भी अधिक भाषाओं में बहाई साहित्य का प्रकाशन और वितरण अभी तक किया है।

यह अनेक देशों की नागरिक मान्यता प्राप्त कर चुकी है, जिसके कारण दान की राशि को कर–मुक्त रखने, बहाई विवाह को विधिवत सम्पन्न करने और भवन–निर्माण जैसी सुविधाएँ प्राप्त हैं।

विभिन्न धर्मों के संस्थापकों की मृत्यु के बाद उभरी प्रशासनिक प्रणाली से अलग बहाई धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था की उत्पत्ति दिव्य है, जो स्वयं धर्म–संस्थापक द्वारा दिये गये विधानों, आदेशों, अध्यादेशों और संस्थानों के आधार पर सुदृढ़तापूर्वक आश्रित एवं स्थापित है और पवित्र ग्रंथों के अधिकृत व्याख्याकारों की व्याख्याओं के आधार पर काम करती है। यद्यपि इसके प्रारम्भिक काल से ही इसके ऊपर कुठाराघात किये गये हैं तथापि अपने दिव्य चरित्र के कारण धार्मिक इतिहास के आख्यानों में यह व्यवस्था अनूठी है। यह

प्रशासनिक व्यवस्था अनुयायियों की विविधता में एकता बनाये रखने में सक्षम है और उन्हें इस बात की क्षमता प्रदान करती है कि वे एक होकर और प्रणालीबद्ध तरीके से सम्पूर्ण गोलार्द्ध में बहाई धर्म के क्रियाकलाप सम्पन्न कर सकें। इतना सुनिश्चित है कि इस धर्म की सीमाओं का विस्तार होगा और इसके प्रशासनिक संस्थान सुदृढ़ होंगे।

इस सम्बंध में यह ध्यान देना आवश्यक है कि यह व्यवस्था जिस धर्म की सेवा और सुरक्षा करती है और जिसके विकास के मार्ग प्रशस्त करती है वह बहाई धर्म आवश्यक रूप से अलौकिक, अंतर्राष्ट्रीय और पूरी तरह से गैरराजनीतिक तथा निर्दलीय है। यह वैसी किसी भी नीति अथवा विचारधारा का विरोध करती है जो किसी नस्ल, वर्ग और राष्ट्र की प्रशंसा का अनुरोध करती है। इसमें न कोई पुरोहितवाद है और न ही कोई कर्मकांड। इसके कार्यकलाप इसके अनुयायियों द्वारा स्वेच्छापूर्वक दिये गये दान द्वारा सम्पादित किये जाते हैं। यद्यपि बहाई धर्म के अनुयायी अपनी–अपनी सरकार के प्रति वफादार होते हैं, यद्यपि वे अपने देश के लिए प्रेम से अनुप्राणित होते हैं और इसके उच्चादर्शों के विकास के लिए प्रयत्नशील होते हैं तथापि बहाई धर्म के अनुयायी सम्पूर्ण मानवजाति का एक अस्तित्व मानते हैं और इसके अनिवार्य हित से गहरे रूप से जुड़े होते हैं और अपने व्यक्तिगत क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय हितों को समग्र मानवजाति के हितों के समक्ष गौण मानते हैं। बहाई धर्म के अनुयायी यह भलीभाँति समझते और जानते हैं कि एक–दूसरे पर निर्भर लोगों और राष्ट्रों के संसार में कुछ भागों अथवा व्यक्तियों की हित–रक्षा से कोई लाभ नहीं अगर सम्पूर्ण मानवजाति के हितों को नकार दिया जाये।

इस सच्चाई को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिये कि बहाई धर्म ने अपने स्वतंत्र धार्मिक चरित्र का प्रदर्शन किया है और कुछ इस्लामी देशों में इसने रूढ़िवादिता की बेड़ियों से स्वयं को मुक्त कर लिया है। इनमें से एक देश में इसने अपनी स्वतंत्र धार्मिक पहचान बना ली है और अपना सम्मानित स्थान बनाने में सफल हुआ है।

रूमानिया की महारानी मैरी ने बहाई धर्म की प्रशस्ति में कहा है : "यह उस विस्तृत घेरे की तरह है जिसके अन्तर्गत वे सभी एकत्रित हो रहे हैं, जिन्होंने आशा के शब्द की तलाश की है। यह पहले के सभी अवतारों को स्वीकारता हैं यह किसी अन्य धर्म–सिद्धान्त को नष्ट नहीं करता और अपने सभी द्वार खोले रखता है। बहाई शिक्षा आत्मा को शांति देती है और हृदय को आशा से भरती है। जो आशा और विश्वास की तलाश में हैं, उनके लिए बहाउल्लाह के शब्द मरुभूमि में निर्झरनी के समान हैं... यह एक आश्चर्यचकित कर देने वाला संदेश है जिसे बहाउल्लाह और उनके पुत्र अब्दुल बहा ने हमें दिया है। उन्होंने इसे क्रूरतापूर्वक संस्थापित नहीं किया है, क्योंकि उन्हें पता है कि शाश्वत सत्य का यह बीज एक दिन जड़ पकड़ेगा और फैलेगा... । यह नये रूप में ईसा मसीह का संदेश है, लगभग उन्हीं शब्दों में, किन्तु आने वाले हजार सालों को ध्यान में रखते हुये। अगर कभी भी बहाउल्लाह अथवा अब्दुल बहा का नाम आपके ध्यान में आये तो उनके लेखों को अपने से दूर न रखें। उनकी पुस्तकों को खोज निकालें और उनके शांति–संवाहक, प्रेम–संचारक और यशस्वी शब्दों और शिक्षाओं को अपने हृदय की गहराइयों में उतारें जैसे वे मेरे हृदय में उतर चुके हैं।"

लियो टालस्टाय ने लिखा है, "बाबियों (दिव्यात्मा बाब के अनुयायियों को बाबी कहा जाता था) की शिक्षाओं का विशाल भविष्य है। मैं बाबियों के साथ पूरी सहानुभूति रखता हूँ, क्योंकि यह भ्रातृत्व, समानता और ईश–सेवा के लिए भौतिक जीवन के त्याग की शिक्षायें देता है। बाबियों की शिक्षायें, जिसका उद्‌गम इस्लाम से हुआ है, बहाउल्लाह की शिक्षाओं के माध्यम से धीरे–धीरे विकसित हुई हैं और अब हमारे समक्ष उच्चतम एवं शुद्धतम् धार्मिक शिक्षा के रूप में प्रस्तुत हैं।"

स्वर्गीय राष्ट्रपति मसारिक की सलाह है, "इन सिद्धान्तों और शिक्षाओं को राजनयिकों के पास, विश्वविद्यालयों और कालेजों में, स्कूलों में ले जाओ और इनके विषय में लिखो। जनसाधारण ही विश्व शांति लायेंगे।"

राष्ट्रपति एडुअर्ड बिनीज की उक्ति है, "बहाई धर्म मानवात्मा के चरमोत्कर्ष का बहुत बड़ा साधन है। बहाई धर्म आज विश्व में एक बहुत बड़ी नैतिक और सामाजिक शक्ति है। मैं इस बात से सहमत हूँ कि दुनिया में नैतिक और राजनैतिक संकट दिन–ब–दिन बढ़ते जा रहे हैं, और अब हमें अधिक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। बहाई धर्म की तरह एक आन्दोलन की आवश्यकता है जो विश्व–संगठन का मार्ग प्रशस्त करता हो।"

"रिकंसिलिएशन ऑफ रेसेज एण्ड रिलीजन्स" के लेखक रेवरेण्ड टी.के. येनी ने अपनी पुस्तक में लिखा है : "अगर हाल के समय में कोई अवतार आये हैं तो वह हैं बहाउल्लाह, जिनकी ओर हमें उन्मुख होना चाहिए। बहाउल्लाह उच्चतम श्रेणी के व्यक्ति थे, अवतारों की श्रेणी के।" कार्मेल के विस्काउंट सैम्युअल ने घोषणा

की, "सभी धर्म–सिद्धान्तों के मूल को निकाल सकना सच, सम्भव है। बहाई धर्म का यह मुख्य उद्देश्य है। इसकी स्थापना और विकास वर्तमान काल में होने वाले आन्दोलनों में प्रमुख है।"

प्रोफेसर नौरमन वेंटविक की लिखित उक्ति है, "फिलस्तीन को अब तीन नहीं चार धर्मों की भूमि माना जाना चाहिये, क्योंकि बहाई धर्म, जिसका आध्यात्मिक केन्द्र अक्का और हायफा में है, अब विश्व–धर्म का स्वरूप ग्रहण कर रहा है। जहाँ तक इस भूमि में इसके प्रभाव का प्रश्न है, यह अन्तर्राष्ट्रीय और अन्तधार्मिक समझ के लिए कारगर सिद्ध हुआ है।"

बहुचर्चित व्यक्तित्व वाले स्वर्गीय प्रोफेसर बेंजामिन जोवेट के विचार, "यह बहाई आन्दोलन ईसामसीह के बाद आने वाला महानतम प्रकाश है। तुम इस पर ध्यान दो और कभी भी अपनी दृष्टि से ओझल नहीं होने दो। इस पीढ़ी के लोगों के लिए यह इतना महान और इतना करीब है कि इस पीढ़ी के लोग इसे समझ नहीं सकते। भविष्य ही इसके महत्व को उजागर करेगा।"

–धर्मसंरक्षक शोगी एफेंदी द्वारा लिखे गये
बहाई धर्म के परिचय पर आधारित।

चयनिका

2. सभी वस्तुओं का आरम्भ ईश्वर का ज्ञान है और सभी वस्तुओं का अंत उन सबका पूरी निष्ठा के साथ अनुपालन करना है, जो स्वर्ग और धरती की समस्त वस्तुओं में व्याप्त दिव्य इच्छा के स्वर्ग से भेजे गये हैं।

3. दिव्य रहस्यों का प्रकटीकरण, जो अनादि काल से ईश्वर के सभी संदेशवाहकों का उद्देश्य तथा वचन रहा है और जो उसके संदेशवाहकों की सर्वाधिक प्रिय इच्छा रही है, ईश्वर की सर्वव्यापी इच्छा और उसके निर्विरोध आदेश के प्रभाव से मनुष्यों के समक्ष प्रकट हो चुका है। इस रहस्योद्घाटन के होने की बात सभी पवित्र धर्मग्रंथों में कही गई है।

4. यह वह युग है, जब ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ अनुकम्पाओं की वर्षा मानवजाति पर की गई है, वह युग जब समस्त सृजित वस्तुओं में उसकी अनन्त कृपा भर दी गई है। दुनिया के सभी लोगों के लिये यह आवश्यक है कि वे अपने मतभेदों को भुला दें और पूरी एकता तथा शांति के साथ प्रभु द्वारा सुरक्षित प्रेम तथा दया के वृक्ष तले शरण लें। यह आवश्यक है कि इस युग में जो कुछ भी उनके चरित्र को ऊँचा उठा सके उसके प्रति समर्पित रहें और अपने सर्वोत्तम हितों के लिये किये गये कार्यों को प्रोत्साहन दें।

उस एक सत्य ईश्वर से तुम प्रार्थना करो कि सभी मनुष्यों को वह प्राप्त करने में सहायता मिले जो हमारी दृष्टि में स्वीकार्य है। शीघ्र ही वर्तमान व्यवस्था का अंत हो जायेगा और उसके स्थान पर एक नई व्यवस्था दी जायेगी।

5. यह वह युग है जब ईश्वर की दया का सागर मानवजाति के समक्ष उड़ेल दिया गया है, वह युग जब उसकी कृपा से सूर्य ने मानव पर अपनी प्रभा बिखेर दी है, वह युग जिसमें ईश्वर की उदार कृपा के बादलों की छाँव समस्त मानवजाति को मिली है। अब वह समय है जब प्रेम और सहअस्तित्व के जीवनदायी बयार, मित्रवत् सम्बन्ध और परोपकार के प्राणदायी जल से निराश हृदयों को प्रफुल्लता तथा जीवंतता प्रदान की जायेगी।

वे जो ईश्वर के प्रिय पात्र हैं, जहाँ कहीं भी इकठ्ठे हों और जिससे भी मिलें प्रभु के प्रति वे अपनी दृष्टि, आराधना और प्रार्थना में इस प्रकार की विनम्रता और सहृदयता का परिचय दें कि उने पाँव तले की धूल का हर एक कण उनकी भक्ति की गहराई का प्रमाण दे। इन पवित्र आत्माओं द्वारा किये गये वार्तालापों का प्रभाव ऐसा हो कि उनके पाँव तले की धूल के वे कण चमत्कृत हो जायें। "वे इस प्रकार का अपना व्यवहार रखें कि जिस पृथ्वी पर वे अपना कार्य–व्यापार करते हों, उसे भी यह कहने का अवसर न मिल पाये : मुझे तुमसे ऊपर स्थान मिलना चाहिये, क्योंकि देखो, किस धैर्य और विनम्रता के साथ तुम्हारे भार को मैं वहन कर रही हूँ। मैं वह माध्यम हूँ जिसके द्वारा ईश्वर अपने वरदान सभी

प्राणियों तक भेजता है। फिर भी हमें जो सम्मान दिया गया है और जो सम्पन्नता हमें मिली है वह हमारी विनम्रता का परिचय देती है, देखो किस प्रकार पूर्ण समर्पण के साथ मैं मनुष्य के पैरों तले रौंदी जाती हूँ...।"

एक–दूसरे के प्रति सहनशीलता, दयालुता और प्रेम प्रदर्शित करो। अगर तुम में से कोई व्यक्ति किसी परम सत्य को समझ पाने में असमर्थ है अथवा इसे समझने की कोशिश कर रहा हो तो उसके साथ बातचीत के दौरान पूरी दया और सदेच्छा का भाव रखो। सत्य को देखने और पहचानने में उसकी मदद करो। कभी भी तुम अपने को बड़ा न समझो अथवा ऐसा न मानो कि तुम अधिक प्रतिभासम्पन्न हो।

इस युग में व्यक्ति का परम महान् और दायित्व यह है कि उस पर प्रभु द्वारा बरसायी जाने वाली अनन्त कृपा के अमृत–जल का वह भरपूर पान करे। किसी को भी उस कृपा–जल की विशालता या लघुता पर विचार नहीं करने दो। उस कृपा–जल का भाग किसी की हथेली भर हो सकता है, किसी को एक प्याले भर मिल सकता है और किसी को असीम जलराशि की प्राप्ति हो सकती है।

इस युग में प्रत्येक आँख को वह देखना चाहिए जिससे प्रभुधर्म का सुचारु रूप से प्रसार हो। वह जो अनंत सत्य है, मेरा साक्षी है, इस युग में और कुछ भी प्रभुधर्म को उतनी हानि नहीं पहुंचा सकता जितना प्रभु के प्रिय पात्रों के बीच द्वेष, फूट, कलह और वैमनस्य का भाव। प्रभु की शक्ति एवं सत्ता की सहायता से इन्हें दूर भगाओ और सर्वज्ञाता, सर्वबुद्धिमान

प्रभु के नाम पर, उस एक करने वाले के नाम पर अपने हृदयों को परस्पर स्नेह और प्रेम के ताने–बाने से एक सूत्र में बांधने की कोशिश करो।

उस परम सत्य प्रभु की प्रार्थना करो कि वह ऐसी कृपा प्रदान करे कि तुम्हें वह शक्ति मिले कि तुम ऐसे कर्मों का रसास्वादन कर सको, जो उसकी राह में किये जाते हों और ईश्वर के लिये किये गये कार्यों में विनम्रता और समर्पण के माधुर्य का रसास्वादन करो। स्वयं को भूल जाओ और अपनी दृष्टि अपने पड़ोसी की ओर डालो। अपनी शक्ति उस काम में लगाओ, जिससे मनुष्य को शिक्षित किया जा सके। ईश्वर से कुछ भी न छिपा है और न छिपा रह सकता है। अगर तुम उस प्रभु की बताई राह पर चलोगे तो प्रभु के अनन्त और कभी न नष्ट होने वाले वरदानों की वर्षा तुम पर होगी। यह वह प्रदीप्त पाती है, जिसके छंद उस परमात्मा की गतिशील लेखनी से अभिप्रेरित हैं, जो समस्त ब्रह्माण्ड का स्वामी है। अपने हृदय से इस पर विचार करो और अपने को उनमें से बनाओ जो इसके आदेशों का अनुपालन करते हैं।

6. देखो, किस प्रकार पृथ्वी के विभिन्न लोग और जातियाँ उस प्रतिज्ञाबद्ध के आगमन की प्रतीक्षा कर रही हैं। जैसे ही सत्य के उस सूर्य ने स्वयं को प्रकट किया तो हतभाग्य ! उन लोगों को छोड़कर जिन्हें ईश्वर ने पथनिर्देश के लिये चुना, सभी ने उसकी ओर से मुंह मोड़ लिया। इस युग में हम साहस नहीं कर सके कि हम उस पर्दे को उठायें जिसके अन्दर वह परम स्थान छुपा है, जो प्रत्येक भक्त प्राप्त

कर सकता है, क्योंकि दिव्य प्रकटीकरण से जो आनन्द मनुष्य को प्राप्त हो सकता है वह आनन्द का अतिरेक मनुष्य की बेहोशी और मृत्यु का कारण बन सकता है।

7. यह युग वास्तव में महान है। सभी धार्मिक ग्रंथों में ईश्वर के युग के रूप में इसका वर्णन इस युग की महत्ता का प्रमाण है। ईश्वर के प्रत्येक अवतार तथा संदेशवाहक की आत्मा इस आश्चर्यजनक दिवस की प्यासी रही है। पृथ्वी के समस्त प्राणी इस युग की आस लगाये हुये हैं। ईश्वर की इच्छा के स्वर्ग में जैसे ही ईश्वर के प्रकाश ने स्वयं को प्रकटित किया, ईश्वर की इच्छा से मार्गदर्शन प्राप्त भक्तों के अतिरिक्त सभी मूकबधिर तथा दिशाहीन हो गये।

ईश्वर यह वर दे की एकता की ज्योति सारी पृथ्वी पर छा जाये तथा "साम्राज्य प्रभु का है" यह भाव सभी लोगों तथा राष्ट्रों के ललाट पर अंकित हो जाये।

10. यह वह दिवस है जिसे ईश्वर की लेखनी ने अपने सभी पवित्र ग्रंथों में महिमा प्रदान की है। उनमें कोई ऐसी पंक्ति नहीं है जो ईश्वर के पवित्र नाम की महानता की घोषणा न करती हो और कोई भी पुस्तक नहीं है जो इस सर्वाधिक महान विषय की उच्चता को प्रमाणित न करती हो। यदि हम उन सबका उल्लेख करें जो इस अवतरण के संबंध में धार्मिक पुस्तकों तथा पवित्र ग्रंथों में लिखा हुआ है तो यह पत्र अत्यंत विशाल हो जायेगा। इस दिवस में प्रत्येक मनुष्य के लिये यह आवश्यक है कि वह ईश्वर की अनन्त कृपा में

अपनी आस्था रखे तथा पूर्ण बुद्धिमत्ता के साथ ईश्वर के धर्म की यथार्थता के प्रसार हेतु उठ खड़ा हो। तभी, मात्र तभी पूरी पृथ्वी ईश्वर के प्रकटीकरण के सुप्रभात से प्रकाशित होगी।

13. अतीत का विचार करो ! कितने उच्च और निम्न कोटि के लोगों ने, हर पल, आतुरता के साथ, प्रभु के चुने गये भक्तों के बीच ईश्वर के अवतारों के आगमन की प्रतीक्षा की है, न जाने कितनी बार उन्होंने प्रार्थना की है कि प्रभुकृपा की बयार बहे और प्रतिज्ञाबद्ध सौंदर्य अदृश्य पर्दे से बाहर आये और सम्पूर्ण विश्व को दिखलाई दे और जब कभी भी उसकी दया का द्वार खुला और मानवजाति पर दिव्य कृपा का बादल बरसा और अदृश्य प्रभु का प्रकाश स्वर्गिक गरिमा के क्षितिज के ऊपर दिखलाई पड़ने लगा तब सभी ने उसे अस्वीकार कर दिया और उसकी मुखाकृति से विमुख हो गये। वह मुखाकृति और किसी की नहीं, स्वयं प्रभु की थी।

यह स्पष्ट है कि प्रत्येक धार्मिक व्यवस्था के समय लाये गये परिवर्तन उन बादलों की तरह होते हैं जो मनुष्य की समझ के अन्तर्चक्षु को ढँक लेते हैं, जिस कारण दिव्य सार की चमक से प्रकाशित होने से वे वंचित हो जाते हैं। इस पर विचार करो कि युग–युगान्तर से किस प्रकार पीढ़ी–दर–पीढ़ी अपने पूर्वजों का अंधानुकरण करती आ रही है और अपने धर्मों द्वारा निर्दिष्ट आदेशों का पालन करने के लिये प्रशिक्षित की जाती रही है। इसलिये, इन लोगों को अगर एकाएक यह पता चले कि उनके ही बीच में रहने वाला कोई पुरुष, जो सभी मानवीय सीमाओं में बंधा उनके ही समान था, वही

उनके धर्मों द्वारा निर्धारित मान्य सिद्धांतों को खत्म करने के लिये उठ खड़ा हुआ है, ऐसे सिद्धांत जिनके सहारे शताब्दियों से वे एक अनुशासन में रहे हैं और जिन सिद्धांतों का विरोध करने वाले अथवा मानने से इन्कार करने वाले को वे नास्तिक मानते आये हैं, दुष्ट और दुराचारी समझते आये हैं, निश्चय ही, वे ईश्वर के सत्य को स्वीकारने में बाधाओं का अनुभव करेंगे। ऐसे विचार उन बादलों की तरह हैं जो वैसे लोगों की आँखों के आगे छा जाते हैं जिनकी अंतरात्मा ने अनासक्ति का रसास्वादन नहीं किया है, न ही ईश्वर के ज्ञान के प्याले से पान किया है। ऐसे लोगों को जब उन परिस्थितियों का ज्ञान कराया जाता है तब वे ऐसे अंधकार के वशीभूत हो जाते हैं कि बिना किसी प्रश्न के वे ईश्वर के अवतार को नास्तिक करार कर देते हैं और उसे मृत्युदंड दे देते हैं। तुमने पिछले युगों में ऐसी घटनाओं के बारे में अवश्य ही सुना होगा और इस युग में भी तुम उन्हें देख रहे हो।

इसलिये, हमारे लिये यह उचित है कि अपनी शक्ति भर हम प्रयास करें कि ईश्वर की अदृश्य सहायता से ये पर्दे हट जायें और स्वर्ग से भेजी गई परीक्षाओं के बादल छंट जायें, ताकि उस मुखाकृति की आत्मा, उस प्रभासित मुखाकृति के सौन्दर्य को हम देख पायें और केवल उसके द्वारा ही उसे पहचान पायें।

14. दिव्य वसंत आ गया है, हे महालेखनी, सर्वदयालु का महापर्व शीघ्र ही निकट आ रहा है। अपने को तैयार कर ले और सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष ईश्वर के नाम को मुखरित कर

दे और उसका गुणगान कुछ इस प्रकार कर कि सम्पूर्ण सृष्टि पुनर्जीवित हो एक नई चेतना से भर जाये।

मेरे नाम के अतिरिक्त अन्य सभी नामों को अपने से अलग कर दो, अपनी धनसम्पत्ति को मुझ पर न्योछावर कर दो और स्वयं को इस महासागर की अनन्त गहराइयों में डुबा दो। इस की गहराई में विवेक और वाणी के मोती छिपे हैं। इस सागर में मुझ सर्वकृपालु के नाम की लहरें तरंगित होती हैं। इस प्रकार का निर्देश तुम्हें उसने दिया है, जो मातृग्रंथ का रचयिता है...।

वे धन्य हैं जो अनासक्ति के पंखों के सहारे उड़ चले हैं और जिन्होंने उस स्थान को प्राप्त कर लिया है जो ईश्वर के आदेश के अनुसार समस्त सृष्टि को आच्छादित कर लेता है। ऐसे उच्च स्थान को प्राप्त कर लेने के बाद वे न तो ज्ञानियों की मिथ्या कल्पनाओं से और न ही संसार के असंख्य लोगों के बहकावे से प्रभुधर्म की राह से विचलित हो पाते हैं। ऐ लोगों, तुम में से ऐसा कौन है जो इस विश्व का त्याग कर दे और उस परमेश्वर का सान्निध्य प्राप्त करे जो सभी नामों का स्वामी है ?

15. हे मेरे सेवक, तूने आज के इस युग में सच्चिदानन्द को खोजा है तथा उसके प्रेम से अभिभूत है, जबकि कुछ अंतर्ज्ञान से युक्त लोगों को छोड़कर, सभी ईश्वर से दूर हो गये हैं। ईश्वर अपनी कृपा द्वारा तुम्हें सदा–सर्वदा बना रहने वाला पारितोषिक प्रदान करे क्योंकि तुमने इस युग में ईश्वर

को खोजने की आकांक्षा की है, जबकि अन्य लोगों ने आँखें बंद कर ली हैं। यह जान लो कि यदि हम उन दुःखों की एक झलक भी तुझको दिखा दें जो ईर्ष्यालु एवं द्वेषपूर्ण लोगों ने हमें दिये हैं तो तू चीत्कार कर रोने लगेगा तथा हमारी दयनीय अवस्था पर दिन रात विलाप करेगा। क्या कोई ऐसी विवेकशील तथा ज्ञानी आत्मा मिलेगी जो इस प्रकटीकरण के आश्चर्यों को समझ सके–उन आश्चर्यों को जो ईश्वर की सम्प्रभुता तथा इसकी शक्ति की महानता का प्रमाण देते हैं। काश ! ऐसा व्यक्ति उठ खड़ा होता जो पूर्णतया ईश्वर के लिये प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में लोगों को चेतावनी दे पाता, ताकि वे इस प्रताड़ित की सहायता के लिये उठ खड़े होते, जिसे इन अन्यायी जनों ने इतनी घोर यातनायें दी हैं ।

16. मानव–मन इतना अंधा हो गया है कि न तो नगर का ध्वस्त होना, न ही पहाड़ों का धूल में मिल जाना और न ही पृथ्वी का फटना उसे सचेत कर रहा है। धार्मिक ग्रंथों में दिये गये प्रमाण स्पष्ट हैं और उनमें लिखे गये चिन्ह उजागर कर दिये गये हैं और भविष्यवाणियाँ बराबर स्पष्ट सुनाई पड़ रही हैं और फिर भी, उनको छोड़कर जिन्हें ईश्वर ने पथनिर्देश के लिये चुना, सभी अज्ञानता की मदहोशी में किंकर्त्तव्यविमूढ़ बने बैठे हैं।

देखो, कैसे प्रतिदिन दुनिया नई यातनाओं से पीड़ित हो रही है। उनके दुःख लगातार गहराते जा रहे हैं। सूरा–ए–रईस (रईस की पाती) के प्रकटीकरण से अब तक न तो विश्व में शांति स्थापित हो पाई है और न ही मानव–मन को चैन मिला

है। एक समय यह विश्व संघर्षों और मतभेदों से जूझा रहा है तो दूसरे पल युद्ध की दलदल में जा डूबा है या बीमारियों का शिकार हुआ है। उसकी बीमारी महाविनाश के कगार पर जा पहुंची है और यहाँ तक कि सच्चे वैद्य को भी उपचार देने से रोका गया है और जो नीमहकीम हैं उन्हें सम्मान मिल रहा है तथा उन्हें पूरी स्वतंत्रता दी जा रही है कि वे अपनी मनमानी कर सकें।... अधर्म की धूल ने मानव–मन पर गहरी परत जमा रखी है और उनकी आँखों पर परदा डाल दिया है। काश, वे देख पाते कि उनके ही हाथों ने ईश्वर के युग में कैसे खिलवाड़ किये हैं। इस प्रकार तुम्हें चेतावनी देता है वह, जो सभी बातों का ज्ञान रखता है।

19. प्रत्येक बुद्धिमान और प्रकाशित व्यक्ति को यह अच्छी तरह मालूम है कि ईश्वर, जो जाना नहीं जा सकता, जो दिव्य स्वरूप है, उसको मानवीय गुणों के माध्यम से नहीं जाना जा सकता। वह अगम्य–अगोचर है, जीवन–मरण के बंधनों से मुक्त है। मानव उसका समुचित गुणगान कर सके या उसके रहस्य को जान सके, यह सम्भव नहीं। वह अपने सार की शाश्वतता के पर्दे के पीछे बराबर रहा है और अपनी वास्तविकता में अनन्त काल तक मनुष्य की दृष्टि से ओझल रहेगा। "उसे अपने में कोई भी दृष्टि समा नहीं सकती लेकिन सभी उसकी दृष्टि की परिधि में हैं। वह सर्वत्र व्याप्त और सर्वद्रष्टा है।"

प्रभु के नामों के विशेषण ऐसे नहीं जो किसी एक संदेशवाहक को मिले हों और दूसरे संदेशवाहकों को उनसे

अलग रखा गया हो। सच यह है कि प्रभु के सभी संदेशवाहक उसके पावन और चुने हुये दूत, बिना किसी अपवाद के, उनके नाम के विशेषणों को प्राप्त करने और गुणों के प्रतिरूप के अधिकारी हैं। अगर प्रभु के विभिन्न संदेशवाहकों में कोई अन्तर है तो वह उनके प्रकटीकरण के रहस्यों की गहनता के अंतर और उनमें व्याप्त तुलनात्मक प्रकाश की क्षमता के कारण है। प्रभु ने स्वयं कहा है, "हमने अपने कुछ दूतों को अन्य दूतों से श्रेष्ठ बनाया है।"

20. तुम यह भलीभाँति जान लो कि अदृश्य प्रभु किसी भी हाल में अपने सार को मूर्त रूप नहीं देता है और न ही मनुष्यों के समक्ष प्रकट करता है। वह उन सभी से परे है जिसे देखा या सुना जा सकता है और सदैव परे रहेगा। उसके अनन्त लोक से बराबर यही गुहार सुनाई पड़ती है : "सत्यतः, मैं ही ईश्वर हूँ, मेरे अतिरिक्त अन्य कोई सर्वज्ञाता, सर्वबुद्धिमान ईश्वर नहीं। मैंने स्वयं को मनुष्यों के सम्मुख प्रकट किया है और पृथ्वी पर उसे भेजा है जो मेरे प्रकटीकरण के चिन्हों का दिवावसंत है। उसके माध्यम से हमने समस्त सृष्टि के सम्मुख यह प्रमाणित किया है कि उस अतुलनीय, सर्वसूचित, सर्वबुद्धिमान के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है।" वह जो अनन्त काल से मनुष्य की आँखों से ओझल था, अपने अवतारों के अतिरिक्त किसी अन्य माध्यम से नहीं जाना जा सकता और उसका अवतार अपने स्वयं के व्यक्तित्व के अतिरिक्त अन्य कोई प्रमाण नहीं दे सकता।

21. पुरातन अस्तित्व के ज्ञान के द्वार मनुष्य के लिये सदा से बंद रहे हैं और सदा बंद रहेंगे। उसके पवित्र दरबार में कोई भी मनुष्य प्रवेश प्राप्त नहीं कर सकेगा। फिर भी अपनी कृपा, प्रेम तथा दया के प्रतीक रूप में प्रभु ने मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए दिवानक्षत्रों को अवतरित किया है और वे प्रभु की एकता के प्रतीक के रूप में पृथ्वी पर भेजे गये हैं और उन्हें अपने ही समान ज्ञान से आभूषित किया है। जो इन अवतारों को स्वीकारता है वह प्रभु को स्वीकारता है, जो उनके निर्देशों का अनुपालन करता है, वह ईश्वर की वाणी को समझता है और जो इनके अवतरण को प्रमाणित करता है, वह परम प्रभु के अटल सत्य को प्रमाणित करता है। जो इनसे विमुख हो जाता है, वह प्रभु से विमुख हो जाता है। जो इन अवतारों में विश्वास नहीं करता, वह ईश्वर में भी विश्वास नहीं करता। इन अवतारों में प्रत्येक अवतार प्रभु के साम्राज्य से इस भूतल के निवासियों का सम्पर्क स्थापित कराने में सक्षम हैं और जो प्रभु के सत्य के चिन्ह हैं वो उन सभी साम्राज्यों के लिये हैं जो इस धरा और स्वर्ग में हैं। ये अवतार मनुष्यों के बीच उसके अस्तित्व के प्रतीक, उसके होने के प्रमाण तथा उसकी ज्योति के मूर्त रूप हैं।

22. ईश्वर में आस्था के ये संवाहक धरती के लोगों के बीच एक नये धर्म के प्रवर्तक और एक नये संदेश के प्रकटकर्ता के रूप में आते हैं। यहाँ तक कि पावन सिंहासन के ये परम महान पक्षी ईश्वर की इच्छा के स्वर्ग से धरती पर भेजे जाते हैं और वे सभी प्रभु के अत्यन्त सम्मोहक धर्म की

घोषणा करते हैं। अतः, वे एक आत्मा और एक व्यक्तित्व धारण किये होते हैं, क्योंकि वे सभी प्रभु के प्रेमपात्र से पान करते हैं और एकता के एक ही वृक्ष के फल का रसास्वादन करते हैं।

प्रभु के इन अवतारों का दोहरा स्थान है। एक स्थान पावन सार और आवश्यक एकता का है। इस दृष्टि से, अगर तू उन सब को एक ही नाम से पुकारता है और एक ही समान गुणों से विभूषित मानता है तो तू सत्य से विमुख नहीं है। स्वयं प्रभु ने कहा है, "उसके किसी भी अवतार के बीच हम कोई भी अंतर नहीं मानते।" क्योंकि वे सभी, चाहे वह कोई भी अवतार क्यों न हों, धरती के लोगों को ईश्वर की एकता को स्वीकारने का आह्वान करते हैं तथा बैकुण्ठ–सरिता की अनंत जलधार की कृपा तथा दया प्रदान करते हैं । वे सभी अवतारत्व के आभूषण से सुसज्जित होते हैं और महिमा का वस्त्र धारण किये होते हैं। इस प्रकार के कथन, जो परम महान की एकता के व्याख्याकारों को आवश्यक एकता का संकेत देते हैं, ईश्वर की अनश्वर वाणी से ही प्रस्फुटित होते हैं और दिव्य ज्ञान के रत्नों के कोषालय हैं तथा धर्मग्रंथों में अंकित किये गये हैं। ये अवतार दिव्य आदेशों के प्राप्तकर्ता हैं और ईश्वर के प्रकटीकरण के दिवावंसत हैं। यह प्रकटीकरण बाहुल्यता और अपेक्षा की सीमा से परे हैं। इस प्रकार प्रभु ने कहा है : हमारा धर्म एक है और जब धर्म एक है तो प्रवर्तकों को भी अवश्य ही एक ही होना चाहिये।

...अतः, तेरे समक्ष यह स्पष्ट है कि सभी अवतार प्रभुधर्म

के मंदिर हैं जो विभिन्न वस्त्रालंकारों में आये हैं। अगर तू अपने विवेक–चक्षु से देखे तो तुझे वे सभी एक ही मंडपवितान तले एक ही स्वर्ग में विचरण करते एक ही आसन पर बैठे हुये, एक–सी वाणी बोलते हुये तथा एक ही प्रभुधर्म का उद्घोष करते हुये दिखाई देंगे। प्रभु के अनंत वैभव के संवाहक तथा उसके अनंत सार–रत्न इन अवतारों की एकरूपता ऐसी ही है। इसलिये पावनता के इन अवतारों में से एक अगर यह कह उद्घोष करते हैं : "मैं सभी अवतारों की वापसी हूँ," तो उनका यह कथन सत्य है। इसी प्रकार प्रत्येक आने वाले अवतार में पहले के अवतारों की वापसी सुनिश्चित है, जिसका सत्य दृढ़ रूप से स्थापित है।...

दूसरा स्थान विभिन्नता का है और वह सृष्टि के संसार से सम्बद्ध है और इसकी सीमाओं से जुड़ा है। इस दृष्टि से ईश्वर के प्रत्येक अवतार का एक अलग व्यक्तित्व, एक सुनिश्चित रूप से दिया गया उद्देश्य, एक पूर्वनिर्धारित प्रकटीकरण और विशिष्ट निर्धारित सीमायें होती हैं। उनमें से प्रत्येक एक अलग नाम से जाने जाते हैं, विशिष्ट गुणों द्वारा पहचाने जाते हैं, एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति करते हैं और एक खास प्रकटीकरण के दायित्वों से युक्त होते हैं। यहाँ तक कि वह कहते हैं, "कुछ अवतारों को हमने अन्य से श्रेष्ठ बनाया है। कुछ से ईश्वर ने बातें की हैं, कुछ को उन्होंने उच्च स्थान प्रदान किया है और मेरी के पुत्र ईसा को हमने स्पष्ट चिन्ह दिये और उन्हें दिव्य चेतना की शक्ति दी।" पद तथा उद्देश्य के इसी अंतर के कारण उनके शब्द और उपदेश विभिन्न

प्रतीत होते हैं, अन्यथा उनके सभी उपदेश एक ही सत्य को प्रदर्शित करते हैं। अधिकांश मनुष्य उनके स्थानों के रहस्य को नहीं समझ पाते।

यह बराबर स्पष्ट रहा है कि कथनों की विभिन्नतायें स्थान के अंतर के कारण रही हैं। अतः, उनकी एकता और उत्कृष्ट अनासक्ति की दृष्टि से ईश्वरत्व, देवत्व, सर्वोच्च एकत्व और अन्तर्सार उस महान अस्तित्व के सार के ही गुण हैं, यहाँ तक कि वे सभी दिव्य प्रकटीकरण के सिंहासन पर विराजमान होते हैं और दिव्य गोपनीयता के आसन पर स्थापित होते हैं। उनके आने से ईश्वर का प्रकटीकरण स्पष्ट होता है। वह कुछ इस प्रकार होता है जैसे स्वयं ईश्वर की वाणी इस दिव्य अस्तित्व के प्रकटीकरणों के मुख से उच्चारित हो रही हो।

अगर ईश्वर के कोई भी सर्वसम्पूर्ण अवतार यह घोषणा करते हैं : "मैं ईश्वर हूँ", तो वास्तव में वह सत्य वचन बोलते हैं, क्योंकि यह बार–बार प्रमाणित हो चुका है कि उनके प्रकटीकरण, उनके गुणों और नामों के माध्यम से दुनिया में ईश्वर का प्रकटीकरण, उसके नामों और गुणों की पहचान बनी है। "इस दृष्टि से वे सब उस आदर्श सम्राट के दूत हैं, जो अपरिवर्तनीय सार है। और अगर वे यह कहते हैं, "मैं सभी अवतारों की मुहर हूँ" तो वह भी सत्य वचन बोलते हैं, जिस पर थोड़ी भी शंका नहीं की जा सकती। क्योंकि वे सब एक ही व्यक्ति हैं, एक ही आत्मा, एक चेतना, एक प्रकटीकरण के संवाहक हैं। वे "आरम्भ" और "अंत" के मूर्त रूप हैं, "प्रथम"

और "अंतिम" हैं, "दृश्य" और "अदृश्य" हैं–उन सब के प्रतिरूप हैं जो अन्तश्चेतना, समस्त सार के शाश्वत सार हैं और अगर वे यह कहते हैं, "हम ईश्वर के सेवक हैं", तो यह भी अपरिहार्य और स्पष्ट सत्य है। क्योंकि वे सम्पूर्ण सेवाभाव की स्थिति में प्रकट किये गये हैं, ऐसा सेवाभाव जिसे सम्भवतः मानव नहीं पा सकता। अतः, ऐसे क्षणों में जब अस्तित्व के ये सार प्राचीन और अनन्त पावनता के सार की अतल गहराइयों में गहरे डूबे थे अथवा जब वे दिव्य रहस्यों के उच्चतम शिखर पर उड़ान भर रहे थे तब उन्होंने अपने वचनों के दिव्य वचन, स्वयं ईश्वर का आह्वान होने का दावा किया।

अतः, जो भी उनके कथन हैं, चाहे देवत्व, स्वामित्व, अवतारीय, संदेशवाहक, संरक्षकत्व अथवा देवदूत के साम्राज्य से सम्बन्धित ही क्यों न हों, सभी निःशंक सत्य हैं।

23. पूर्वजों का विचार करो। देखो, किस प्रकार हर बार दिव्यकृपा के सूर्य ने संसार में अपने प्रकटीकरण का प्रकाश फैलाया है और उस युग के लोग उसके विरुद्ध उठ खड़े हुये और उसके सत्य को नकार दिया। वे जो मनुष्यों को नेतृत्व प्रदान करने वाले समझे जाते थे, अपने अनुयायियों को भ्रमित करने की कोशिश में लगे रहे और ईश्वर की असीम कृपा के महासागर की ओर उन्मुख होने से अपने को रोकते रहे।

...तू यह जानता है कि प्रभु के अवतार, उसके संदेशवाहक और चुने हुये प्रतिनिधियों ने कितनी घोर यातनायें सही हैं। एक क्षण के लिये तू इन यातनाओं के कारणों तथा उद्देश्यों पर विचार कर। किसी भी काल में, किसी भी युग में प्रभु के

अवतारों को अपने शत्रुओं के अपमान, शोषकों की क्रूरता, अपने युग के विद्वानों की भर्त्सना से छुटकारा नहीं मिला। रात–दिन वे ऐसे दुःख उठाते रहे, जिसे परम ज्योतिर्मय प्रभु के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं समझ सका।

इस प्रताड़ित का विचार करो। यद्यपि उसके धर्म के स्पष्ट प्रमाण उसकी सत्यता की गवाही देते हैं, यद्यपि असंदिग्ध भाषा में उसके द्वारा की गई भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध हुई हैं, विद्वानों में नहीं गिने जाने के बावजूद, किसी भी विद्यालय में पढ़ाई नहीं करने के बावजूद और बावजूद इसके कि धर्माधिकारियों के बीच व्याप्त मतान्तरों का उसे कोई अनुभव नहीं है, उसने मानवजाति पर दिव्य–प्रेरणा से प्राप्त ज्ञान बरसाया है, फिर भी, किस प्रकार इस पीढ़ी ने उसकी सत्ता को नकार दिया है और उसका विरोध किया है ! अपने जीवन के अधिकांश दिन उसने अपने शत्रुओं के चंगुल में बिताये हैं। इस यातनादायी कारा में उसकी पीड़ा अपनी पराकाष्ठा पार कर चुकी है जिसमें अत्याचारियों ने उसे अन्यायपूर्ण ढंग से धकेल दिया है।

24. सावधान ! प्रभु की एकता में विश्वास करने वाले लोगों ! कहीं तुम उसके अवतारों में कोई अन्तर न समझ बैठो। कहीं तुम उन संकेतों में, जिन्होंने उनका प्रकटीकरण किया है, कोई अन्तर न स्थापित कर बैठो। यही, वस्तुतः दिव्य एकता का सच्चा अर्थ है, अगर तुम उनमें से हो जो इस सत्य को समझते हैं और इसमें विश्वास करते हैं। तुम आश्वस्त रहो, प्रभु के प्रत्येक अवतार के वर्तमान और

भविष्यकाल के कार्य और उपदेश, प्रभु की आज्ञा है और उसकी इच्छा तथा उद्देश्य के प्रतिबिम्ब हैं। जो कोई भी उनके व्यक्तित्व, उनके शब्दों, उनके संकेतों और उनके कार्यों में थोड़ा भी अन्तर स्थापित करता है, वह सत्यतः, ईश्वर में अविश्वास करता है, उसके संकेतों के प्रति अनास्था रखता है और उसके संदेशवाहकों द्वारा लाये गये धर्म के साथ विश्वासघात करता है।

25. यह स्पष्ट है कि प्रत्येक वह काल, जिसमें ईश्वर के अवतार ने जीवन यापन किया है, दिव्य रूप से आदेशित काल होता है और एक अर्थ में ईश्वर द्वारा निर्धारित युग की संज्ञा प्राप्त करता है। किन्तु , यह युग अनूठा है और इसके पहले आने वाले युगों से विशिष्ट तथा अलग है। "अवतारों की मुहर" की उपाधि इस युग के महानतर स्थान को पूरी तरह से स्पष्ट कर देती है। यह सत्य है कि भविष्यवाणियों का युगचक्र समाप्त हो चुका है। शाश्वत सत्य अब सामने आया है। ईश्वर ने अपनी शक्ति की पताका लहरा दी है और अब वह अपने प्रकटीकरण की स्पष्ट महिमा को दुनिया पर बरसा रहा है।

26. प्रत्येक युग और काल–चक्र में अपने अद्‌भुत सार के अवतारों द्वारा विकसित किये गये देदीप्यमान प्रकाश के द्वारा उसने सभी वस्तुओं को फिर से सृजित किया ताकि धरती और स्वर्गो में जो भी उसकी महिमा को प्रतिबिंबित करता है वह उसकी कृपा की वर्षा से वंचित न रहे और अनुग्रह की फुहारों की आशा न त्यागे। उसकी अप्रतिबंधित

कृपा के चमत्कार सर्वव्यापी हैं। देखो, कैसे वे सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त हो गये हैं। ऐसे हैं उसके गुण कि पूरे ब्रह्माण्ड में एक भी अणु ऐसा नहीं मिलेगा जो उसकी शक्ति के प्रमाणों की घोषणा न करता हो, जो उसके पावन नाम का यशोगान न करता हो या उसकी एकता के तेजोमय प्रकाश को प्रकट न करता हो। इतनी परिपूर्ण और व्यापक उसकी सृष्टि है कि न कोई मस्तिष्क और न ही कोई हृदय, चाहे वह कितना ही तीक्ष्ण और पवित्र क्यों न हो, कभी भी उसकी सृष्टि के सर्वाधिक अकिंचन प्राणी के स्वभाव को भी समझ नहीं सकता; फिर उसके रहस्य की गहराई की थाह वह कैसे कर पायेगा जो सत्य का सूर्य है, जो अजेय और अज्ञात सार है।

27. संसार और इसमें रहने वाले प्राणियों की रचना करके, उसने, अपनी अबाधित और सम्प्रभु इच्छा के सीधे प्रचालन से मनुष्य को उसे जानने और प्रेम करने की अद्वितीय विशिष्टता प्रदान की है – एक ऐसी क्षमता जिसे अवश्यमेव, सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की प्रेरणा और प्रमुख उद्देश्य माना जाना चाहिए.अपनी प्रत्येक रचना की अंतरतम सच्चाई पर उसने अपने नामों में से एक नाम का प्रकाश डाला है और अपने गुणों में से एक गुण की महिमा का प्राप्तकर्ता बनाया है। परन्तु, मनुष्य की सच्चाई पर उसने अपने सभी नामों और गुणों की ज्योति केन्द्रित की है और उसे अपना दर्पण बनाया है। उसने सभी रचित वस्तुओं में से मनुष्य को अकेले ही इस महान कृपा, इस चिरन्तन आशीष के लिए चुना है।

यह शक्तियाँ जिनके द्वारा दिव्यकृपा के सूर्य और स्वर्गिक मार्गदर्शन के स्त्रोत ने मनुष्य को वास्तविकता प्रदान की है, ठीक उसी प्रकार उसके अन्दर निहित हैं जिस प्रकार मोमबत्ती में ज्योति छिपी होती है और जैसे प्रकाश की किरणें दीपक में स्थित होती हैं। इन शक्तियों की ज्योति सांसारिक इच्छाओं से ढँक सकती है, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश दर्पण पर पड़ी धूल से छिप सकता है। बिना सहायता के न ही मोमबत्ती, न ही दीपक को जलाया जा सकता है, न ही दर्पण के लिए यह कभी सम्भव है कि वह स्वयं को धूल से मुक्त कर सके। यह साफ है कि जब तक मोमबत्ती को जलाया न जाये, तब तक वह जल नहीं सकती और जब तक दर्पण के ऊपर से धूल को हटाया न जाये तब तक वह न तो सूर्य को प्रतिबिम्बित कर पायेगा न ही उसके प्रकाश और उसकी महिमा को अपने में समा पायेगा।

और चूँकि एक सत्य ईश्वर और उसकी सृष्टि के बीच किसी सीधे सम्बन्ध की कड़ी नहीं हो सकती और नश्वर तथा शाश्वत के बीच कोई तुलना नहीं की जा सकती, परमात्मा और उस पर अवलम्बित रहने वाले के बीच कोई साम्य स्थापित नहीं किया जा सकता, इसलिये ईश्वर ने यह आदेश दिया है कि प्रत्येक युग में और हर ईश–काल में एक पावन और निर्मल दिव्यात्मा को पृथ्वी और स्वर्ग के साम्राज्यों में प्रकट किया जाये। इस प्रखर, रहस्यमय और स्वर्गिक पुरुष को ईश्वर ने दोहरी प्रकृति प्रदान की–भौतिक, जो इस संसार से सम्बन्धित है और आध्यात्मिक, जो ईश्वर के अपने सार से

उत्पन्न है। इसके अतिरिक्त ईश्वर ने उसे दोहरा स्थान भी दिया। पहला स्थान उसकी आन्तरिक वास्तविकता से सम्बन्धित है, जो स्वयं ईश्वर की वाणी बोलता है। इसका प्रमाण परम्परा देती है : *"ईश्वर के साथ मेरा विविध और रहस्यमय सम्बन्ध है। मैं वह हूँ स्वयं मैं वह हूँ और वह मैं हूँ स्वयं वह मैं हूँ सिवाय इसके कि जो मैं हूँ वह मैं हूँ और जो वह है वह, वह है।"*

दूसरा स्थान मानव का है, जिसका उदाहरण इन पदों से दिया गया है : "मैं तुम्हारी तरह ही एक मनुष्य हूँ।" "कहो, मेरे स्वामी का गुणगान हो ! क्या मैं एक मनुष्य से अधिक, कोई देवदूत हूँ ?" अनासक्ति के ये सार, ये दीप्त वास्तविकतायें ईश्वर की सर्वव्याप्त अनुकम्पा के मार्ग हैं। अचूक मार्गदर्शन के प्रकाश से पथ पाते, सर्वोच्च संप्रभुता को धारण किये, वे प्रभु के पावन शब्दों से प्रेरित करने के लिये नियुक्त किये गये हैं, ईश्वर की निर्मल अनुकम्पा के प्रसार और उसके प्रकटीकरण के शुद्धिकारक समीर को फैलाने के लिये हैं, ताकि भौतिक चिन्ताओं और सीमाओं की धूल वे अपने हृदय–पटल से साफ कर सकें जो प्रभु से मिलन की इच्छा रखते हैं और जिनकी आत्मा ग्रहणशील है। तब और केवल तब ही मानव की वास्तविकता में अन्तर्निहित ईश्वर का विश्वास अपनी गोपनीयता के आवरण से प्रभामंडल की भांति उभरेगा और अपनी प्रकटित महिमा के संकेत मानव–हृदयों पर अंकित करेगा।

पूर्वोल्लिखित परिच्छेदों और प्रतीकों से यह पूरी तरह स्पष्ट कर दिया गया है कि पृथ्वी और स्वर्ग के साम्राज्यों में एक अवतार के आगमन की आवश्यकता होती है, एक सार

की आवश्यकता होती है, जो सब के सम्प्रभु स्वामी, स्वयं देवत्व की अनुकम्पा प्रदान करने के लिये अवतरित होता है और उसके संदेशों का संवाहक होता है। इस सत्य के सूर्य की शिक्षाओं के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति तब तक विकास करता जायेगा, जब तक वह अपनी अन्तर्निहित क्षमताओं और शक्तियों का उस हद तक प्रदर्शन नहीं कर लेता जो उसे दी गई हैं। इसी उद्देश्य से प्रत्येक युग में ईश्वर के अवतार मनुष्यों के बीच आये हैं और उन्होंने ऐसी शक्ति का प्रदर्शन किया है जो ईश्वर की ओर से उन्हें दी जाती है और इस शक्ति की वास्तविकता का ज्ञान केवल शाश्वत शक्ति ही प्रकट कर सकती है।

क्या कोई सही मस्तिष्क वाला व्यक्ति कभी यह कल्पना भी कर सकता है कि शब्दों का अर्थ अगर वह नहीं समझ पाता है तो इसका मतलब यह होता है कि मनुष्यों के लिये ईश्वर के असीम मार्गदर्शन के द्वार बंद हो गये हैं? क्या वह इन दिव्य प्रकाशपुंजों, इस प्रभासित महाप्रकाश के आरम्भ अथवा अंत के बारे में कभी सोच भी सकता है? उसकी सर्वाच्छादित अनुकम्पा की तुलना भला किस जलप्रवाह से की जा सकती है और उसकी सर्वव्यापी दया की तुलना में भला कौन–सा आशीष बड़ा हो सकता है? इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रभु की दया और अनुकम्पा से एक पल के लिये भी विश्व को वंचित कर दिया जाये तो यह विश्व पूरी तरह से नष्ट हो जायेगा। यही कारण है कि अनादिकाल से दिव्य अनुकम्पा के द्वार सभी सृजित वस्तुओं के लिये खोल दिये गये हैं और

अनन्त काल तक सत्य के बादल मानव की क्षमता, वास्तविकता और उसकी चारित्रिक सुन्दरता की धरती पर आशीषों की वर्षा करते रहेंगे। अनादि से अनन्त काल तक ईश्वर की यही व्यवस्था रही है।

29. मनुष्य को उत्पन्न करने के पीछे प्रभु का उद्देश्य उसे इस योग्य बनाने का है और सदा रहेगा कि वह अपने स्रष्टा को जान सके और उसका सान्निध्य प्राप्त कर सके। इस सर्वोत्तम तथा परम श्रेष्ठ उद्देश्य की पुष्टि सभी धार्मिक ग्रंथों में की गई है। जिस किसी ने भी दिव्य मार्गदर्शन के दिवास्त्रोत प्रभु को पहचाना है और उसके पावन दरबार में पदार्पण किया है, वह प्रभु के निकट आया है, उसने प्रभु के अस्तित्व को पहचाना है। वह अस्तित्व जो सच्चा स्वर्ग है और स्वर्ग के उच्चतम प्रासाद उसके प्रतीक मात्र हैं। ऐसा व्यक्ति उस स्थान को प्राप्त करता है जो बस, केवल दो पग दूर है और जो "सद्रतुल–मुन्तहा' के उस पार खड़ा है। जो कोई भी उसे पहचानने में असफल रहा है, वह प्रभु से दूर होने का दुःख उठायेगा। ऐसी दूरी असत्यलोक और शून्य में विचरण करने के बराबर है। बाहरी तौर पर वह व्यक्ति चाहे सांसारिक सुखों के सिंहासन पर ही क्यों न विराजमान हो, किन्तु दिव्य सिंहासन के दर्शन से वह सदैव वंचित रहेगा।

31. अपने अन्तःचक्षुओं से उस प्रगतिशील प्रकटीकरण की श्रृंखला को देखो, जिसने आदम को बाब से जोड़ा है। मैं ईश्वर के समक्ष सत्यनिष्ठा से यह उद्घोषणा करता हूँ कि इनमें से प्रत्येक अवतार दिव्य इच्छा और उद्देश्य से पृथ्वी पर

भेजे गये हैं, प्रत्येक को दिव्य रूप से प्रकटित एक महाग्रंथ सौंपा गया है और प्रत्येक को एक शक्तिशाली पाती के रहस्यों को उजागर करने के लिये अधिकारयुक्त किया गया है। प्रकटीकरण के जिस भाग से जिसकी पहचान स्थापित की गई है, वह निश्चित रूप से पूर्वनिर्धारित है। अगर तुम उनमें से हो जो इस सत्य को समझ सकते हैं तो समझो कि उनके लिये हमारी अनुकम्पा का यह चिन्ह मात्र है।

...और जब प्रगतिशील प्रकटीकरण की प्रक्रिया अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई जहाँ मानव के नेत्रों को उनके अनुपम, अत्यन्त पावन, सर्वोत्कृष्ट मुखमंडल के दर्शन करने थे तब उन्होंने अपने को सहस्त्रों पर्दों के पीछे छिपा लिया ताकि अपवित्र और नाशवान नेत्र उसकी आभा खोज न पायें।

32. ईश्वर की गुप्त और रहस्यमयी अनुकम्पाओं की प्रकृति को समझने का दावा कोई भी मनुष्य कभी भी नहीं कर सकता, उसकी सर्वव्यापी दया का अंदाजा कोई भी नहीं लगा सकता। मनुष्य के दोष और पाप ऐसे रहे हैं, ईश्वर के अवतारों और उसके चुने हुये लोगों पर ऐसे जुल्म ढाये गये हैं कि समस्त मानवजाति अपने विनाश का ग्रास बनने के लायक बन बैठी है। फिर भी, ईश्वर की गुप्त और प्रेमपूर्ण कृपा ने अपने दृश्य और अदृश्य साधनों से मानव की रक्षा की है और इसकी दुष्टता के लिये दी जाने वाली सज़ा से बराबर रक्षा की है और करती रहेगी। अपने हृदय में इस पर विचार करो, ताकि तुम्हें सत्य के दर्शन हो सकें और तुम उसकी राह में अडिग बन सको।

33. यदि दिव्य शब्द की अन्तर्निहित समग्र शक्ति को अचानक छोड़ दिया जाये तो इस शक्तिशाली प्रकटीकरण के भार को कोई भी मनुष्य वहन नहीं कर पायेगा।

34. सभी सृजित वस्तुओं में उसने मनुष्य की पवित्र और रत्न जैसी वास्तविकता को अपनी विशेष अनुकम्पा के लिये चुना है और ईश्वर को जानने तथा उसकी महिमा की भव्यता को प्रतिबिम्बित करने की अद्‌भुत क्षमता प्रदान की। उसकी इस दोहरी विशिष्टता ने उसके हृदय से हर एक निरर्थक इच्छा का मैल धो डाला और उसे इस वस्त्र को धारण करने के योग्य बनाया जो ईश्वर ने उसे प्रदान किया है। इसने उसकी आत्मा को अज्ञानता के अंधकार से बचा लिया।

जिस वस्त्र से मनुष्य का शरीर और उसकी आत्मा अलंकृत की गई है वही उसके कल्याण और विकास का आधार। वह दिन कितना सौभाग्यशाली होगा जब प्रभु की शक्ति और कृपा से मनुष्य मोह और सांसारिक मलिनता से अपने को मुक्त कर लेगा और ज्ञान के वृक्ष की छाया तले बैठकर सच्ची शांति पायेगा।

यह तुम निश्चयपूर्वक जान लो कि प्रभु के सभी अवतारों का सार एक ही है। उनकी एकता निर्विवाद है। सृष्टिकर्ता प्रभु ने कहा है, "मेरे संदेश के संवाहकों में कोई अन्तर नहीं है। उन सब का एक ही उद्देश्य है, उनका रहस्य एक ही रहस्य है।" अतः, एक अवतार को दूसरे अवतार से अधिक महत्व देने अथवा एक को दूसरे से अधिक श्रेष्ठ समझने की

अनुमति नहीं है। प्रत्येक अवतार ने अपने संदेश को मूलतः अपने पूर्व के अवतार के संदेश की तरह ही माना है। यदि कोई मनुष्य इस सत्य को नहीं समझ पाता और निरर्थक बातें करता है तो कोई भी ज्ञानी भक्त उसकी अधम वाणी से प्रभावित नहीं होगा, न ही वह अपने विश्वास से विचलित होगा।

फिर भी, ईश्वर के अवतारों के प्रकटीकरण के पैमाने में कुछ अन्तर होना ही चाहिए। उनमें से प्रत्येक एक अलग संदेश को लेकर आते रहे हैं और स्वयं को विशिष्ट कार्यों द्वारा प्रकट करने के लिये बुलाये जाते रहे हैं। इसी कारण से वे अपनी महानता में एक दूसरे से भिन्न दिखते हैं। उनके प्रकटीकरण की तुलना चन्द्रमा की रोशनी से की जा सकती है जो पृथ्वी पर प्रकाश बिखेरता है। चन्द्रमा हर रात अलग आभा के साथ उदित होता है, किन्तु चांद में अन्तर्निहित प्रकाश बराबर एक समान विद्यमान रहता है, कभी समाप्त नहीं होता।

अतः, यह स्पष्ट और प्रमाणित है कि बाहर से दिखने वाले प्रकाश की गहनता का अन्तर स्वयं प्रकाश में अन्तर्निहित नहीं है, अपितु यह अंतर बदलते हुये विश्व की ग्रहणशक्ति के कारण होता है। प्रत्येक अवतार सर्वशक्तिमान स्रष्टा का संदेश लेकर अवतरित होता है और उसे उस युग की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करने का आदेश होता है, जिस युग में वह प्रकट होता है। अपने अवतारों को पृथ्वी पर भेजने का ईश्वर

का उद्देश्य दोहरा होता है। पहला, अज्ञानता के अंधकार से मनुष्यों की संतान को मुक्त करना और सही समझ की रोशनी की ओर उनका मार्गदर्शन करना और दूसरा, मानवजाति के बीच शांति और सुव्यवस्था स्थापित करना तथा वे सभी साधन देना, जिनसे ये स्थापित हो सकें।

प्रभु के अवतार उन चिकित्सकों की भांति समझे जाने चाहिये, जिनका दायित्व विभाजित विश्व के रोग का इलाज करना तथा विश्व–एकता स्थापित करके मानवजाति का कल्याण करना है। उनके शब्दों तथा कार्यों की आलोचना करने का अधिकार किसी को भी नहीं दिया गया है, क्योंकि वे ही ऐसे हैं, जो रोगी को पूरी तरह समझने का तथा रोग की भलीभांति पहचान केरने का दावा कर सकते हैं। कोई भी व्यक्ति, चाहे कितना भी ज्ञानी क्यों न हो जाये, कभी भी दिव्य चिकित्सकों के ज्ञान और विवेक की चोटी तक नहीं पहुंच सकता। अतः, यदि वर्तमान औषधि भूतकाल की औषधि से भिन्न है तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। सभी युगों में एक–सी औषधि दी भी कैसे जा सकती है, क्योंकि एक युग के रोग तथा रोगियों को दूसरे युग के रोग तथा रोगियों से भिन्न दवा की आवश्यकता होती है। इस प्रकार प्रत्येक युग में दिव्य अवतार ने विश्व को प्रभु–प्रकाश से प्रकाशित किया है, बिना किसी भेदभाव के उन्होंने मानवजाति को प्रभु–प्रकाश का आलिंगन करने के वे साधन दिये हैं जो उनके युग के लिये सर्वोत्तम थे। उन्होंने अज्ञान के अंधकार को दूर किया और सम्पूर्ण विश्व को अपने ज्ञान का प्रकाश दिया। अतः,

प्रत्येक ज्ञानी मनुष्य की दृष्टि इन्हीं अवतारों के सार की ओर उन्मुख रहनी चाहिए, क्योंकि उनका एकमात्र उद्देश्य अशांत को शांति प्रदान करना तथा असद् मार्ग पर चलने वालों को सद्मार्ग पर लाना है। ये दिन सम्पन्नता और विजय के नहीं। सम्पूर्ण मानव जाति अनेक बुराइयों की गिरफ्त में है। अतः, रोगग्रस्त मानवता के जीवन को सर्वशक्तिमान चिकित्सक द्वारा दी गई औषधि से रोगमुक्त करने का सतत् प्रयत्न करो।

और अब धर्म की प्रकृति से सम्बंधित तुम्हारे प्रश्न के सम्बन्ध में। तू यह जान कि सच्चे ज्ञानियों ने विश्व की तुलना मानव–शरीर से की है। जिस प्रकार मानव–शरीर के आवरण के लिये वस्त्र की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मानवजाति को ज्ञान और न्याय के वस्त्र की आवश्यकता होती है। मानवजाति का वस्त्रालंकार ईश्वर द्वारा वायदा किया हुआ प्रकटीकरण ही है। जब कभी भी यह वस्त्रालंकार अपना अभीष्ट पूरा कर लेता है, तब सर्वशक्तिशाली प्रभु उसे नये वस्त्र देता है, क्योंकि प्रत्येक युग को प्रभु–प्रकाश के एक ताजा पैमाने की आवश्यकता होती है। प्रत्येक दिव्य प्रकटीकरण इस ढंग से होता है, जो उस युग विशेष की परिस्थितियों के अनुकूल हो जिसमें यह प्रकट किया गया है।

...और अब अतीत के धर्मों के नेताओं के कथनों के सम्बन्ध में। प्रत्येक विवेकशील और प्रशंसनीय व्यक्ति को निःसन्देह इस प्रकार की व्यर्थ और निरर्थक बातों से दूर रहना चाहिये। अतुलनीय रचयिता ने सभी मनुष्यों को एक ही तत्व से सृजित किया है और उन्हें अन्य प्राणियों से श्रेष्ठतर स्थान

प्रदान किया है। सफलता–असफलता, लाभ–हानि अवश्य ही मनुष्य के अपने प्रयासों पर निर्भर करती है। जितना अधिक वह प्रयास करता है उतना अधिक उसका विकास होता है।

35. थोड़ी देर के लिये विचार करो। वह क्या है जिसने हर ईश–काल में मनुष्य को सर्वदयालु ईश्वर से विमुख कर दिया ? किस बात ने उन्हें ईश्वर से विमुख होने के लिये बाध्य किया होगा और उसकी सत्ता को चुनौती देने के लिये विवश किया होगा ? अगर दिव्य आदेशकर्ता की महालेखनी से निकले इन शब्दों पर मनुष्य विचार करता तो वह चिरस्थायी, ईशप्रदत्त प्रकटीकरण के सत्य को स्वीकार करने के लिये लालायित होता और उसे प्रमाणित करता जिसे स्वयं ईश्वर ने पुष्ट किया है। यह निरर्थक कल्पनाओं का पर्दा ही है जिसने ईश्वर की एकता के अवतारों के काल में और उसकी अनन्त महिमा के दिवानक्षत्र के सम्मुख बाधा को खड़ा किया है और भविष्य में भी अवतारों और मनुष्य के बीच के पर्दे को खड़ा करता रहेगा, क्योंकि उन दिनों में शाश्वत सत्य ने स्वयं को अपने उद्देश्यों के अनुकूल प्रकट किया, न कि मनुष्य की इच्छा और उम्मीदों के अनुसार। उसने यहाँ तक प्रकट किया : "कितनी बार कोई अवतार तुम्हारे बीच उस उद्देश्य के साथ आता है जो तुमने नहीं चाहा है और तुम गर्व से उन्मुख हो जाते हो और कुछ को पाखण्डी बतलाते हो तो कुछ को सूली से लटकाते हो।"

इसमें तनिक भी संदेह नहीं हो सकता कि बीते हुये युगों में जिन मिथ्या कल्पनाओं के कारण लोगों ने गलत मनसूबे

बना रखे थे उनके अनुसार अवतार आते तो इन पावन आत्माओं के सत्य का खंडन किसी ने भी नहीं किया होता। हालाँकि दिन–रात ऐसे लोग उसी एक सत्य ईश्वर को याद कर रहे हैं और पूरी निष्ठा के साथ उसकी ही आराधना में लगे हैं, फिर भी अन्त में वे अवतारों के कभी न नकारे जा सकने वाले प्रमाणों के चिन्हों के दिवावसंत कालों की दया के पात्र से पान करने में असमर्थ हुये हैं। इसके साक्षी हैं धर्मग्रंथ। इसमें संदेह नहीं कि तुमने इसके बारे में सुना है।

ईसा मसीह के काल पर विचार करो। देखो, किस प्रकार उस काल के विद्वानों ने उन्हें नकार दिया, हालाँकि वे आतुरता से प्रतिज्ञाबद्ध के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उस समय के सर्वोत्कृष्ट विद्वान अन्नास तथा सर्वोच्च पादरी केफास ने उनकी भर्त्सना की और उन्हें मृत्युदंड दिया।

इसी प्रकार जब ईश्वर के अवतार मुहम्मद आये तब उनके प्रकटीकरण के प्रारम्भिक दिनों में मक्का और मदीना के विद्वान उनके विरुद्ध उठ खड़े हुये और उनके संदेश को अस्वीकार कर दिया। मुहम्मद के प्रति समस्त मानवजाति कुर्बान हो जाये। वहीं दूसरी ओर, जो अनपढ़–गंवार थे, उन्होंने उनके धर्म को अपनाया। इस प्रकार विचार करो कि किस प्रकार इथोपिया का निरक्षर बलाल विश्वास और आस्था के स्वर्ग तक पहुँच गया, जबकि विद्वानों के नेता अबदुल्ला–ए–ऊबाय ने ईर्ष्या की और उनका विरोध किया। देखो, किस प्रकार एक साधारण गड़ेरिया प्रभु के शब्दों से उन्मत हो परमप्रिय प्रभु के लोक तक पहुँच गया और उसके

सान्निध्य को पा सका जो समस्त मानवजाति का स्वामी है जबकि वे, जिन्हें अपने ज्ञान का गर्व था उनसे कोंसो दूर रहे और उस अनन्त प्रभु की कृपा से वंचित रह गये। यही कारण है कि ईश्वर ने लिखा है : "वह जो तुम्हारे बीच ऊँचा है, वह नीचे गिरेगा और वह जो नीचे गिरा है वह ऊपर उठेगा।" इसी प्रकार के प्रसंग अधिकांश धर्मग्रंथों और ईश्वर के संदेशवाहकों तथा अवतारों के वचनों में मिलते हैं।

36. हम प्रमाणित करते हैं कि जब वह ईशपुत्र इस दुनिया में आये तो उन्होंने अपनी महिमा का प्रकाश सभी सृजित वस्तुओं पर फैलाया। उनके सहारे अज्ञानता और दुराचारिता की कोढ़ से ग्रस्त लोग मुक्त हुये। उनके माध्यम से पथ भटके और अपवित्र लोग रोगमुक्त किये गये। सर्वशक्तिशाली ईश्वर से उपजी उनकी शक्ति के माध्यम से नेत्रहीनों ने आँखें खोलीं और पापियों की आत्मायें परिशुद्ध हुईं।

कोढ़ की व्याख्या उस पर्दे से की जा सकती है जो मनुष्य और उसके ईश्वर को पहचानने के बीच पड़ा होता है। जो कोई भी अपने को उस ईश्वर से विमुख करता है वह वास्तव में कुष्ठ रोग से पीड़ित है, जो शक्तिशाली, सर्वप्रशंसित ईश्वर के साम्राज्य में याद नहीं किया जायेगा। हम इसकी साक्षी देते हैं कि ईश्वर की शक्ति से सभी कुष्ठरोगी निर्मल बने, हर बीमारी ठीक हुई, मनुष्य की हर प्रकार की दुर्बलता समाप्त हुई। यह वही है जिसने संसार को निर्मल किया। वह व्यक्ति धन्य है जो प्रकाशित हृदय के साथ ईश्वर की ओर उन्मुख हुआ है।

37. वह मनुष्य धन्य है जो प्रभु और उसके चिन्हों में अपनी आस्था व्यक्त करता है और यह मानता है कि "ईश्वर से उसके कार्यों के लिये कभी पूछा नहीं जायेगा।" इस मान्यता को प्रभु ने प्रत्येक धर्म का आभूषण तथा आधार बनाया है। प्रत्येक सद्कार्य का मापदण्ड इसी पर निर्भर करता है। इसी पर अपना ध्यान केन्द्रित करो ताकि विरोधियों के शब्द तुम्हें भ्रमित न कर सकें।

प्रभु किसी अमान्य वस्तु को अगर मान्यता प्रदान कर दे और किसी मान्यताप्राप्त को अस्वीकार कर दे तो उसकी इस शक्ति को चुनौती देने का अधिकार किसी को नहीं। क्षण मात्र के लिये जो कोई भी हिचकिचाता है, वह अधर्मी है।

जो इस भव्य तथा मौलिक गुणों से युक्त सत्य को नहीं स्वीकारता और उसके उच्च स्थान तक पहुंचने में असफल रहा है, शंका के झंझावत उसे उत्तेजित करेंगे और अविश्वासी नास्तिकों के कथन उसकी आत्मा को पथभ्रष्ट कर देंगे। जिसने इस सिद्धान्त को मान लिया है, वह अचल भक्ति से आभूषित हुआ है।

38. तुम यह अच्छी तरह जान लो कि हर युग में दिव्य प्रकटीकरण का प्रकाश मनुष्य की आध्यात्मिक क्षमता के अनुरूप ही प्राप्त होता है। सूर्य के सम्बंध में विचार करो। जब यह क्षितिज पर उदित होता है तो इसकी किरणें कितनी कोमल होती हैं। और किस प्रकार इसकी गर्मी और रोशनी बढ़ती जाती है, जब यह मध्याकाश में पहुंचता है।... इस बीच

सभी सृजित वस्तुओं में सूर्य के प्रकाश की बढ़ती हुई प्रखरता को ग्रहण करने की क्षमता आ जाती है। सूर्यास्त भी धीरे–धीरे ही होता है। यदि यह अपनी पूरी गर्मी और प्रखरता के साथ एकाएक उदित हो जाये तो निश्चय ही सृष्टि की सभी वस्तुओं को हानि पहुंचेगी। इसी प्रकार सत्य का सूर्य भी अगर अपनी पूरी गर्मी और रोशनी के साथ एक–ब–एक प्रकट हो जाये तो सम्पूर्ण सृष्टि स्वाहा हो जायेगी, क्योंकि मनुष्य का हृदय न तो उसके प्रकटीकरण की गहनता को बर्दाश्त कर पायेगा और न ही उसके प्रकाश की ज्योति को प्रतिबिम्बित कर पायेगा। स्तब्ध और किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर वह नष्ट हो जायेगा।

43. इस काल में न्याय अपनी दुर्दशा पर विलाप कर रहा है और समानता अन्याय के पैरों तले दब कर सिसक रही है। अत्याचार के घने बादलों ने पृथ्वी और इसके निवासियों के चेहरों को ढक लिया है। हमारे तेज की महालेखनी ने उस सर्वव्यापी आदेशकर्ता के निर्देश पर मनुष्य के जीवन के प्रत्येक आयाम को नवजीवन प्रदान किया है और प्रत्येक शब्द में नई शक्ति भर दी है।

प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति इस युग में यह सहर्ष स्वीकार करेगा कि अन्याय पीड़ित इस लेखनी से निकले शब्द मानव–कल्याण तथा उसके विकास के लिये प्रेरक हैं। हे मनुष्यों ! उठो और प्रभु की शक्ति की मदद से अपने आप पर विजय प्राप्त करने का दृढ़ निश्चय करो ताकि सम्पूर्ण वसुधा उन मिथ्या देवों के माया–चक्र से मुक्त हो सके, जिसका

निर्माण घृणास्पद पुजारियों की कोरी कल्पना का परिणाम है। यही मूर्तियाँ मनुष्य की पूर्णता में बाधक बनी हैं। हम आशा करते हैं कि मानवजाति को दिव्यशक्ति की सहायता मिलेगी और अपनी दुर्दशापूर्ण स्थिति से वह उबर पायेगी।

हे प्रभु के लोगों ! तुम अपने ही में उलझे मत रहो। अपना ध्यान उस ओर लगाओ जो मानव के भाग्य–पथ को प्रशस्त करेगा और उसकी आत्मा तथा हृदयों को पवित्र बनायेगा। यह शुद्ध तथा पवित्र कर्म, सद्जीवन और सद्व्यवहार द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। शौर्यपूर्ण किये गये कार्य ही प्रभुधर्म को विजय दिलायेंगे और साधु–सरीखा चरित्र इसकी शक्ति को बढ़ायेगा। ओ बहा के लोगों ! न्यायनिष्ठ बनो। इस सताये हुए का यही आदेश है और तुम में से प्रत्येक के लिये परमप्रिय प्रभु की अनियंत्रित अभिलाषा भी यही है।

ओ मित्रों ! तुम्हें यह शोभा देता है कि आत्मा को जाग्रत करने वाले इस दिव्य वसंतकाल में बरसाई जा रही कृपाओं से तुम अपने हृदय को निर्मल कर उन्हें पुनर्जीवन प्रदान करो। उस ज्योति के सूर्य ने तुम पर अपना प्रकाश विकीर्ण किया है और प्रभु की असीम अनुकम्पाओं के बादल ने तुम्हें आच्छादित किया है। उसे प्राप्त होने वाला यह पुरस्कार कितना महान होगा, जिसने अपने को इस बड़ी कृपा से दूर नहीं रखा है और इस नई पोशाक में अपने प्रिय को पहचान लिया है। सतर्क रहो, बुराई घात लगाये बैठी है। उसकी कलुषित इच्छाओं के प्रति तुम सजग हो जाओ और सर्वद्रष्टा

प्रभु के प्रकाश के सहारे उस अंधेरे से बचो, जो तुम्हारे चतुर्दिक फैल रहा है। अपना दृष्टिकोण विश्वव्यापी बनाओ, इसे अपने तक ही सीमित मत रखो। शैतान वह है जो मनुष्य की संतानों की आध्यात्मिक प्रगति और विकास में बाधक बनता है।

इस युग में प्रत्येक मनुष्य के लिये यह आवश्यक है कि वह उन सबके प्रति आस्थावान बने जो सभी राष्ट्रों और न्यायनिष्ठ सरकारों के हित का मार्ग प्रशस्त करे तथा उसके स्थान को ऊपर उठाये। उन प्रत्येक पद के द्वारा, जो परमोच्च प्रभु की महालेखनी ने प्रकट किये हैं, मनुष्य के समक्ष प्रेम और एकता के द्वार खोल दिये गये हैं। एक अन्य स्थान पर हमने घोषणा की है और हमारा शब्द सत्य हैः "सभी धर्मों के अनुयायियों के साथ मित्रतापूर्ण और बंधुत्व के वातावरण में परामर्श करो। मनुष्य की संतानों के बीच अब तक जो भी विद्वेष, विभेद और आपसी फूट के कारण बने हैं, उन्हें इन शब्दों के प्रकटीकरण से मिटा दिया गया है। प्रभु की इच्छा के स्वर्ग से, मानव के हृदयों और आत्माओं के उत्थान के उद्देश्य से, वह भेजा गया है जो सम्पूर्ण मानवनस्ल की शिक्षा के लिये सर्वाधिक सशक्त साधन बन सके। सर्वव्यापी प्रभु की आज्ञा से ही इस सर्वाधिक शक्तिशाली प्रकटीकरण के द्वारा पूर्वजों के सम्पूर्ण ज्ञान का श्रेष्ठतम सार प्रस्तुत किया गया है। बहुत पहले यह कहा गया था, "देशभक्ति ईशभक्ति का ही एक रूप है।" किन्तु शौर्य की वाणी ने अपने प्रकटीकरण के दिन यह कहा "उसके लिये यह अभिमान की बात नहीं जो

अपने देश को प्यार करता है, अपितु गौरव की बात उसके लिये है जो सम्पूर्ण विश्व को प्यार करता है।" इन उच्च शब्दों से जो शक्ति निकली है उसके माध्यम से उस परमोच्च प्रभु ने प्रेरणा दी और मानव के हृदय–पखेरु को एक नई दिशा में उड़ान भरने की एक नई शक्ति दी और ईश्वर की पवित्र पुस्तक से 'बंधन' और 'सीमा' जैसे शब्द हटा दिये हैं।

ओ न्यायपुत्रों ! प्रकाश की तरह तेज और आध्यात्मिक अग्नि से प्रज्जवलित लौ की तरह तेजस्वी बनो। इसमें कोई संदेह नहीं कि तुम्हारे प्रेम की ज्वाला का तेज देशों और उसके निवासियों के मतभेदों को दूर कर इन्हें एकता के सूत्र में बांध देगा। शत्रुता और घृणा की ज्वाला की भयंकरता और कुछ नहीं, संघर्ष और विनाश को ही जन्म देगी। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह अपने शत्रुओं की कुचेष्टाओं से अपनी रचना को बचायें। वस्तुतः उसकी शक्ति सभी चीजों में है।

उस एकसत्य ईश्वर की स्तुति हो ! उसका तेज बढ़े। उसी ने परमोच्च प्रभु की महालेखनी से मनुष्य के हृदयों के द्वार खोले हैं। वह प्रत्येक पद जो इस महालेखनी ने प्रकट किया है, वह मनुष्य द्वारा साधुसरीखा और पवित्र जीवन जीने तथा पावन और निष्कलंक कर्म करने के लिये प्रेरित करता है। ये पावन पद सद्जीवन और सदाचार के चमकते हुये द्वार हैं । वे आह्वान और संदेश जो हमने दिये हैं, केवल एक देश अथवा एक जाति के लोगों के लाभ के लिये नहीं हैं। सम्पूर्ण मानवजाति को अवश्य ही इसका अनुपालन करना चाहिये जो इसमें प्रकटित किया गया है। तब और

केवल तब ही यह सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त कर सकती है। प्रभु के अवतार की ज्योति से सम्पूर्ण धरा प्रकाशित है...।

हे ईश्वर के लोगों ! अपने हृदय को अपने सच्चे, अपने अतुलनीय सखा के उपदेशों की ओर उन्मुख करो। ईश्वर की वाणी को उन नन्ही पौध के समान माना जा सकता है, जिनकी जडें मानव के हृदयों में बोई गई हैं। तुम्हारे लिये यह आवश्यक है कि विवेक के जल से, पावन शब्दों के सहारे इसे बढ़ने में सहायता कर ताकि इसकी जड़ें मजबूत हो जायें और स्वर्ग तथा उसके परे भी इसकी शाखायें फैल जायें।

हे तुम, जो धरती पर रहते हो। इस सर्वोच्च प्रकटीकरण की प्रमुख विशेषता इसमें है कि एक ओर तो हमने ईश्वर के पावन ग्रंथ से उन सबको निकाल फेंका है जो द्वन्द्व, मतभेद ईर्ष्या और द्वेष के कारण हैं और दूसरी ओर एकता, सहमति, तथा पूर्ण और चिरस्थायी एकता स्थापित करने वाले आवश्यक तत्वों का समावेश किया है। उसका भला होगा जो मेरे विधानों का अनुपालन करेगा।

44. सर्वशक्तिशाली प्रभु की यह इच्छा है कि उसके धर्म का उदय एक ऐसे घर से हो जो सामान्यतः धर्माधिकारियों, चिकित्सकों, साधु–संतों और विद्वानों द्वारा रखी जाने वाली सभी चीजों से वंचित हो।

45. प्राचीनतम सौन्दर्य ने स्वयं बंधनयुक्त होना स्वीकार किया ताकि मानवजाति बंधनमुक्त हो सके, उसने स्वयं कारावास की यातना भरी दासता स्वीकार कर ली ताकि

सम्पूर्ण विश्व सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त कर सके। उसने विषपान किया ताकि विश्व को अमृत मिल सके और धरती के लोग प्रसन्नता पा सकें और उनके जीवन उमंग से भर जाये। यह सर्वकृपालु, सर्वदयालु प्रभु की दया ही है। हे ईश्वर की एकता में विश्वास करने वालों ! हमने स्वयं को झुका दिया ताकि तुम उठ सको, हमने अनन्त यातनायें सहीं ताकि तुम सुखी और सम्पन्न बन सको। जो विश्व के नवनिर्माण के लिये आया है, देखो, किस प्रकार प्रभु के ही मित्रों ने उसे सर्वाधिक एकाकी शहर में निवास करने के लिये बाध्य कर दिया है।

46. मैं अपने कारावास की यातना से दुःखी नहीं हूँ। न ही मुझे अपने उस निरादर और अपमान की चिन्ता है जो मुझे अपने शत्रुओं के हाथों सहन करना पड़ा है। मेरे जीवन की सौगंध ! ये मेरे प्रकाश हैं जिनसे ईश्वर ने स्वयं को आभूषित किया है। काश ! तुम इसे जान पाते। मैं दुःखी तो उनके लिये हूँ जिन्होंने स्वयं को दोषपूर्ण वासनाओं के जाल में उलझा रखा है और जो अपने को प्रभुधर्म से सम्बद्ध रखने का दावा करते हैं। प्रभु सर्वप्रशंसित, सर्वस्तुत्य है।

47. हे यहूदियों ! अगर एक बार फिर तुम ईश्वर की आत्मा ईसा को सूली पर लटकाना चाहते हो तो मुझे फाँसी दो, क्योंकि वह एक बार फिर मेरे रूप में तुम्हारे सामने प्रकट हुआ है। तुम मेरे साथ जैसा भी व्यवहार करना चाहो, करो, क्योंकि मैंने कसम खाई है कि मैं ईश्वर की राह में अपने प्राण त्याग दूँगा। मुझे किसी का भी भय नहीं है, चाहे मेरे विरुद्ध

धरती और स्वर्ग की समस्त शक्ति ही क्यों न एकजुट हो जाये। गास्पॅल में विश्वास रखने वालों ! अगर तुम ईश्वर के अवतार मुहम्मद को मार डालना चाहते हो तो मुझे मौत के घाट उतार दो, क्योंकि वह मैं ही हूँ और मुझमें ही उसका अस्तित्व है। तुम मेरे साथ जैसा भी करना चाहते हो करो, क्योंकि मेरे अन्तरतम मन की गहन इच्छा यही है कि प्रभु की महिमा के साम्राज्य में मैं अपने परम प्रियतम का सान्निध्य पा सकूँ। दिव्य आदेश ऐसा ही है, अगर तुम जान सकते हो तो इसे जानो। मुहम्मद में विश्वास रखने वालों ! अगर तुम्हारी इच्छा अपने बरछों से उसकी छाती को छलनी करने की है जिसने उसके ग्रंथ *बयान* को तुम तक लाया है, तो मुझे मारो, क्योंकि मैं उसका प्रिय हूँ, उसी का प्रकटीकरण हूँ, हालाँकि मेरा नाम उसका नाम नहीं है। मैं महिमा के बादलों की छाँव से अवतरित हुआ हूँ और ईश्वर द्वारा मुझे अजेय सम्प्रभुता का वरदान प्राप्त है। सत्यतः, वही सत्य है, अदृश्य चीजों को जानने वाला। मैं तुमसे उसी व्यवहार की अपेक्षा रखता हूँ जैसा तुमने मुझसे पहले आने वालों के साथ किया है। इसकी साक्षी सभी वस्तुयें हैं, अगर तुम उनमें हो जो समझ सकते हो तो समझो। हे *बयान* के लोगों ! अगर तुमने उसका खून बहाने का निश्चय कर लिया है, जिसके आगमन की घोषणा बाब ने की थी, जिसके अवतरण की भविष्यवाणी मुहम्मद ने की थी और जिसके प्रकटीकरण की घोषणा खुद ईसा मसीह ने की थी तो तुम मुझे अपने सामने निहत्था खड़ा पाओगे। जैसी भी तुम्हारी इच्छा हो मेरे साथ वैसा व्यवहार करो।

48. ईश्वर मेरा साक्षी है ! अगर यह प्रभु की पातियों में वर्णित आदेश के प्रतिकूल न होता तो परमप्रियतम की राह में मेरा खून बहाने वाले हाथ मैं चूम लेता। इसके अलावा, प्रभु द्वारा प्रदान की गई सम्पत्ति का हिस्सा मैं उसे दे देता, अगर ऐसा कृत्य करने वाला प्रभु का कोपभाजन भी बनता, उसके अभिशाप का भागी भी होता और सर्वसम्पन्न, सर्वदर्शी, सर्वज्ञ प्रभु के अनन्त साम्राज्य में यातनायें भी सहता होता, तब भी।

49. तुम इसे भलीभांति जान लो कि जब कभी भी इस युवा ने अपने ऊपर निगाह डाली है तो उसने अपने को समस्त सृष्टि में अत्यन्त महत्वहीन पाया है। लेकिन, जब वह उस दीप्ति के सम्बन्ध में विचार करता है जिसे प्रकाशित करने की शक्ति उसे प्रदान की गई है तो देखो, वह व्यक्ति उस ईश्वर के समक्ष स्वयं को एक सम्प्रभु सार के रूप में पाता है जो समस्त दृश्य तथा अदृश्य वस्तुओं के सार को प्रभावित कर रहा होता है। उसकी महिमा बढ़े, जिसने अपने सत्य की शक्ति के सहारे अपने स्वरूप को पृथ्वी पर भेजा है और सम्पूर्ण मानवजाति को अपना संदेश देने को कहा है।

52. कहो, ओ लोगों ! उसके सत्य का प्रथम और सर्वोत्तम प्रमाण स्वयं ईश्वर है। दूसरा प्रमाण उसका प्रकटीकरण है। इनमें से किसी एक को भी पहचानने में जो असफल होता है, उसके लिये प्रमाणस्वरूप ईश्वर ने अपने शब्दों को प्रकटित किया है, ताकि उसके होने की वास्तविकता और सच्चाई पहचानी जा सके। यह, वस्तुतः मनुष्यों पर उसकी दया के प्रमाण हैं। उसने प्रत्येक आत्मा को प्रभु के चिन्हों को पहचानने

की क्षमता प्रदान की है। अन्यथा, वह अपने अस्तित्व को कैसे प्रमाणित कर सकता था, अगर तुम उनमें से हो जो अपने हृदयों में उसके धर्म के सम्बंध में सोचते हो तो इस पर विचार करो। वह किसी के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करता। वह किसी को इतना अधिक कार्य भी नहीं सौंपता है कि मनुष्य उसे पूरा नहीं कर सके। वह वस्तुतः सर्वकृपालु, सर्वदयालु है।

60. जब इस प्रकटीकरण के लिये निर्धारित समय आया और जब विश्व का सूर्य ईराक में प्रकट हुआ तब उसने अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे उसका अनुपालन करें जो उन्हें सांसारिक दोषों से मुक्त कर दे। कुछ ने अपनी भ्रष्ट इच्छाओं को पसंद किया, जबकि अन्य लोग न्याय और सत्य की राह पर चल पड़े और तब उनका सही मार्गदर्शन किया गया।

कहो, वह बहा के लोगों में नहीं गिना जाता है, जो सांसारिक इच्छाओं का दास है अथवा अपना दिल दुनियावी चीजों की ओर लगाता है। मेरा सच्चा अनुयायी वह है जो अगर विशुद्ध सोने की घाटी में भी आ जाये तो बादल की तरह उसे सीधे पार कर जायेगा और पीछे मुड़कर नहीं देखेगा, न ठहरेगा। ऐसा व्यक्ति निश्चित रूप से मेरा भक्त है। उसके वस्त्रों से स्वर्ग के निवासी पावनता की सुरभि प्राप्त कर सकते हैं 22और अगर वह राह में सुन्दरतम सुन्दरी के दर्शन करे तो उसका सौंदर्य उसके हृदय में कलुषित भाव न आने देगा। ऐसा व्यक्ति ही बेदाग पाकीज़गी को धारण करने वाला कहा जायेगा। यही महावतार की महालेखनी का आदेश है, जो सर्वशक्तिशाली, सर्वकृपालु तुम्हारे प्रभु द्वारा तुम्हें दिया गया है।

61. विश्व दुःख के जाल में फंसा है और इसकी पीड़ा दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यह पथभ्रष्टता तथा अनास्था की ओर उन्मुख है। इसकी अवस्था इतनी बुरी होगी कि उसका रहस्योद्घाटन करना अभी युक्तिसंगत तथा उपयुक्त नहीं है। इसकी पीड़ा लम्बे समय तक जारी रहेगी और जब निर्धारित समय आयेगा तब वह आयेगा जो सारे विश्व में हलचल मचा देगा, मानवता के अंग–प्रत्यंग को झकझोर कर रख देगा। तब और केवल तब ही दिव्य मापदण्ड प्रकाशित होंगे और स्वर्ग–कोकिला अपनी मधुर तान छेड़ेगी।

65. तू यह अच्छी तरह जान ले कि यह विश्व तथा इसके आडम्बर और अलंकरण नश्वर हैं। प्रभु के साम्राज्य के अतिरिक्त अन्य कुछ भी चिरस्थायी और अमर नहीं है। यह साम्राज्य उसका है, जो सबका स्वामी है, संकट में सहायक है, सर्वोत्कृष्ट तथा सर्वशक्तिमान है। तेरे जीवन के दिन निरर्थक बीत जायेंगे और वो सारी चीजें जिनमें तू उलझा हुआ है और जिनका तुम्हें अभिमान है, नष्ट हो जायेंगी और अवश्य ही तुम देवदूतों के समूहों द्वारा बुलाये जाओगे और तुम्हें एक ऐसे स्थान पर उपस्थित होना होगा जहाँ सम्पूर्ण सृष्टि के अंग–प्रत्यंग सिहर उठेंगे और हर एक अत्याचारी की देह रेंगने के लिये बाध्य होगी। तुम्हें अपने कर्मों का लेखाजोखा प्रस्तुत करने को कहा जायेगा और तेरे निरर्थक जीवन के फल तुझे मिलेंगे। ऐसा दिन अवश्य ही आयेगा, इसे कोई टाल नहीं सकता। इसका साक्षी वह है जो सत्य कहता है और जो सभी वस्तुओं का ज्ञान रखने वाला है।

66. ....कहो, यदि तू इस सांसारिक जीवन और इसके आडम्बरों की खोज में है तो इसकी प्राप्ति तुझे अपनी माँ के गर्भ में ही कर लेनी चाहिए थी, क्योंकि उस समय तू सांसारिकता के अधिक करीब था। काश ! तू इसे समझ पाता। अपने जन्म के बाद जैसे–जैसे तू परिपक्वता को प्राप्त हो रहा है, तू धूल की ओर ही बढ़ता जा रहाहै। तब भला क्यों इतने प्रलोभन में पड़ा है और धरती के धन बटोरने में लगा है, जबकि तू चंद घड़ियों का मेहमान है और अपनी बाजी हार चुका है ? हे अचेत लोगों, क्या अब भी तुम्हारी आंख नहीं खुली है ? तू अपनी नींद से कब जागेगा ?

ईश्वर के लिये उन सलाहों की ओर ध्यान दो जो प्रभु का यह सेवक तुझे दे रहा है। वह तुझसे कोई भेंट अथवा पुरस्कार नहीं चाहता। वह तो प्रभु–इच्छा के समक्ष नतमस्तक है और पूरी तरह से ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित है।

हे लोगों ! तेरे जीवन के बहुतेरे दिन बीत चुके हैं और तेरा अन्त शीघ्र ही निकट आ रहा है। अतः अपनी सांसारिक वस्तुओं को तिलांजलि देकर प्रभु के आदेशों का पालन करो ताकि तू वह पा सके, जिसके लिये तेरा जन्म हुआ है। अपनी गिनती सद्मार्गियों में कराओ। भौतिक मोहमाया में उलझे मत रहो। सर्वोच्च, सर्वमहान प्रभु का स्मरण करो, इसके पहले कि वह तेरी उन सभी चीजों को धूल में मिला दे जिन पर तुझे नाज है। उससे भय खाओ, उससे किये गये समझौते को मत भूलो और अपनी गिनती उनमें न कराओ जो प्रभु से पर्दा करते हैं।

प्रभु के समक्ष तू अभिमान से फूल मत और घृणापूर्वक उसके प्रेमी–जनों का तिरस्कार मत कर। उन भक्तों के सम्मुख तू विनम्र रह जो प्रभु और उसके अवतारों में विश्वास रखते हैं, जिनके हृदय उस परमेश्वर की एकता के प्रमाण हैं, जिनकी वाणी उसकी समरूपता की घोषणा करती रहती है और जो प्रभु की आज्ञा से ही बोलते हैं। न्याय की यह बात हम तुझे इसलिये बताते हैं और सत्य के प्रति इसलिये तुझे आगाह कर देते हैं कि समय रहते तू चेत सके।

किसी भी आत्मा पर बोझ न डाल जो तू स्वयं वहन नहीं कर सकता और किसी के लिये भी वह न चाह जो तू अपने लिये नहीं चाहता। तेरे लिये यह मेरी सर्वश्रेष्ठ शिक्षा है। इसका अनुपालन कर।

धर्मनिष्ठों और विद्वानों का तुम आदर करो और उन्हें सम्मान दो जो अपने कर्त्तव्यों का अनुपालन करते हैं, जो प्रभु की आज्ञाओं का उल्लंघन नहीं करते तथा जिनके निर्णय प्रभु की पुस्तक में वर्णित नियमों के अनुकूल होते हैं। तू ऐसा समझ कि ऐसे लोग स्वर्ग तथा पृथ्वी पर रहने वालों के लिये मार्गदर्शक दीपक के समान हैं।

70. मेरी वाणी के महासिन्धु में गोते लगाओ ताकि इसके रहस्यों का पता लगा सको और इसकी अतल गहराई में बिछे विवेकरूपी मोतियों को पा सको। ध्यान से सुनो, इस प्रभुधर्म के सत्य को अंगीकार करने के अपने निश्चय से तुम क्षणमात्र के लिये भी नहीं डिगो। वह धर्म जिसके द्वारा ईश्वर

की शक्ति प्रकट हुई है और उसकी सत्ता स्थापित हुई है। प्रसन्नतापूर्वक तुम उसके निकट पहुंचने की शीघ्रता करो। यह प्रभुधर्म अपरिवर्तनीय है, भूतकाल में शाश्वत था, भविष्य में भी शाश्वत रहेगा। जो इसकी इच्छा करे, उसे इसे पाने दो और जो इसे नकारे तो यह जान लो कि प्रभु स्वयंभू है और अपनी सृष्टि पर निर्भरता से ऊपर है।

कहो : यह वह दोषमुक्त महासंतुलन है जिसे प्रभु के महाहस्त ने धारण किया है, यह वह तुला है जिससे स्वर्ग तथा पृथ्वी के सभी लोग तौले जाते हैं और उनके भाग्य का निर्णय होता है, बशर्ते तुम उनमें से हो जो इस सत्य को मानते हो और पहचानते हो। कहो : इसके द्वारा निर्धनों को सम्पन्नता, ज्ञानियों को दिव्य ज्ञान का प्रकाश तथा जिज्ञासुओं को प्रभु का सान्निध्य पाने की क्षमता प्राप्त हुई है। सावधान ! कहीं तुम इसे पारस्परिक कलह का कारण न बना डालो। तुम पर्वत की तरह अडिग बनो और सर्वशक्तिमान, सबको प्रेम करने वाले अपने स्वामी के धर्म का पालन करो।

71. कहो : अपनी सम्पत्ति पर गर्व न करो, आज यह तेरी है, कल यह किसी और के पास होगी। सर्वज्ञाता, सर्वविद् तुझे इस प्रकार चेतावनी देता है। कहो : क्या तू यह निश्चयपूर्वक कह सकता है कि तुम्हारी सम्पत्ति बराबर बनी रहने वाली और सुरक्षित है ? नहीं, अपनी सौगंध ! तेरा जीवन तो हवा के झोंके की तरह है। तेरा ऐश्वर्य तथा तमाम वैभव यहीं धरा रह जायेगा। हे मनुष्यों ! सोचो, तेरे बीते हुये दिनों में क्या हुआ है। वे दिन धन्य हैं जो ईश्वर की आराधना

में व्यतीत हुये हैं और धन्य हैं वे पल जो ईश–प्रार्थना में बीते हैं। मेरे जीवन की सौगंध ! धनवान का धन, शक्तिशाली का शौर्य और नास्तिकों का गर्व–ये सब स्थायी नहीं हैं। उसके एक शब्द के साथ इनका क्षण भर में नाश हो जायेगा। वह वस्तुतः, सर्वशक्तिशाली, सर्वोपरि और सर्वसम्पन्न है। मनुष्य जो भौतिक सम्पत्ति रखते हैं, उनका लाभ ही क्या है ? जो उन्हें लाभ पहुँचा सकता है उसे तो उसने पहले ही त्याग दिया है। शीघ्र ही जब वे अपनी तन्द्रा त्यागेंगे तो पायेंगे कि जो उन्होंने अपने स्वामी के दिनों में नहीं प्राप्त किया था उसे पा सकने में असमर्थ हैं। अगर वे यह जान पाते तो अपनी सम्पूर्ण धन–सम्पदा त्याग देते और प्रभु के भक्तों में अपनी गिनती कराते। वे, वस्तुतः मृतकों में गिने जाते हैं।

72. सावधान ! कहीं तेरी भौतिक इच्छायें और काम–वासनायें तेरे बीच विभेद को न जन्म दे दें। तू एक ही हाथ की उंगलियों के समान बन, एक ही शरीर के अंगों की तरह रह। यदि तू उनमें से है जो प्रभु में विश्वास करते हैं तो प्रकटीकरण की महालेखनी का यही परामर्श है।

75. मेरे महानाम से, उन आवरणों को हटा दो, जिन्होंने तेरी दृष्टि बुरी तरह ढक ली है और प्रभु की एकता में अपने विश्वास से उत्पन्न शक्ति से अपनी व्यर्थ अंधानुकरण की मूर्तियों को तोड़ डालो। तब प्रभु के आनन्दमय स्वर्ग में प्रवेश करो। अपनी आत्माओं को उनसे दूर रखो जो ईश्वर का नहीं है तथा उस पात्र से रसास्वादन करो जो प्रभु के प्रकटीकरण से भरा है। उनकी ओर निहारो जो उसकी दोषमुक्त सत्ता की

छत्रछाया में है। अपनी व्यर्थ कामनाओं और वासनाओं में उलझे मत रहो, क्योंकि मैंने तुझे उन कलाओं से युक्त किया है जिनके माध्यम से मेरी महान कला का प्रदर्शन तू मनुष्यों के सम्मुख कर सके। अतः, प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है और रहेगा कि वह प्रभु के सौंदर्य की प्रशंसा करे। यदि मनुष्य के पास इतना विवेक नहीं होता तो वह अपनी असफलताओं का ज्ञान कैसे कर पाता? अगर उस दिन जब सभी मनुष्य एक होंगे और प्रभु के सम्मुख खड़े होंगे तो किसी भी व्यक्ति से यह पूछा जायेगा, "कहाँ तूने मेरे सौंदर्य में अविश्वास किया और कब तू मुझसे विमुख हुआ?" और तब वह मनुष्य अगर उत्तर में यह कहता है, "चूंकि सभी मनुष्य गलत कर रहे थे, कोई भी मनुष्य प्रभु के अनन्त सत्य की ओर जाने को इच्छुक नहीं था और इसी कारण मैं भी उस अनन्त सौंदर्य के दर्शन नहीं कर सका" तो ऐसे तर्क प्रभु को मान्य नहीं होंगे, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का धर्म उसके अतिरिक्त किसी अन्य पर आश्रित नहीं होता।

76. हे मेरे सेवक! तू उसे ध्यान से सुन जो अगम्य, सर्वोच्च तुम्हारे स्वामी के सिंहासन से तुम्हारे पास भेजा जा रहा है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। वह अपने प्राणियों को इसलिये अस्तित्व में लाया है कि वे उसे जान सकें, जो करुणामय है, सर्वदयालु है। सभी राष्ट्रों के नगरों में उसने अपने संदेशवाहक भेजे हैं और उन्हें इस बात के लिये अधिकृत किया है कि अपने स्वर्ग के शुभ संदेश की घोषणा मनुष्यों के बीच करें और अपने सुदृढ़ संरक्षण के

आश्रय के निकट लायें, जो शाश्वत पावनता और उत्कृष्ट महिमा का सिंहासन है।

77. और अब मनुष्य की सृष्टि के सम्बंध में तेरे प्रश्न के उत्तर के रूप में तू यह जान कि मनुष्यों की सृष्टि सर्वस्वामी सर्वसंरक्षक प्रभु ने अपने द्वारा निर्मित प्रकृति में की है। जैसा कि ईश्वर की सर्वशक्तिशाली और सुरक्षित पाती में वर्णित है, हर एक को एक पूर्वनिर्धारित मापदण्ड के अनुरूप जीवन प्रदान किया गया है। जो कुछ भी तेरे पास है उसका प्रदर्शन तू अपनी इच्छा से करता है। तेरे अपने कार्य इस सत्य को प्रमाणित करते हैं। उदाहरण के लिये, उन पर विचार करो जो *बयान* में मनुष्यों के लिये निषिद्ध किया गया है। इस पवित्र ग्रंथ में प्रभु ने जिसे चाहा उसे अपनी आज्ञा से न्यायोचित ठहराया और अपनी सार्वभौमिक शक्ति से जिसे निषिद्ध करना चाहा उसे निषिद्ध ठहराया। इसका प्रमाण पवित्र पुस्तक की पंक्तियाँ देती हैं। क्या तू इसका साक्षी नहीं बनेगा ? फिर भी मनुष्यों ने बड़ी चतुराई से उसके कानूनों का उल्लंघन किया है। क्या इस व्यवहार का कारण तुम प्रभु को समझते हो या स्वयं को ? अपने निर्णय में तुम निष्पक्ष बनो। प्रत्येक अच्छी वस्तु ईश्वर की है और प्रत्येक गलत चीज तेरी ओर से आई। क्या अब भी तू विवेक से काम नहीं लेगा ? यही सत्य सभी धर्मग्रंथों में प्रकट किया गया है। अगर तू उनमें से है जो समझ सकते हैं तो इसे समझो। किसी कार्य के सम्बंध में तेरा विचार करना मात्र भी उसे उतना ही मालूम है जितना कि उस कार्य का पूरा होना।

प्रभु के समक्ष सब स्पष्ट है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। सम्पूर्ण सृष्टि तथा साम्राज्य उसी का है। उसकी पवित्र तथा निगूढ़ पातियों में सब अंकित है।

78. सृष्टि की रचना के सम्बन्धित तुम्हारे प्रश्न के सम्बंध में। निश्चित रूप से यह जान लो कि ईश्वर की सृष्टि अनन्त काल से रही है तथा सदैव विद्यमान रहेगी। इसके आदि का कोई आरम्भ नहीं तथा इसका कोई अंत नहीं है। ईश्वर का एक नाम "सृजनहार' एक सृष्टि की अवधारणा को दर्शाता है जैसे ईश्वर का एक पद मनुष्यों का स्वामी, सेवक की उपस्थिति का प्रमाण देता है।

पूर्व युगों के अवतारों से सम्बंधित बातें जैसे "आदि में ईश्वर था तथा उसको पहचानने वाला कोई प्राणी नहीं था" और "स्वामी एकाकी था तथा उसकी प्रशंसा करने वाला कोई नहीं था" – इनका तथा इस तरह की अन्य बातों का अर्थ शुद्ध और स्पष्ट है और कभी भी गलत समझा नहीं जाना चाहिये। ईश्वर द्वारा प्रकटित यह शब्द भी उसी सत्य की साक्षी देता है। "ईश्वर एकाकी था, उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था। वह सदैव वैसा ही रहेगा जैसा वह था।" प्रत्येक विवेकी व्यक्ति के नेत्र तत्काल इस तथ्य को देख पायेंगे कि स्वामी प्रकट हो गया है तथापि कोई उसकी महिमा को पहचानने वाला नहीं है। इसका अर्थ है कि ईश्वर का निवासस्थल इतना उच्च है कि उसके अतिरिक्त अन्य कोई वहाँ तक पहुँच नहीं सकता। अनिश्चित विश्व में जो कुछ भी समझा अथवा प्रकट किया जाता है, इस जगत पर लादी गई

सीमाओं का उल्लंघन नहीं कर सकता। मात्र ईश्वर ही इन सीमाओं को पार कर सकता है। वह वस्तुतः शाश्वत है। उसका मित्र अथवा उसका समकक्ष किसी को नहीं बनाया जा सकता। कोई लेखनी उसकी प्रकृति की व्याख्या नहीं कर सकती और न ही कोई जिह्वा उसकी महिमा का बखान कर सकती है। वह सदैव, अपरिमेय रूप से स्वयं के अतिरिक्त अन्य सभी से उच्च रहेगा।

79. ईश्वर के लोकों से सम्बंधित तुम्हारे प्रश्न के संदर्भ में। इस सत्य को जान लो कि ईश्वर के जगत असंख्य तथा असीमित हैं। सर्वज्ञाता, सर्वबुद्धिमान ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई न तो उसका अनुमान लगा सकता है और न ही समझ सकता है। स्वयं की निद्रामग्न अवस्था का ध्यान करो। यदि तुम अपने मस्तिष्क में इस पर विचार करो तो वस्तुतः यह अवस्था मनुष्यों के मध्य ईश्वर का रहस्यतम चिन्ह है। ध्यान करो कि किस प्रकार कुछ घटनायें जो तुम स्वप्न में देखते हो, कुछ समय पश्चात् किस प्रकार वास्तव में घटित होती हैं। यदि तुम्हारे स्वप्नों का जगत तथा जिस जगत में तुम रहते हो, एक ही होता तो स्वप्न में दिखने वाली घटना इस जगत में उसी क्षण घट रही होती। यदि ऐसा होता तो इसका साक्षी तू स्वयं होता।

80. तू ने मुझसे पूछा है कि क्या ईश्वर और उसके चुने हुये जनों के अतिरिक्त, मनुष्य मृत्यु के बाद भी अपने व्यक्तित्व, चेतना, बुद्धि और विवेक को कायम रख पायेगा, जिनके कारण इस संसार का उसका जीवन जाना जाता है।

तेरे मन में शायद यह ख्याल आ रहा होगा कि दिमाग के किसी हिस्से में हल्की चोट लग जाने पर अथवा बेहोश हो जाने या बुरी तरह बीमार पड़ जाने पर तो आदमी चेतना खो देता है फिर मृत्यु, जिसके बाद शरीर मिट्टी में मिल जाता है, क्या उसकी चेतना और समझ को समाप्त नहीं कर देती ? कोई कैसे यह कल्पना भी कर सकता है कि जब चेतना और विवेक को कायम रखने वाला यंत्र ही समाप्त हो जायेगा तो उसका व्यक्तित्व कैसे बना रह सकता है ?

तू यह जान कि मनुष्य की आत्मा इस सबसे ऊपर है और शरीर तथा मस्तिष्क की सभी कमजोरियों से स्वतंत्र। रोगी व्यक्ति का शरीर अवश्य ही कमजोर हो जाता है, परन्तु उसकी आत्मा पर इस कमजोरी का कोई असर नहीं होता। दीपक के प्रकाश के सम्बंध में विचार करो। किसी बाहरी अवरोध से इसकी चमक समाप्त हो सकती है, किन्तु इसका आन्तरिक प्रकाश अप्रभावित रहता है। इसी तरह हर रोग वह अवरोध है जो आत्मा की चमक को लुप्त कर देता है और इसका स्पष्ट प्रमाण शरीर की चमक समाप्त होने से मिलता है, लेकिन आत्मा की शक्ति और तेज पूर्ववत बने रहते हैं। जब आत्मा शरीर त्यागती है तब यह ऐसी चमक प्राप्त करती है और ऐसा प्रभाव डालती है जिसकी तुलना धरती पर विद्यमान किसी शक्ति से नहीं की जा सकती। प्रत्येक शुद्ध तथा पवित्र आत्मा अभूतपूर्व शक्ति से सम्पन्न होगी और उत्तरोत्तर प्रसन्नता का अनुभव करेगी।

एक ढक्कन के अन्दर जलते हुये दीप की कल्पना करो।

यद्यपि दीप अन्दर जलता रहता है, फिर भी इसका प्रकाश बाहर दिखाई नहीं देता। इसी तरह से उस सूर्य के सम्बंध में सोचो जो बादलों से घिरा होता है। देखो, कैसे इसका प्रकाश लुप्तप्राय लगने लगता है, जबकि सच यह है कि प्रकाश का वह स्त्रोत अपरिवर्तित रहता है। मनुष्य की आत्मा की तुलना इस सूर्य से की जानी चाहिये। जब तक कोई बाहरी अवरोध नहीं होता तब तक शरीर पूरी तरह से आत्मा के प्रकाश को प्रतिबिम्बित करता रहेगा और इसकी शक्ति धारण किये रहेगा। परन्तु जैसे ही इनके बीच कोई पर्दा पड़ता है, उस प्रकाश की चमक कम लगने लगेगी।

एक बार फिर उस सूर्य की कल्पना करो जो पूरी तरह से बादलों से घिरा है। यद्यपि पृथ्वी इसके प्रकाश से अभी भी प्रकाशित है, फिर भी उस प्रकाश की गहनता कम हो जाती है। जब तक बादल छंट नहीं जाते, तब तक अपने पूर्ण प्रकाश के साथ सूर्य चमक नहीं सकता। न तो बादलों की उपस्थिति और न ही इनका अभाव सूर्य में अन्तर्निहित प्रकाश को प्रभावित कर सकता है। मनुष्य की आत्मा वह सूर्य है, जिससे शरीर प्रकाशित होता है और इससे ही अपनी शक्ति ग्रहण करता है। इसे ऐसा ही समझा जाना चाहिए।

81. और अब आत्मा के देहविसर्जन के पश्चात जीवित रहने के प्रश्न के सम्बंध में। तुम इस सत्य को जानो कि शरीर से अलग होने पर भी आत्मा तब तक प्रगति करती जायेगी जब तक वह परमात्मा से एक ऐसी अवस्था में मिलन को प्राप्त नहीं हो लेती जिसे सदियों की क्रान्तियाँ और दुनिया के

परिवर्तन और संयोग भी बदल नहीं सकते। यह तब तक अमर रहेगी जब तक प्रभु का साम्राज्य, उसकी सार्वभौमिकता और उसकी शक्ति है। यह प्रभु के चिन्हों और गुणों को प्रकट करेगी और उसकी प्रेममयी कृपा तथा आशीषों का संवहन करेगी। मेरी लेखनी इतने उच्च तथा भव्य पद का वर्णन करने में अपने को असमर्थ पाती है। कृपालु हस्त जिस सम्मान के साथ आत्मा का आलिंगन करेगा वह इतना महान होगा कि कोई भी वाणी समुचित ढंग से उसका वर्णन नहीं कर सकेगी ना ही पृथ्वी का कोई भी साधन उसका पूर्ण विवरण प्रस्तुत कर पायेगा। धन्य है वह आत्मा जो देहविसर्जन के समय दुनिया के लोगों की कोरी कल्पनाओं से भ्रष्ट न हुई हो और पवित्र बनी रही हो। ऐसी आत्मा अपने सृजनकर्ता की इच्छा के अनुरूप अमर रहती है, प्रगति करती जाती है और सर्वोच्च बैकुंठ में प्रवेश को प्राप्त होती है। स्वर्ग की परियाँ और सर्वोच्च स्वर्ग के निवासी उसे घेरे रहते हैं और ईश्वर के अवतार तथा उसके चुने हुये लोग उसके साथ रहने की कामना करते हैं। उनके साथ वह आत्मा मुक्त वार्तालाप करेगी और उन्हें बतायेगी जो सर्वलोकों के स्वामी प्रभु के मार्ग में उसने सहा है। यदि किसी मनुष्य को पहले ही पता चल जाये कि प्रभुलोक में उसे इतना उच्च स्थान मिलेगा तो वह उस स्थान की उत्कृष्ट अभिलाषा में विक्षिप्त हो जायेगा...। मृत्यु के पश्चात आत्मा की प्रकृति का वर्णन नहीं किया जा सकता, ना ही इस बात की अनुमति है कि इसके सम्पूर्ण स्वरूप को मनुष्य के समक्ष उद्घाटित किया जाये। प्रभु के

पैगम्बर और संदेशवाहक मानवजाति के मार्गदर्शन के लिये समय–समय पर भेजे जाते रहे हैं। उनके अवतरण का उद्देश्य मनुष्यों को शिक्षित करना है, ताकि मृत्यु के समय वे पूरी पवित्रता और अनासक्ति के साथ स्वर्ग–पथ पर प्रयाण करें। जो प्रकाश इन आत्माओं से प्रस्फुटित होता है उसी से दुनिया में प्रगति और विकास सम्भव है। वे आत्मायें विश्व के परिवर्तन को प्रभावित करती हैं और वैसी जीवनशक्ति का संचार करती हैं जिससे विश्व की कलायें और विज्ञान की विशिष्टतायें सामने आती हैं। उन्हीं के द्वारा मनुष्यों के ऊपर मेघ कृपा–वर्षा करते हैं और धरती फल देती है। सभी वस्तुओं का एक कारण, एक उद्देश्य, एक जीवन–सिद्धान्त होना आवश्यक है। इन आत्माओं और अनासक्ति के प्रतीकों ने विश्व को सर्वोच्च शक्ति और प्रेरणा दी है और ये देती रहेंगी। परलोक इहलोक से उसी प्रकार भिन्न है जिस प्रकार यह लोक गर्भस्थ शिशु के लोक से भिन्न है। जब आत्मा प्रभु से मिलन कर लेगी तब यह अपना अनन्त स्वरूप ग्रहण करेगी और पवित्रता के उच्चासन पर विराजमान होगी। इस प्रकार का अस्तित्व सांयोगिक और अनिश्चित है, सम्पूर्ण और निश्चित नहीं, क्योंकि सांयोगिक अस्तित्व कारण से सम्बंधित होता है, जबकि सम्पूर्ण अस्तित्व आत्मनिर्भर होता है।

82. तुमने मुझसे आत्मा की प्रकृति के सम्बंध में पूछा है। इस सम्बंध में तुम यह जानो कि यह ईश्वर का एक चिन्ह है, यह वह दिव्य रत्न है जिसकी वास्तविकता को समझ पाने में ज्ञानीजन भी असमर्थ रहे हैं और जिसका रहस्य किसी भी

मस्तिष्क की समझ के परे है, चाहे वह कितना भी तीक्ष्ण क्यों न हो। प्रभु की श्रेष्ठता की घोषणा करने में सभी सृजित वस्तुओं में यह प्रथम है, उसकी ज्योति को पहचानने में प्रथम है, उसके सत्य को मानने में प्रथम है और उसके समक्ष नतमस्तक होने में प्रथम है। यदि यह प्रभु की आज्ञापालक है तो यह उसके प्रकाश को प्रतिबिम्बित करेगी और अन्ततः उसी में समाहित हो जायेगी। यदि यह प्रभु से तादात्म्य स्थापित करने में असमर्थ रहती है तो यह स्वार्थ और वासना का शिकार बनेगी और अन्त में उसी में डूब कर रह जायेगी।

आत्मा के विकास की विभिन्न स्थितियों के सम्बंध में प्राचीन ग्रंथों में बहुत कुछ लिखा गया है। इन ग्रंथों में विकास की विभिन्न अवस्थाओं, जैसे–काम, वासना, क्रोध, प्रेरणा, उदारता, संतोष, दिव्यानंद आदि का उल्लेख है, परन्तु महालेखनी इनका वर्णन नहीं करती। उसके अनुसार तो प्रत्येक वह आत्मा जो प्रभु में आस्था रखती है वह ईश्वरीय नामों और पदों से सम्मानित होगी।

जब मनुष्य सोया होता है तो यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी आत्मा किसी बाहरी वस्तु से प्रभावित होती है। अपने मौलिक रूप और अवस्था में यह किसी प्रकार के परिवर्तन के प्रति संवेदनशील नहीं होती। इसके कार्यों में जो कुछ भी परिवर्तन दिखलाई देता है, वह बाहरी कारणों से होता है। इन्हीं बाहरी कारणों को ही इसके वातावरण, विवेक तथा दृष्टिकोण में भी अन्तर माना जाना चाहिए।

मानव–नेत्र के विषय में विचार करो। यद्यपि इसमें सभी सृष्ट वस्तुओं को देखने की शक्ति होती है, लेकिन एक छोटा–सा अवरोध भी नेत्र की दृश्य–शक्ति समाप्त कर देता है। उसके नाम की स्तुति हो, जिसने इन कारणों का निर्माण किया है और जो समस्त कारणों का कारण है और जिसने आदेश दिया है कि अस्तित्व के संसार में प्रत्येक परिवर्तन इन्हीं कारणों पर निर्भर करे। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु वह द्वार है जो उस परमेश्वर के ज्ञान तक हमें पहुंचाता है। उसका ज्ञान उसकी प्रभुसत्ता का चिन्ह, उसके नामों का प्रकटीकरण उसके वैभव का प्रतीक, उसके सीधे मार्ग में प्रवेश दिलाने वाला साधन है...।

मैं सत्य कहता हूँ कि मनुष्य की आत्मा अपने सार रूप में प्रभु के चिन्हों में एक है, उसके रहस्यों में एक रहस्य है। यह सर्वशक्तिशाली के चिन्हों में एक है। यह ईश्वर के सभी लोकों की वास्तविकता को बताने वाला अग्रदूत है। इसके अन्दर वे रहस्य छिपे हुये हैं जिन्हें विश्व अभी जानने में पूर्णतः असमर्थ है। अपने हृदय में प्रभु की आत्मा के प्रकटीकरण पर विचार करो जो उसके सभी विधानों में व्याप्त है और इसकी तुलना प्रभु के विरोधियों और अविश्वासियों की आत्मा से करो। तब तुम समझ पाओगे कि प्रभु से विमुख आत्मा वासनाओं तथा दुर्गुणों में फंसकर कुमार्गगामी हो जाती है। ऐसी आत्मा दोषों की राह में बहुत दूर तक भटक जाती है।.

तुमने मुझसे आत्मा की उस अवस्था के विषय में पूछा है जब यह देह को त्याग देती है। तुम इस सत्य को जानो कि

अगर आत्मा ने प्रभु के पथ का अनुसरण किया है तो अवश्य ही वह प्रभु के प्रकाश में विलीन हो जायेगी। प्रभु के न्याय की सौगंध ! यह उस स्थान को ग्रहण करेगी, जिसका वर्णन कोई भी लेखनी तथा वाणी नहीं कर सकती। वह आत्मा जो प्रभुधर्म के प्रति आज्ञापालक रही है तथा उसकी राह पर अडिग रही है, देहविसर्जन के पश्चात एक ऐसी शक्ति प्राप्त कर लेती है कि प्रभु द्वारा सृजित सभी लोक उससे लाभ प्राप्त करते हैं। ऐसी ही आत्मा उस आदर्श सम्राट और दिव्य शिक्षक से आदेश प्राप्त कर विश्व के परिवर्तन तथा विश्व के निर्माण में सहायक होती है। इस पर विचार करो और प्रभु को धन्यवाद दो।

अपनी अनेक पातियों में हमने इस विषय की चर्चा की है और आत्मा के विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर प्रकाश डाला है। मैं यह सत्य कहता हूँ कि मनुष्य की आत्मा भौतिक उन्नति और अवनति से परे है। यह स्थिर है, फिर भी चलायमान है। आत्मा उस विश्व के अस्तित्व को प्रमाणित करती है, जिसका न आदि है न अंत। देख, किस प्रकार जो सपने तू ने वर्षों पहले देखे थे, वे अब तुम्हारी आँखों के सामने पूरे हो गये हैं। सोचो, उस स्वप्निल विश्व का रहस्य कितना विचित्र है। अपने हृदय में प्रभु के अथाह ज्ञान और उसके बहुमुखी प्रकटीकरणों पर विचार करो.....।

84. ईश्वर को सर्वोच्च और सभी सृष्ट वस्तुओं से परे और उन सबसे परमोच्च तू मान। सम्पूर्ण सृष्टि उसी के प्रकाश को प्रतिबिम्बित करती है और वह समस्त सृष्ट वस्तुओं से स्वतंत्र

और ऊपर है। दिव्य एकता का सच्चा अर्थ यही है। यह शाश्वत सत्य है। यह ऐसी शक्ति है जिसकी प्रभुसत्ता समस्त प्राणियों पर निर्विवाद रूप से सर्वमान्य है, जिसका प्रतिरूप सम्पूर्ण सृष्टि में प्रतिबिम्बित होता है। समस्त अस्तित्व उस पर आश्रित है, सम्पूर्ण प्राणी उसी से जीवन ग्रहण करते हैं। यही अर्थ दिव्य एकता का है। यही इसका मूल सिद्धान्त है।

85. हे मेरे सेवकों ! तुम्हें अपनी आत्माओं को उस कृपा–वर्षा से पुनर्जीवित करना चाहिये, जो इस दिव्य बसंतकाल में तुम्हारे ऊपर बरसायी जा रही है। उसकी अनंत ज्योति के दिव्य नक्षत्र ने तुम्हारे ऊपर अपनी किरणें बिखेरी हैं और उसकी असीम कृपा के मेघ आच्छादित हो चुके हैं। वह व्यक्ति कितने महान पुरस्कार का भागी होगा जो इस नवीन वस्त्र में छिपे अपने सर्वप्रिय के सौंदर्य को पहचानता है और इस महान कृपा से वंचित नहीं रहता है।

कहो : हे लोगों ! प्रभु का दीप प्रज्जवलित है। ध्यान रखो, कहीं अवज्ञा की आंधी इसे बुझा न दे। यह समय जाग पड़ने और स्वामी, अपने ईश्वर की आराधना करने का है। शारीरिक सुखों की ओर मत भागो और अपने हृदय को पवित्र तथा बेदाग रखो। बुराई तुम्हें अपने जाल में फँसाने के लिये प्रतीक्षा कर रही है। उसकी कलुषित इच्छाओं के प्रति सावधान हो जाओ और सत्य प्रभु के प्रकाश से मार्गदर्शन प्राप्त कर उस अंधेरे को खत्म कर दो जो तुम्हारे चारों ओर है। अपना ध्यान प्रभु में केन्द्रित करो, अपने में नहीं।

86. और अब अपने इस प्रश्न के सम्बंध में कि क्या आत्मायें देहविसर्जन के पश्चात् एक दूसरे के प्रति चेतन रहती हैं, तू यह जान कि बहा के लोगों की आत्मायें एक–दूसरे के साथ रहेंगी और वार्तालाप करेंगी और उनकी भावनायें, इच्छायें और उद्देश्य इस प्रकार एक होंगे कि वे एक आत्मा के समान रहेंगी। वस्तुतः ये ही आत्मायें सूक्ष्म दृष्टि धारण करने वाली, सभी वस्तुओं का ज्ञान रखने वाली और प्रभुधर्म की समझ रखने वाली होती हैं। ऐसी ही सर्वज्ञाता, सर्वविवेकी प्रभु की आज्ञा है।

बहा के लोग, जो प्रभु के लोक के निवासी हैं, वे सभी एक दूसरे की अवस्थाओं से पूर्ण परिचित हैं और अपने संकल्प, साहचर्य और आचरण में एक हैं। जो एक ही स्तर के हैं वे एक–दूसरे की क्षमता, गुणों, चरित्र योग्यताओं से भलीभांति परिचित हैं। जो निम्न स्तर के हैं, वे अपने से उच्च स्तर के लोगों के स्थान को समझ पाने में अक्षम हैं। प्रत्येक प्रभु से अपना भाग ग्रहण करेंगे। धन्य है वह व्यक्ति जो प्रभु की ओर उन्मुख हुआ है, वह प्रेम–पथ का पथिक है और अन्त में सर्वकृपालु, सर्वशक्तिमान प्रभु से एकाकार हो जाता है।

नास्तिकों की आत्मायें अपने अंतिम समय में ही उन सब वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त कर पायेंगी, जिनसे वे दूर रही हैं। तब वे अपनी दुर्दशा को रोयेंगी और प्रभु के सम्मुख नतमस्तक होंगी। देहविर्सजन के पश्चात ऐसी आत्मायें इसी प्रकार का पश्चाताप करती रहेंगी।

यह वह युग है, जब प्रभु के प्रेमियों को चाहिये कि वे अपने अवतार की ओर ध्यान लगायें और उस अवतार की कृपा से जो कुछ भी प्रकट किया गया है उसके प्रति दृढ़ रहें। पुराने समय की कुछ परम्परायें आधारविहीन हैं। पीढ़ियों से जिस मान्यता को समर्थन मिलता आया है और जिन्हें उन्होंने अपनी पुस्तकों में अंकित किया है, वे अधिकांशतः उनके भ्रष्ट इरादों से प्रभावित हैं। तुम देखते हो कि किस प्रकार ईश्वर के शब्दों की टिप्पणी और व्याख्या, जो आज प्रचलित हैं, सच्चाई से परे हैं। कुछ मामलों में तो उनका जाली होना प्रमाणित भी हुआ है, जब उनके आवरण हटाये गये हैं। उन्होंने ईश्वर की वाणी के अर्थ को समझने में स्वयं अपनी असमर्थता स्वीकारी है।

हमारा उद्देश्य यह दिखलाना है कि प्रभु के प्रेमीगण अगर अपना हृदय और अपनी श्रवणेन्द्रियाँ उन व्यर्थ वचनों से दूर रखें जो कभी कहे गये थे और अपना ध्यान केवल इस युग के अवतार के कथनों पर केन्द्रित करें जो कुछ भी उसने प्रकट किया है, उन्हीं की ओर अपने हृदय के सम्पूर्ण समर्पण के साथ उन्मुख हों तो प्रभु की दृष्टि में ऐसा व्यवहार निश्चित ही उच्चकोटि का है।.....

87. तुम्हारे प्रश्न के सम्बंध में "ऐसा क्यों है कि मानव के पिता, आदम से पूर्व के अवतारों अथवा उन अवतारों के समय के राजाओं के कोई चिन्ह नहीं प्राप्त होते ?" यह जान लो कि उन से सम्बंधित किसी अभिलेख का न पाया जाना उनके न होने का प्रमाण नहीं है। उनसे सम्बंधित किसी

प्रकार के अभिलेख का न पाया जाना उनके अति प्राचीन होने तथा पृथ्वी पर उस समय से आये अनेक विशाल बदलावों के कारण हैं।

इसके अतिरिक्त आज जितने प्रकार की लेखन विधियाँ मानवता को उपलब्ध हैं वे आदम से पूर्व की पीढ़ियों को उपलब्ध नहीं थीं। ऐसा समय भी था जब मनुष्य पूर्णतया लेखन विद्या से अपरिचित था तथा आज की विद्या से पूर्णतया भिन्न विद्या का प्रयोग करता था। इसको समझने के लिये वृहद् व्याख्या करने की आवश्यकता होगी।

आदम के दिनों से आये बदलावों पर विचार करो। आज धरती पर विभिन्न प्रकार की प्रचलित भाषायें उसी प्रकार अज्ञात थीं जैसे आजकल के रीतिरिवाज। उस समय के लोग आज की भाषाओं से पूर्णतया भिन्न भाषा का उपयोग करते थे। भाषाओं की विभिन्नतायें बाद के युग में बेबल नामक स्थान से प्रारंभ हुईं। इसका नाम रखा गया बेबल, जिसका अर्थ था "वह स्थान जहां भाषाओं के सम्बन्ध में भ्रम उत्पन्न हुआ।"

इसके पश्चात विद्यमान भाषाओं में सीरियाक प्रमुख भाषा हो गई। पुराने समय के पवित्र ग्रंथ इस भाषा में प्रकट किये गये। उसके बाद ईश्वर के मित्र, अब्राहम ने प्रकट होकर विश्व पर दिव्य प्रकटीकरण का प्रकाश बिखेरा। जोर्डन को पार करते समय उन्होंने जिस भाषा का उपयोग किया वह कहलाई "हेब्रू अथवा इब्रानी, जिसका अर्थ है "पार लगाने वाली भाषा" ईश्वर की पुस्तकें तथा पवित्र ग्रंथ उसी भाषा में

प्रकट किये गये तथा काफी समय बीत जाने के पश्चात अरबी प्रकटीकरण की भाषा हो गई।. . .

ध्यान दो कि किस प्रकार भाषा, बोली तथा लेखन–विधाओं में परिवर्तन आ गया है आदम के समय से। सोचो उससे पूर्व कितना अधिक परिवर्तन आया होगा।

इन शब्दों को प्रकट करने में हमारा उद्देश्य यह दर्शाना है कि एक सत्य ईश्वर अपने सर्वोच्च तथा सर्वोत्कृष्ट स्थान में सदैव स्वयं के अतिरिक्त अन्य किसी की अवधारणा तथा प्रशंसा से उच्च रहा है तथा उच्च रहेगा। उसकी सृष्टि सदैव रही है तथा उसकी दैवी महिमा का प्रकटीकरण तथा शाश्वत पवित्रता का दिवानिर्झर स्मरणातीत काल से प्रकट होता रहा है तथा मानवजाति को एकसत्य ईश्वर को बुलाने के लिये निर्देशित रहा है। इनमें से कुछ के नाम लुप्त अथवा उनके जीवन के अभिलेखों का नष्ट हो जाना विश्व में आये अनेक बदलावों तथा उथल–पुथल के कारण हैं।

कुछ पुस्तकों में एक ऐसे जलप्रलय का उल्लेख है जिसने पृथ्वी पर विद्यमान सभी ऐतिहासिक अभिलेख तथा अन्य चीजों को नष्ट कर दिया। इसके अतिरिक्त कई अन्य विभीषिकाओं ने भी अनेक घटनाओं के प्रमाण नष्ट कर दिये हैं। वर्तमान ऐतिहासिक अभिलेखों में भी अनेक अंतर हैं तथा विश्व के लोगों ने अपने अनुसार पृथ्वी के युगों तथा इतिहास को दर्शाया है। कुछ अपने इतिहास को आठ हजार वर्ष प्राचीन तथा कुछ बारह हजार वर्ष प्राचीन बताते हैं। जिस

किसी ने जूक की पुस्तक को पढ़ा है यह सुस्पष्ट हो जायेगा कि किस प्रकार विभिन्न पुस्तकों में दिये गये वर्णन भिन्न हैं।

ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि तू अपने नेत्र महानतम अवतार की ओर केन्द्रित कर तथा इन परस्पर विरोधी कथाओं तथा रिवाजों पर ध्यान न दे।

90. जो कुछ भी स्वर्ग अथवा पृथ्वी पर है, स्वयं में ईश्वर के नामों और गुणों के प्रकटीकरण का प्रमाण है; इतना ही नहीं प्रत्येक अणु में वे चिन्ह समाहित हैं जो महानतम प्रकाश के प्रकटीकरण की मुखर गवाही देते हैं। उस प्रकटीकरण की शक्ति के बगैर कोई जीवित नहीं रह सकता। एक अणु में ज्ञान का प्रकाश कितना दैदीप्यमान है तथा एक बूंद में बुद्धिमत्ता के कितने सागर उमड़ रहे हैं ! कितने उत्तम अंश तक यह मनुष्य के लिये सत्य है कि समस्त सृजित वस्तुओं में से उसे ऐसी महिमा के लिये चुना गया है। उसमें ईश्वर के नामों और गुणों को प्रकट करने की क्षमता इस स्तर तक दी गई है कि जिसे और कोई सृजित वस्तु पार नहीं कर सकती। यह समस्त नाम और गुण मानव को विभूषित कर सकते हैं। जैसा कि ईश्वर ने कहा "मानव मेरा रहस्य तथा मैं मानव का रहस्य हूँ।" स्वर्गिक पुस्तकों तथा पवित्र ग्रंथों में अनेक वाक्यांश हैं जो इस सूक्ष्म तथा उच्च विषय को दर्शाते हैं। "जैसा ईश्वर ने प्रकट किया, हम निश्चित रूप से विश्व में उनको उनके भीतर ही अपने चिन्ह दर्शायेंगे।" पुनः उसने कहा, "और तुम्हारे भीतर भी क्या तब तुम ईश्वर के

चिन्हों को नहीं देखोगे ?" पुनः वह यह प्रकट करता है : "तू उनकी तरह न हो जा जो ईश्वर को भूल जाते हैं और इसलिये, जिन्हें उसने स्वयं को भुलवा दिया है।" वह जो शाश्वत सम्राट है–रहस्यमय मंडप में विचरण करने वाली आत्मायें उस पर न्यौछावर हों–उसने कहा "वह ईश्वर को जान लेता है जो स्वयं को जान लेता है।"

91. इस प्रकटीकरण की सत्यता को सिद्ध करने वाले प्रमाणों में एक यह है कि प्रत्येक युग और ईश–काल में जब कभी भी अदृश्य का महासार अवतार के रूप में प्रकट होगा तब सभी सांसारिक मोह–माया से अनासक्त कुछ अनजाने लोग अवतारत्व के सूर्य और दिव्य मार्गदर्शन के चंद्र से ज्ञान की याचना करेंगे और दिव्य उपस्थिति के निकट जायेंगे। इस कारण से उस समय के धर्माधिकारी और धनाढ्य लोग उनका तिरस्कार करेंगे और उनका उपहास उड़ायेंगे। ऐसे दोषारोपण करने वालों के सम्बन्ध में ईश्वर ने यहाँ तक कहा है, "तब उन लोगों के नेताओं ने कहा, जो विश्वास नहीं करते थे : हम तुममें अपनी तरह ही एक आदमी देखते हैं; और हम किसी को भी तुम्हारा अनुसरण करते नहीं देखते, सिवाय उनके जो छोटे लोग हैं, ना ही हम तुममें अपने से अधिक श्रेष्ठता देखते हैं, तू तो मिथ्याचारी है।" पावन अवतारों पर उन्होंने नुक्ताचीनी की और यह कहकर विरोध किया : "हममें से गिरे हुये लोगों के अतिरिक्त ऐसे किसी व्यक्ति ने तुम्हें नहीं माना है जो ध्यान देने योग्य हैं।" उनका उद्देश्य यह दिखलाना था कि विद्वानों, धनियों और प्रख्यात लोगों में

किसी ने उनमें विश्वास नहीं किया। इस प्रकार के प्रमाणों द्वारा वह उसे मिथ्याचारी सिद्ध करना चाहते थे जो सत्यवचन के अतिरिक्त कुछ और नहीं बोलता।

92. प्रभु की पुस्तक खोल दी गई है और उसकी वाणी मनुष्य को बुला रही है। केवल मुट्ठी भर लोग ही प्रभुधर्म का अनुपालन करने और उसके विकास के लिये इच्छुक हैं। यही कुछ लोग दिव्य अमृत का पान कर सके हैं और पवित्र लोक में निवास करते हैं। इन्हीं को मनुज–पुत्रों के रोग का दोषमुक्त दवा से इलाज कर उद्धार करने की शक्ति प्राप्त है। कोई भी मनुष्य तब तक अमर जीवन प्राप्त नहीं कर सकता जब तक वह इस भव्य, इस अद्‌भुत, इस अमूल्य अवतार के प्रकटीकरण के रहस्य को नहीं समझ लेता।

हे प्रभु के मित्रों ! अपना ध्यान उस प्रभु की वाणी की ओर लगाओ, जिसे दुनिया ने गलत करार दिया है और उसके प्रति दृढ़ रहो जो प्रभुधर्म को उच्चतम शिखर पर ले जाता है। वस्तुतः वह जिसे चाहे उसे अपनी राह पर बुला सकता है। यह वह प्रकटीकरण है जो शक्तिहीनों को शक्ति प्रदान करता है और निर्धनों को धन–सम्पदा से आभूषित करता है।

परम मित्रता और बंधुत्व के साथ तुम परामर्श करो और अपने जीवन के बहुमूल्य दिनों को विश्व के कल्याण और सभी के अनंत स्वामी के धर्म के विकास के लिये समर्पित कर दो। वह मनुष्यों से यह अपेक्षा रखता है कि वे सद्‌मार्ग पर

चलें और जो कुछ भी उनके उच्च स्थान से अवनति का कारण बनता है, उसे त्याग दें।

93. मानव–हृदय एक ऐसा सिंहासन है जिस पर सर्वकृपालु प्रभु का धर्म विराजमान है। इसका प्रमाण उन पवित्र पुस्तकों में मिलता है जो हमने पूर्वकाल में प्रकट किये थे। उनमें से एक कथन यह है : "धरती तथा स्वर्ग मुझे अपने में नहीं समा सकते, अकेला वह हृदय मुझे अपने में रख सकता है, जो मुझमें विश्वास करता है और जो मेरे धर्म के प्रति ईमानदार है।" कितनी बार मानव–हृदय, जो प्रभुप्रकाश को ग्रहण करने वाला है तथा सर्वकृपालु के प्रकटीकरण का उद्गमस्थल है उससे भटक गया है जो उस प्रकाश का स्त्रोत और उस प्रकटीकरण की निर्झरनी है। यह हृदय का भ्रमित होना है जो उसे प्रभु से दूर ले जाता है। किन्तु, जो हृदय उसकी उपस्थिति से भिज्ञ हैं, वे उसके नजदीक हैं और उन्हें प्रभु–सिंहासन के निकट समझना चाहिये।

हमारी इस धारणा से कि सृष्टि की सभी वस्तुयें प्रभु के अवतार के चिन्ह हैं, किसी को यह नहीं समझना चाहिये कि अच्छे और बुरे, पवित्र और कलंकित – सभी प्रभु की दृष्टि में समान हैं। क्षमा, प्रभु ! इसका अर्थ यह भी नहीं कि ईश्वर की तुलना किसी भी स्थिति में मनुष्य से की जा सकती है अथवा किसी भी तरह से उसे अपनी रचना से जोड़कर देखा जा सकता है, गुणगान हो उसके नाम का, उसकी महिमा बढ़े। ऐसी गलती कुछ मूर्खों ने की है। अपनी इच्छाओं तथा

महत्वाकांक्षाओं के भंवर में उलझकर उन्होंने दिव्य एकता का यह अर्थ लगा लिया है कि सभी सृजित वस्तुयें प्रभु के अंश हैं और इस प्रकार उनमें कोई अंतर नहीं है। कुछ लोग तो यहां तक मानने लगे कि ये अंश प्रभु के सहयोगी और साथी हैं। कृपालु प्रभु ! वह वस्तुतः एक और अविभाज्य है। वह अपने सार रूप में एक है, वह अपने गुणों में एक है। उसके नामों में से किसी एक नाम के अवतार की ज्योति ही अपने आप में अद्भुत है। फिर, जब स्वयं उस महाप्रभु का प्रकटीकरण अगर सामने हो तो, सोचो, मानव किस प्रकार आश्चर्यचकित और किंकर्त्तव्यविमूढ़ रह जायेगा...।

सच, प्रभु की एकता में विश्वास रखने वाला वह है जो सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में ईश्वर के दर्शन करता है। ईश्वर जो शाश्वत सत्य है। वह व्यक्ति ईश्वर में विश्वास नहीं रखता जो सृष्टि और स्रष्टा को एक ही स्थान पर ला खड़ा करता है और यह मानता है कि दोनों में कोई विभेद नहीं।

उदाहरण के लिये, प्रभु के प्रकाश के प्रकटीकरण के नाम, उसके सर्वशिक्षक स्वरूप का विचार करो। देखो, कैसे सभी वस्तुओं में उसके प्रकटीकरण के प्रमाण विद्यमान हैं, किस प्रकार सभी प्राणियों का कल्याण उसके ऊपर आश्रित है। यह शिक्षा दो प्रकार की है। एक सार्वभौमिक है। इसका प्रभाव सर्वव्यापी है। इसी कारण प्रभु ने "सभी लोकों का स्वामी' की उपाधि ग्रहण की है। दूसरा उनके बीच सीमित है जो उस नाम की छाया तले हैं, शरणार्थी है।

94. और अब दो ईश्वर के होने के सम्बंध में। सावधान, सावधान, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने स्वामी, ईश्वर के साथ भागीदारिता की ओर बढ़ चलो। वह सदैव अकेला रहा है, बगैर किसी मित्र के, अतुलनीय, भूत और भविष्य में शाश्वत, सभी वस्तुओं से अनासक्त, चिरस्थायी, अपरिवर्तनीय, तथा स्वपरिपूरक ! उसने अपने साम्राज्य में स्वयं के साथ किसी को भागीदार नहीं बनाया है, सलाह के लिये कोई सलाहकार नहीं नियुक्त किया है, न तो कोई उसकी तुलना कर सकता है और ना ही उसकी महिमा की बराबरी। इसका साक्षी ब्रह्माण्ड का प्रत्येक अणु देता है तथा वे उच्चता के निवासी देते हैं जिन्होंने सर्वोत्तम स्थान प्राप्त किया है तथा जिनके नामों का स्मरण महिमा के सिंहासन के समक्ष किया जाता है।

95. यह जान लो कि जो कुछ भी तेरे स्वामी, समस्त मनुष्यों के स्वामी, ईश्वर ने अपनी पुस्तक में आदेश दिया है और जिन कृपाओं का उल्लेख किया है वे कृपायें सीमाविहीन हैं और रहेंगी। इन कृपाओं में सर्वप्रथम ईश्वर द्वारा प्रदत्त कृपा है विवेक का उपहार। इस उपहार का दान देने के पीछे ईश्वर का एकमात्र उद्देश्य था कि उसके प्राणी एकसत्य ईश्वर को जान सकें। उसकी महिमा की जय हो ! यह उपहार मनुष्य को समस्त चीजों में सत्य खोजने की शक्ति देता है, उसे सत्य की राह पर ले जाता है तथा सृष्टि के रहस्यों को खोजने में मदद देता है। दूसरा मुख्य उपहार है दृष्टि का, अपनी बुद्धि को उपयोग में लाने का महत्वपूर्ण उपकरण।

श्रवण, हृदय तथा इसी प्रकार की अन्य इन्द्रियाँ आदि भी इस प्रकार के उपहार हैं जिनसे मानव शरीर को आभूषित किया गया है।

इनमें से प्रत्येक उपहार उस एक सत्य ईश्वर की भव्यता, शक्ति, उच्चता तथा सर्ववशकारी ज्ञान के संशयहीन प्रमाण हैं। स्पर्श इन्द्रियों पर ध्यान दो। किस प्रकार यह शक्ति पूरे मानव शरीर पर फैल गई है। जबकि दृष्टि तथा श्रवण की क्षमतायें निश्चित स्थान पर केन्द्रित हैं, स्पर्श की इन्द्रिय पूरे मानव शरीर को घेरे हुये हैं। ईश्वर की शक्ति महिमावान हो तथा उसकी सम्प्रभुता उच्च है !

यह उपहार मानव में अन्तर्निहित हैं। इन समस्त उपहारों में जो अविनाशी तथा स्वयं ईश्वर से सम्बंधित प्रमुख उपहार है, वह है, दिव्य प्रकटीकरण का उपहार। सृजनकर्ता द्वारा मनुष्य को प्रदत्त प्रत्येक भौतिक अथवा आध्यात्मिक कृपा इस उपहार के अधीन है। यह ईश्वर का सर्वोच्च साक्ष्य है, उसके सत्य का स्पष्टतम प्रमाण, उसकी कृपा का उच्चतम चिन्ह, उसकी सर्वव्यापी दया का प्रतीक, उसकी सर्वप्रिय दूरदर्शिता का प्रमाण, उसकी परिपूर्ण भव्यता का संकेत। जिसने ईश्वर के अवतार को पहचान लिया है उसने ईश्वर के इस महानतम उपहार का अपना भाग इस दिवस में प्राप्त कर लिया है।

अपने ऊपर ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस महान कृपा के लिये ईश्वर को धन्यवाद दो। गुहार लगाओ और कहो : तेरी प्रशंसा हो, हे तू जो समस्त विवेकी हृदयों की अभिलाषा है।

96. इस युग में पृथ्वी के सभी लोगों के अन्दर एक नये जीवन का संचार किया गया है, किन्तु, कोई भी व्यक्ति इसके कारण और उद्देश्य को नहीं देख पा रहा है। पश्चिम के लोगों का विचार करो। किस प्रकार उन्होंने अपने व्यर्थ और तुच्छ प्रयत्नों से अनेक लोगों को मौत के घाट उतार दिया है और आज भी उनकी बलि चढ़ा रहे हैं, अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिये उन्होंने करोड़ों लोगों का खून बहाया है। दूसरी ओर फारस (ईरान) में जहाँ प्रभु का अवतार हुआ है और जिस अवतार के प्रकाश ने सम्पूर्ण धरा को प्रकाशित कर दिया है, वहाँ के लोग भी अविश्वासी और अधर्मी बने बैठे हैं।

ओ मित्रों ! जिन गुणों से तू आभूषित किया गया है, उनके प्रति लापरवाह न बनो, ना ही अपने सौभाग्य का तिरस्कार करो। कुछ लोगों ने मिथ्या कल्पनाओं का जो ताना–बाना बुन रखा है उससे भ्रमित न हो। तुम विवेक के स्वर्ग के नक्षत्र हो, प्रभात की बयार हो, उस मधुर निर्झरनी का जल हो जिस पर अवश्य ही मानव–जीवन आश्रित है, तुम वे अक्षर हो जो पवित्र पुस्तकों में अंकित हैं। अतः, एकता और बंधुत्व की भावना के साथ निष्ठापूर्वक प्रयत्न करो कि तू वह प्राप्त कर सके जो ईश्वर के दिवस के अनुकूल हो। सत्यतः मैं कहता हूँ, संघर्ष और विद्वेष और वह सब कुछ जिसे मानव–मस्तिष्क घृणास्पद समझता है, वह उसके स्थान के लायक नहीं। प्रभुधर्म के प्रसार में अपनी शक्ति केन्द्रित करो। जो कोई भी इस पुकार का उत्तर देने के लायक है, उसे प्रभुधर्म के कार्य में जुट जाने दो। जो असमर्थ हैं, उनका यह

कर्त्तव्य हो जाता है कि ऐसे लोगों को नियुक्त करें जो प्रभुधर्म के कार्य उनके बदले कर सकें। प्रभुधर्म की शक्ति सर्वाधिक शक्तिशाली ढांचे की जड़ को भी हिला चुकी है, दम्भ के ऊंचे पर्वत को धूल में मिला चुकी है और प्रत्येक आत्मा को किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर चुकी है। वह इस भव्य प्रकाश की एक किरण बनने के लिये, इस महानता का सहभागी बनने के लिये कोटि–कोटि जीवन का बलिदान कर देगा, संसार के खजानों को त्यागने के लिये तैयार हो जायेगा।

97. उन संदेहों पर विचार करो जिनसे यहाँ के लोगों को, उन लोगों ने भ्रमित कर रखा है जिन्होंने स्वयं को प्रभु की साझेदारी में खड़ा किया है। वे पूछते हैं, "क्या ताम्बे का सोने में परिवर्तित हो जाना संभव है ?" कहो : हाँ, संभव है। प्रभु की सौगंध! तांबे का सोने में बदलना संभव है। किन्तु रहस्य हमारी पुस्तकों में छिपा है। हम जिसे चाहें उसे इसका ज्ञान करा सकते हैं। जो भी हमारी शक्ति में संदेह करता है उसे अपने स्वामी, प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिये कि वह उन्हें उस रहस्य से अवगत कराये और इसके सत्य के सम्बंध में उसे आश्वस्त करे। ताम्बा सोने में बदला जा सकता है, यह अपने आप में एक प्रमाण है कि सोना भी ताम्बे में बदला जा सकता है। अगर तू उनमें से हो जो इस सत्य को समझ सकते हैं तो समझो। प्रत्येक धातु हर एक दूसरी धातु का घनत्व, रूप और आकार ग्रहण कर सकती है। यह ज्ञान हमारी रहस्यमयी पुस्तक में संकलित है।

98. हे धर्मगुरुओं ! ईश्वर के ग्रंथ को उस ज्ञान की तुला से मत तौलो जो तुम्हारे बीच प्रचलित हैं, क्योंकि यह ग्रंथ स्वयं ही वह त्रुटिहीन तुला है जो मनुष्यों के मध्य स्थापित की गई है। इस परिपूर्ण तुला में, पृथ्वी के निवासियों के पास जो कुछ भी है, तोला जाना चाहिये तथा इसकी तौल का माप इसके स्वयं के मानदंड के अनुसार होना चाहिये। यदि तुम इसे समझ सकते हो तो समझो।

हे धर्मगुरुओं ! तुम्हारे मध्य वह कौन मनुष्य है जो अंतर्दृष्टि में मेरी तुलना कर सके ? वह कहां पाया जायेगा जो वाणी और बुद्धिमत्ता में मेरी बराबरी कर सके ? नहीं सर्वकृपालु ईश्वर की सौगंध ! जो कुछ भी धरती पर है वह नष्ट हो जायेगा। यह है तुम्हारे स्वामी सर्वशक्तिशाली, सर्वप्रिय ईश्वर का मुखड़ा।

हे लोगों ! हमने आदेशित किया है कि समस्त शिक्षा का उच्चतम और अंतिम लक्ष्य होगा उसकी पहचान करना जो समस्त ज्ञान का उद्देश्य है और देखो किस प्रकार तुमने अपनी शिक्षा को वह पर्दा बना लिया है और तुम उससे दूर हो गये हो जो इस प्रकाश का दिवानिर्झर है, जिसके द्वारा प्रत्येक छिपी वस्तु प्रकट कर दी गई है। तुम यदि उस स्त्रोत को खोज सकते जहाँ से इन शब्दों की भव्यता विकीर्णित होती है तो तुम विश्व के लोगों तथा उनकी सम्पत्ति को तज देते तथा इस सर्वाधिक आशीर्वादित सिंहासन की ओर बढ़ चलते।

99. प्रत्येक देश में ईश्वर में मनुष्य के विश्वास की गहनता कम होती जा रही है। इस रोग का उपचार प्रभु की

औषधि के अतिरिक्त अन्य किसी चीज से नहीं किया जा सकता। अनैश्वरवाद के कीटाणु मानव समाज के मुख्य हिस्से को खोखला कर रहे हैं। उसके शक्तिशाली प्रकटीकरण के अमृत के अतिरिक्त मानवजाति का उद्धार और कौन–सी चीज कर सकती है? हे महावैद्य! क्या मनुष्य को इतनी शक्ति प्राप्त है कि किसी भी धातु के छोटे–छोटे टुकड़ों को लेकर स्वर्णशिला बना दे? यह कार्य कठिन है। लेकिन इससे भी कठिनतर काम है शैतान को इंसान बनाना। इस कार्य को पूरा करने की शक्ति हमें दी गई है। ऐसे परिवर्तन की क्षमता रखने वाली शक्ति महौषधि के अमृत में ही हो सकती है। इस महान सृजनकारी परिवर्तन के लिये भगवद्वाणी की शक्ति ही क्षमतायुक्त हो सकती है।

100. तुम्हारे लिये और शाश्वत सत्य के अनुयायियों के लिये यह आवश्यक है कि सभी मनुष्यों को ऐसी शिक्षा दो कि वे सांसारिक वस्तुओं से अनासक्त रह सकें और बुराइयों से स्वयं को कलुषित न होने दें ताकि सर्वकृपालु के परिधान की सुरभि उन सब से मिल सके जो प्रभु को प्रेम करते हैं।

वे, जो धन–सम्पत्ति के स्वामी हैं, अवश्य ही निर्धनों को समुचित आदर दें, क्योंकि उन निर्धनों को प्रभु का विशेष आदर और प्रेम मिलता है जो अडिग रूप से धैर्यशील होते हैं। मेरे जीवन की सौगंध! इस सम्मान के समान अन्य कोई सम्मान नहीं। धन्य हैं वे निर्धन जो अपने दुःखों को धैर्यपूर्वक चुपचाप सहन कर लेते हैं और अपनी पीड़ाओं को छुपा लेते हैं। कल्याण हो उस धनी व्यक्ति का जो अपनी धन–सम्पदा

आवश्यकताग्रस्त लोगों के ऊपर न्योछावर कर देता है और स्वयं से अधिक प्रश्रय उनको देता है जो आवश्यकताग्रस्त हैं।

हे प्रभु ! निर्धन लोग अपने को उद्यमशील बना सकें और अपने जीवन निर्वाह के साधन जुटा सकें, ऐसा वरदान दो। इस कर्त्तव्य के पालन करने का आदेश इस सर्वमहान प्रकटीकरण की पुस्तकों में प्रत्येक व्यक्ति के लिये दिया गया है। प्रभु की दृष्टि में यह एक अच्छा कार्य है। जो कोई भी इस कर्त्तव्य का पालन करता है, अदृश्य प्रभु की सहायता उसे मिलती है। अपनी कृपा से चाहे वह जिसे धनवान बना सकता है। उसका आधिपत्य, वस्तुतः सभी पदार्थों पर है।

इस युग में मनुष्य का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह सर्वोपरि नाम का स्मरण करे, उसके प्रति दृढ़ रहे और समस्त मानवजाति की एकता स्थापित करे। उस परमेश्वर के अतिरिक्त और कोई स्थान नहीं जहाँ शरण प्राप्त की जा सके। यदि कोई मनुष्य ऐसे शब्द कहे जो लोगों को प्रभु के असीम सागर के किनारे से दूर ले जाये और प्रभु के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करा दे तो ऐसा मनुष्य, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, सम्पूर्ण विश्व द्वारा निन्दा का पात्र बनेगा और स्वयं को सर्वकृपालु की मधुर सुरभि से वंचित रखेगा।

कहो : सुहृदय लोगों ! अपने निर्णय में न्याय का अनुपालन करो। जो अपने निर्णय में न्यायसंगत नहीं होता वह उन गुणों से वंचित हो जाता है जो उसे मनुष्य का स्थान

प्रदान करते हैं। अनंत सत्य प्रभु सभी के हृदय के अन्दर छिपी बातों को जानता है। उसकी सहनशीलता के कारण ही उसके प्राणी अत्यधिक साहसी हो गये हैं। जब तक निर्धारित समय नहीं आता तब तक वह अपने रहस्य पर से पर्दा नहीं उठायेगा।

हमने लोगों को स्वेच्छापूर्ण आचरण करने से मना कर दिया है, ताकि वे उसे पहचानने में समर्थ हो सकें जो समस्त ज्ञान का उद्‌गम और उद्देश्य है और उसे स्वीकारें जो ईश्वर की इच्छा है। देखो, किस प्रकार उन्होंने अपनी कोरी कल्पनाओं में अपने को उलझा रखा है। मेरे जीवन की सौगंध ! वे अपनी ही करतूतों के शिकार बने हैं, फिर भी वे इसे समझ नहीं पाते। व्यर्थ और अलाभदायक बातों में उलझे रहते हैं और फिर भी वे उसे जान नहीं पाते।

101. प्रत्येक दिव्य पुस्तक के प्रकटीकरण, दिव्य रूप से प्रकटित प्रत्येक पद का उद्देश्य सभी मनुष्यों को सच्चाई और सद्‌मार्ग की ओर ले जाना है ताकि उनके बीच शांति और सद्‌भावना सुदृढ़ रूप से स्थापित हो सके। प्रभु की दृष्टि में वह सब मान्य है, जो मनुष्यों के हृदयों को आश्वस्त करता है, जो उनके स्थान को ऊंचा उठाता है अथवा उनके संतोष का कारण बनता है। कितना उच्च है मनुष्य का स्थान अगर वह इस सौभाग्य को प्राप्त करना चाहे तो प्राप्त कर सकता है। वहीं दूसरी ओर, वैसी निम्न स्थिति में मनुष्य का पतन हो सकता है जिसे निम्नतम प्राणी भी नहीं पा सकते। ओ मित्रों !

इस अवसर का लाभ उठाओ, जो तुम्हें इस युग में मिला है और उस प्रभु की स्वच्छंद कृपा से अपने को वंचित न रखो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुममें से प्रत्येक को इस योग्य बनाये कि इस युग में तुम पवित्र और शुद्ध कर्मों से अपने आपको आभूषित कर सको। वस्तुतः, वह वही करता है जो वह चाहता है।

106. सर्वज्ञाता चिकित्सक ने मानवजाति की नाड़ी पर अपनी उंगली रख दी है। वह रोग का लक्षण पहचानता है और अपने दोषमुक्त विवेक के द्वारा उपचार देता है। प्रत्येक युग की अपनी समस्या होती है और प्रत्येक आत्मा की अपनी विशेष आकांक्षा। विश्व को आज जिस औषधि की आवश्यकता है, वही औषधि आने वाले युग के लिये भी आवश्यक हो, यह जरूरी नहीं। अतः जिस युग में तुम रहते हो उस युग की आवश्यकताओं से जुड़े रहो और अपने क्रियाकलाप उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये केन्द्रित करो।

हम यह अच्छी तरह देख सकते हैं कि किस प्रकार सम्पूर्ण मानवजाति को कैसे घोर, अवर्णनीय दुःख ने घेर लिया है। भ्रमित और बेचैन होकर इसे रोगशय्या पर पड़ा हम देखते हैं। जो स्वदम्भ के नशे में चूर हैं उन्होंने स्वयं और दिव्य चिकित्सक के बीच एक दीवार खड़ी कर रखी है। देखो, उन्होंने किस प्रकार स्वयं को और दूसरों को अपने नुस्खों से बहका रखा है। न तो वे रोग का कारण जान सकते हैं और न ही उन्हें औषधि का ज्ञान है। उन्होंने सीधे को कुटिल और मित्र को दुश्मन समझ लिया है।

107. वह जो तुम्हारा स्वामी है, सर्वकृपालु है, सम्पूर्ण मानवजाति को एक आत्मा और एक शरीर की तरह देखना चाहता है। अतः इस युग में, जो अन्य सभी युगों से श्रेष्ठ है, प्रभु की कृपा तथा दया प्राप्त करने की तुम शीघ्रता करो। प्रभु के लिये जो मनुष्य अपना सर्वस्व त्याग देता है, उसे कितना महान वरदान प्राप्त होता है। प्रभु साक्षी है कि ऐसा मनुष्य प्रभु का एक सच्चा भक्त है। वह वस्तुतः प्रभु के आशीर्वाद प्राप्त लोगों में एक है।

108. ओ लोगों ! हमने तुम्हारे लिये एक समय निर्धारित कर रखा है। उस निर्धारित समय पर अगर प्रभु की ओर अभिमुख होने में तुम विफल होते हो तो वह अवश्य ही तुम्हारे प्रति कड़ा रुख अपनायेगा और हर दिशा से तुम्हें दुःख और यातनायें देगा। उसका दण्ड यथार्थरूपेण बड़ा कठोर है।

109. सभी मनुष्यों का जन्म सदा विकसित हो रही सभ्यता को आगे ले जाने के लिये हुआ है। मेरा साक्षी सर्वशक्तिशाली प्रभु है। जंगली जानवरों की तरह व्यवहार करना मनुष्यों को शोभा नहीं देता। जो गुण उसके सम्मान के योग्य हैं वे हैं सहनशीलता, दया, प्रेम, सहानुभूति और धरती के सभी लोगों और जातियों के प्रति प्रेममयी दयालुता । कहो : हे मित्रों ! प्रभुकृपा की इस पवित्र निर्झरनी से तुम अपना भाग ग्रहण करो। मेरे नाम पर अन्य मनुष्यों को भी इस जल का पान करने दो ताकि हर देश में मनुष्यों के नेता उस उद्देश्य को समझ सकें, जिसके लिये अनंत सत्य प्रकट किया गया है और उन कारणों को जान सकें, जिनके लिये उनका सृजन हुआ है।

110. प्रभु का अवतार कहता है, "हे मनुपुत्रों ! प्रभु की ज्योति और उसके धर्म का मूल उद्देश्य है मानव के हितों की रक्षा और मानवजाति के बीच एकता की भावना को बढ़ाना, उनके बीच प्रेम तथा बंधुत्व की भावना को प्रोत्साहित करना है। इसे संघर्ष और विद्वेष, घृणा तथा शत्रुता का कारण न बनने दो। यह एक सीधा पथ है, एक सुगम और सुव्यवस्थित आधार है। इस आधार पर जो कुछ भी स्थापित किया जायेगा उसे परिवर्तन और संयोगवश कमजोर नहीं किया जा सकता है, न ही असंख्य सदियों की क्रांति इसके ढांचे को कमजोर कर सकती है। हम आशा करते हैं कि विश्व के धार्मिक नेता और शासक एक होकर इस युग के सुधार और इसके सौभाग्य की पुनर्स्थापना के लिये उठ खड़े होंगे। विश्व की आवश्यकताओं पर गहराई से विचार कर उन्हें आपस में परामर्श करने दो और तब, रोगों से बुरी तरह आक्रांत इस विश्व के लिये उपयुक्त औषधि से उपचार करने दो जो सत्ता में हैं उनका परम कर्त्तव्य यह है कि अपने सभी कार्यों में वे संयम बरतें। संयम की सीमाओं से जो कुछ भी अधिक होगा उसका लाभदायक प्रभाव नहीं होगा। उदाहरण के लिये, स्वतंत्रता और सभ्यता जैसे विषयों पर विचार करो। विद्वान् लोग, चाहे कितनी प्रशंसा करें, इनका अतिरेक हानिकारक प्रभाव ही डालेगा।

प्रत्येक दिशा से निराशा की आंधी बह रही है और संघर्ष, जो मानवजाति को विभाजित और पीड़ित करते हैं, प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। बढ़ रहे आलोड़न और भ्रम के निशान अब

देखे जा सकते हैं, यहां तक कि वर्तमान व्यवस्था बुरी तरह से त्रुटिपूर्ण लगती है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ, उसकी कीर्ति बढ़े, कि वह धरती पर सोये हुये लोगों को जगाये, ऐसा वरदान दे कि उनके आचरण के उद्देश्य उनके लिये लाभदायक हों और उन्हें अपना उपयुक्त स्थान प्राप्त करने में प्रभु उनकी सहायता करे।

111. हे धरती के संघर्षरत राष्ट्रों और जातियों ! एकता की ओर अपनी दृष्टि करो और इसका प्रकाश अपने ऊपर चमकने दो। तुम एक साथ मिलो और ईश्वर के लिये, उन सब को जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प लो जो तुम्हारे बीच संघर्ष और विरोध का कारण बनता हो। तब ही महानतम प्रकाश की ज्योति सारे विश्व को प्रकाशित करेगी, तब इसके निवासी एक नगर के नागरिक और एक ही साम्राज्य के निवासी हो जायेंगे। इस दुःखी जन की, अपने प्रारंभिक काल से ही, यह इच्छा रही है और इस इच्छा के अतिरिक्त और कोई दूसरी इच्छा भविष्य में भी नहीं रहेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि मनुष्य, चाहे किसी भी नस्ल अथवा धर्म का क्यों न हो, अपनी प्रेरणा एक ही स्वर्गिक स्त्रोत से प्राप्त करता है और एक ही प्रभु के अधीन होता है। जिन विधानों के अधीन वह होता है उनमें अंतर का कारण उस युग की आवश्यकताओं और परिस्थितियों को माना जाना चाहिये जिसमें उन्हें प्रकट किया जाता है। सभी विधान ईश्वर द्वारा आदेशित हैं और उसकी ही इच्छा तथा उद्देश्य के प्रतिबिम्ब हैं, सिवाय कुछ के जो मानव–विकृतियों के कारण प्रतिकूल प्रतीत होते हैं। उठो

और अपनी आस्था की शक्ति के सहारे अपनी व्यर्थ कल्पनाओं के उन देवों को टुकड़े–टुकड़े कर दो जो तुम्हारे बीच फूट के बीज बोते हों। केवल उन पर ध्यान दो जो तुम्हें पास लाते हों और एकता के सूत्र से बांधते हों। यह, वस्तुतः पवित्र मातृग्रंथ का सर्वोच्च शब्द है। इसका प्रमाण भव्यवाणी ने अपने ज्योतिलोक से दिया है।

112. उन विघ्नों को देखो जो एक लम्बे समय से विश्व को दुःखी करते आये हैं और उन व्याकुलताओं पर विचार करो जिन्होंने राष्ट्रों को जकड़ रखा है। यह या तो युद्ध के झंझावात से झकझोरा गया है अथवा अदृश्य विपत्तियों ने इसे सहसा क्षत–विक्षत कर दिया है। यद्यपि विश्व दुःख और निराशा से घिरा है, फिर भी किसी मनुष्य ने एक पल के लिये भी इस पर विचार नहीं किया कि इसके कारण अथवा स्त्रोत क्या हो सकते हैं। जब कभी भी सच्चे परामर्शदाता ने कोई सलाह दी है तो लोगों ने इसे शैतानी का प्रपंच कह कर उसके दावे को अस्वीकार कर दिया। ऐसा व्यवहार कितना पतनशील और भ्रमित है। ऐसे कोई भी दो व्यक्ति नहीं मिलेंगे जिन्हें बाह्य तथा आन्तरिक रूप से एक कहा जाये। असहमति और विद्वेष के प्रमाण सभी जगह स्पष्ट हैं, जबकि उनका जन्म परस्पर प्रेम और एकता के लिये हुआ है। प्रभुअवतार कहता है : "हे प्रियजनों ! एकता का मंडपवितान चतुर्दिक फैला दिया गया है, तुम एक दूसरे को अपरिचितों की भांति न समझो। तुम एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाखा की पत्तियाँ हो।" हम आशा करते हैं कि सम्पूर्ण विश्व

न्याय की ज्योति से प्रकाशित होकर अन्याय से मुक्ति प्राप्त करेगा। अगर इस धरती के शासक और सम्राट, जो प्रभु की शक्ति के प्रतीक हैं, उठ खड़े हों और इस बात की दृढ़ प्रतिज्ञा कर लें कि वे वही करेंगे जो सम्पूर्ण मानवता के सर्वोच्च हितों का विकास करेगा, तब निश्चित रूप से मानवजाति के बीच न्याय का शासन स्थापित हो सकेगा और सम्पूर्ण विश्व पर इसका प्रकाश आच्छादित हो जायेगा। प्रभु अवतार ने कहा है : "विश्व–व्यवस्था और स्थायित्व का ढांचा पुरस्कार और दण्ड के दो स्तम्भों पर खड़ा है और रहेगा"

115. हे एकसत्य प्रभु के प्रेमियों ! अपने संकुचित विचारों और भ्रष्ट इच्छाओं से दूर रहो और प्रभुलोक के विस्तृत साम्राज्य में पदार्पण करो, त्याग और पावनता के चारागाहों में विचरण करो ताकि तुम्हारे सद्कर्मों की सुरभि प्रभु की अनन्त ज्योति के महासागर तक समस्त मानवजाति को ले जाये। अपनी चिन्ता त्याग दो और सांसारिक कार्यों में लिप्त मत रहो अथवा जो इस संसार के तथाकथित नायक हैं उनके कार्यों में मत उलझो।

प्रभु ने जो अपने लिये सुरक्षित रख छोड़े हैं वे हैं मानव–हृदयों के नगर और इस युग में इन नगरों की कुंजी प्रभु के प्रेमीजन हैं। हे प्रभु! ऐसा वरदान दो कि वे सब प्रभु के महानाम की सहायता से इन नगरों के द्वार खोल सकें। इसी का अर्थ है एक सत्य प्रभु की सहायता–एक ऐसा विषय जिसकी चर्चा दिव्य लेखनी ने अपने सभी ग्रंथों और पातियों में की है।

हे धाबी ! उस महान वैभव की वाणी कहती है : अपनी सौगंध, जो सत्यवचन बोलता है ! इस सर्वशक्तिशाली प्रकटीकरण में अतीत के सभी प्रकटीकरणों ने अपनी सर्वोच्च सम्पूर्णता पा ली है। इस प्रकटीकरण के बाद अगर किसी अन्य प्रकटीकरण का दावा कोई करता है तो वह मिथ्यावादी है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह अनुकम्पापूर्वक उसे वापस लेने में उसकी सहायता करें और ऐसे दावे का खंडन करें। अगर वह पश्चाताप करे तो निश्चित रूप से ईश्वर उसे क्षमा कर देंगे। फिर भी, अगर वह अपनी गलती पर अड़ा रहे तो निश्चित रूप से ईश्वर ऐसे व्यक्ति को भेजेंगे जो उससे निर्दयतापूर्ण व्यवहार करेगा। ईश्वर सर्वशक्तिशाली है, सर्वसम्पन्न है !

अपने न्याय की सौंगध! यह धर्म महान, अत्यन्त महान है। यह युग एक शक्तिशाली युग है, इतना शक्तिशाली जिसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। वह मनुष्य धन्य है, जिसने अपना सर्वस्व त्याग दिया है और स्वर्गों तथा पृथ्वी को प्रकाशित करने वाले प्रभु पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

117. वह समय अवश्य आयेगा जब व्यापक रूप से यह महसूस किया जायेगा कि विश्व के लोगों का एक विशाल सम्मेलन आयोजित किया जाये। धरती के शासक और सम्राट इसमें अवश्य ही उपस्थित होंगे और इसकी कार्यवाहियों में हिस्सा लेते हुये उन उपायों पर विचार करेंगे, जिनसे मनुष्यों के बीच विश्व की महान शांति की नींव पड़ेगी। इस प्रकार की शांति की शर्त होगी कि विश्व की सभी महान

शक्तियाँ पारस्परिक विचार–विमर्श कर इस नतीजे पर पहुंचे कि धरती के लोगों के बीच शांति और सुव्यवस्था के निमित्त आपस में पूरी तरह से मिलकर रहेंगे। अगर कोई राजा किसी अन्य के विरुद्ध हथियार उठायेगा तो सभी एकजुट होकर उसे रोकेंगे। अगर ऐसा हो जाये तो राष्ट्रों को आन्तरिक सुरक्षा के अतिरिक्त अन्य किसी कार्य के लिये अस्त्र–शस्त्र की आवश्यकता नहीं रहेगी। यह प्रत्येक व्यक्ति, सरकार और राष्ट्र की शांति और सुव्यवस्था को सुनिश्चित करेगा। हम आशा करते हैं कि ईश्वर के कृपालु और शक्तिशाली नाम के दर्पण, ये शासक इस उच्च स्थान को प्राप्त करेंगे और मानवजाति को अत्याचार के घातों से सुरक्षित रखेंगे। वह दिन नजदीक आ रहा है जब धरती के सभी राष्ट्र एक विश्वव्यापी भाषा और एक लिपि को अपना लेंगे। जब यह हासिल कर लिया जाता है तो किसी भी नगर में कोई मनुष्य क्यों न चला जाये, उसे लगेगा कि वह अपने घर में प्रवेश कर रहा हो। ऐसा होना अनिवार्य और अति आवश्यक है। प्रत्येक विवेकी तथा ज्ञानी मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह उसे व्यवहारिक रूप प्रदान करे और अपने जीवन में उतारे जो लिखा गया है। वह व्यक्ति वस्तुतः, सच्चे अर्थों में मानव है जो सम्पूर्ण मानवजाति की सेवा के लिये समर्पित रहता है। प्रभु का अवतार कहता है : वह व्यक्ति सुखी तथा प्रसन्न है जो मानवजाति के सर्वोच्च हितों के विकास के लिये उठ खड़ा होता है। एक अन्य स्थान पर प्रभु अवतार ने घोषणा की है : उसके लिये यह गर्व की कोई बात नहीं जो अपने देश को प्यार करता है, बल्कि गर्व की बात उसके लिये है जो सम्पूर्ण

विश्व को प्रेम करता है। सम्पूर्ण पृथ्वी एक देश है और समस्त मानव इसके नागरिक।

118. अपने मतभेदों को दूर करो और अस्त्र–शस्त्रों को कम करो ताकि तुम्हारा आर्थिक भार कम हो जाये और तुम्हारे मस्तिष्क और हृदय को शांति प्राप्त हो सके। उन संघर्षों को खत्म करो जो तुम्हें अलग करते हैं और तब तुम्हें शस्त्रों की आवश्यकता नहीं होगी, सिवाय उनके जिनकी जरूरत तुम्हें अपने नगरों और सीमाओं की सुरक्षा के लिये हो। ईश्वर से डरो और संयम की सीमाओं को न तोड़ो। अपनी गिनती पथभ्रष्टों में न कराओ।

तुम यह जान लो कि तुम्हारे बीच जो निर्धन हैं वे प्रभु की धरोहर हैं। देखो, कहीं तुम उनके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार न कर दो और अत्याचारी न बन बैठो। तुम्हें अपने कर्मों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करने के लिये कहा जायेगा जब न्याय की तुला निर्धारित की जायेगी, तब प्रत्येक व्यक्ति को जो देय है वह दिया जायेगा, जब सभी मनुष्यों के कर्म मापे जायेंगे, चाहे वह अमीर हो या गरीब।

अगर तुम इन परामर्शों की ओर ध्यान नहीं दोगे, जो इस पत्र में अद्वितीय और सुस्पष्ट भाषा में हमने प्रकटित किये हैं तो चारों ओर से तुम्हें दिव्य दण्ड प्रताड़ित करेंगे और तुम्हारे विरुद्ध उसका न्याय होगा। उस दिन तुम्हारे अन्दर उसके विरोध की शक्ति नहीं होगी और तब तुम अपनी शक्तिहीनता समझ पाओगे।

119. हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह धरती पर शांति की स्थापना में सम्राटों को सहायता प्रदान करें। वस्तुतः, वह वही करता है जो उसकी इच्छा होती है। हे धरती के सम्राटो! हम देखते हैं कि तुम हर साल अपने खर्च बढ़ाते चले जा रहे हो। यह पूरी तरह अन्याय है। इस प्रताड़ित की आहों और आंसुओं का भय खाओ और अपनी जनता पर अत्यधिक भार न डालो। अपने महलों को सजाने–संवारने के लिये उन्हें न लूटो। उन्हें वही दो जो तुम स्वयं चाहते हो। इस तरह हम तुम्हें परामर्श देते हैं जो तुम्हें लाभ पहुँचा सकेगा, अगर तुम समझ सकते हो तो समझो। सावधान, कहीं तुम्हारे नियम प्रभु के विधान का उल्लंघन न कर बैठें और अपने संरक्षण में रहने वालों को कहीं तुम लुटेरों के हवाले न कर दो। उन्हीं के द्वारा तुम शासन करते हो, उन्हीं के साधनों पर तुम जीवित रहते हो, उन्हीं की सहायता से तुम विजय प्राप्त करते हो। फिर भी, तुम कितनी घृणा भरी दृष्टि से उन्हें देखते हो। आश्चर्य! घोर आश्चर्य!!

अब, चूंकि तुमने सर्व महान शांति को नकार दिया है, लघु शांति की स्थापना तो करो, ताकि तुम कुछ हद तक अपनी और अपने आश्रितों की अवस्था सुधार सको।

हे धरती के शासको ! अपने बीच मेल–मिलाप बढ़ाओ ताकि तुम्हें अपने क्षेत्र और साम्राज्य की सुरक्षा के अतिरिक्त अन्य किसी काम के लिये शस्त्रों की जरूरत नहीं पड़े। सावधान! कहीं तुम सर्वज्ञ, सर्वनिष्ठ प्रभु के परामर्श का असम्मान न कर बैठो।

हे धरती के सम्राटो ! एक हो जाओ, क्योंकि इससे ही तुम्हारे बीच फूट के तूफान शांत होंगे और तुम्हारी प्रजा विश्रांति का अनुभव करेगी, अगर तुम समझ सकते हो तो समझो। अगर तुम में से कोई किसी दूसरे के विरुद्ध हथियार उठाता है तो तुम सभी उसके विरुद्ध उठ खड़े हो। यह कुछ और नहीं बल्कि सच्चा न्याय है।

120. हे प्रत्येक देश में मानवजाति के निर्वाचित प्रतिनिधियों! तुम मिल–बैठकर परामर्श करो और अपना ध्यान केवल उसी पर केन्द्रित करो जो मानवजाति के कल्याण, उसकी अवस्था में सुधार के लिये हो; अगर तुम उनमें से हो जो सूक्ष्मता से विचार करते हैं। विश्व को मानव–शरीर की भांति मानो। अपने निर्माण के समय यह संसार भी पावन और पूर्ण था किन्तु कालांतर में विभिन्न कारणों से यह रोगग्रस्त हो गया। एक दिन के लिये भी इसे विश्रांति नहीं मिली। इसका रोग बढ़ता गया, क्योंकि यह ऐसे नीम–हकीमों के हाथों पड़ गया, जिन्होंने स्वेच्छा को सर्वोपरि समझा और अधम राह को स्वीकारा और अगर यदा–कदा इस शरीर रूपी संसार का कोई एक अंग किसी सुयोग्य चिकित्सक की देख–रेख के कारण रोगमुक्त भी हुआ तो बाकी पहले की ही तरह रोगग्रस्त रहे। सर्वबुद्धियुक्त, सर्वज्ञाता ऐसी सूचना तुम्हें देता है।

हम इसे देखते हैं कि वर्तमान युग में अभिमान के नशे में चूर शासक इतने अंधे हो गये हैं कि न तो वे अपनी भलाई देख पाते हैं और न ही इस अलौकिक प्रकटीकरण को समझ पाते हैं और जब कभी भी कोई इसकी अवस्था में सुधार लाना

चाहता है तो उसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसका स्वार्थ ही निहित होता है। इस उद्देश्य की अयोग्यता उसकी शक्तियों को इतना सीमित कर देती है कि वह रोग को ठीक करने की क्षमता नहीं रखती।

उस स्वामी ने सम्पूर्ण विश्व के सभी रोगों की सार्वभौम दवा जो दी है वह है एक विश्वव्यापी धर्म के लिये सभी लोगों के बीच एकता। ऐसी दवा कोई सर्वशक्तिशाली रोग विशेषज्ञ ही दे सकता है। वस्तुतः, यही सत्य है और इसके अतिरिक्त अन्य सब झूठ है।

कहो : तुम्हारे लिये कोई शरण नहीं, कोई ऐसा आश्रय नहीं जहां तुम उठकर भाग सको। इस युग में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो तुम्हें सुरक्षा या संरक्षण प्रदान कर सके, जो तुम्हें प्रभु के रोष से बचा सके, जब तक कि तुम उसके प्रकटीकरण की शरण में नहीं आ जाते।

122. मनुष्य सर्वगुणसम्पन्न है। समुचित शिक्षा के अभाव ने ही उसे अपने अंतर्निहित बौद्धिक सम्पदा से वंचित कर दिया है। प्रभु के मुख से एक शब्द निकला और मनुष्य अस्तित्व में आया। दूसरा शब्द निकला और उसने अपनी शिक्षा के स्त्रोत को पहचाना और एक अन्य शब्द के माध्यम से उसका स्थान और भाग्य सुनिश्चित हुआ। प्रभु का अवतार कहता है : मनुष्य को बहुमूल्य रत्नों से भरी एक खान के समान समझो। केवल शिक्षा ही इसके कोषों को उजागर कर सकती है। यदि कोई व्यक्ति उस पर विचार करे जो प्रभु की

इच्छा द्वारा भेजे गये ग्रंथों में लिखा हुआ है तो वह तुरंत पहचान लेगा कि उसका उद्देश्य यह है कि सभी मनुष्यों को एक आत्मा के समान मानना चाहिये, ताकि इन शब्दों की छाप सबके हृदय पर अंकित हो जाये कि "साम्राज्य प्रभु का है" और दिव्य दया, अनुकम्पा एवं कृपा का प्रकाश सम्पूर्ण मानवजाति पर छा जाये। उस एक सत्य प्रभु की कीर्ति बढ़े ! उसने स्वयं के लिये कुछ भी नहीं चाहा है। मनुष्य की मित्रता से उसे कोई लाभ नहीं होगा, न ही उसकी दुष्टता उसे कोई हानि पहुंचा सकती है। दिव्य वाणी लगातार यह पुकार–पुकार कर कह रही है "सभी वस्तुओं को मैंने तुम्हारे लिये बनाया है और तुम्हें भी, तुम्हारे स्वयं के लिये।" अगर इस समय के विद्वान तथा सांसारिक रूप से विवेकी जन सम्पूर्ण मानवजाति को प्रेम तथा बंधुत्व की सुरभि का रसास्वादन करने देते तो प्रत्येक समझदार व्यक्ति सच्ची स्वंतत्रता का अर्थ समझ सकता और शांति तथा सुव्यवस्था के रहस्य को जान पाता। अगर धरती के लोग इस स्थान को प्राप्त कर लें और इसके प्रकाश से प्रकाशित हो जायें तो उनके विषय में यह कहा जा सकता है "तुम इनमें खाई और ऊंचे उठ रहे पर्वतों को नहीं देखोगे।"

123. वो पीढ़ियाँ जो तुम्हारे पहले गुजर गईं, कहाँ गईं ? और वह वृत्त जिनके गिर्द धरती की सुन्दरतम वस्तुयें घूमा करती थीं, कहां लुप्त हो गया ? हे लोगों ! उनके उदाहरण से शिक्षा ग्रहण करो और उनमें न बनो जो नष्ट हो गये, जिनका नाम–ओ–निशान नहीं बचा।

तुम अपने लिये ऐसे भवनों का निर्माण करो, जिन्हें वर्षा और बाढ़ नष्ट न कर सकें और जो तुम्हें दुर्भाग्यों की आंधी से बचा सके। यह उसका आदेश है जिसके साथ विश्व ने अत्याचार किया है, उसे गलत ठहराया है और जिसे विश्व भूल बैठा है।

125. हे बंधुवर ! जब कोई विश्वासी प्रभुपथ पर प्रयाण करने का निश्चय कर ले तो सबसे पहले उसे प्रभु के रहस्यों के उद्‌गमस्थल, अपने हृदय को निर्मल कर लेना चाहिये। और मानवीय ज्ञान के दम्भ और शैतानी प्रवृत्तियों एवं कामनाओं की धुंध फैलाने वाली धूल झाड़ लेनी चाहिये। वह अपने हृदय को अवश्य ही शुद्ध कर ले, जो प्रभुप्रेम का प्रासाद है। उसे अपनी आत्मा को सांसारिक मोह–माया से अलग कर लेना चाहिये। उसे अपना हृदय इतना पवित्र बना लेना चाहिए कि उसमें लौकिक प्रेम तथा घृणा का कोई भी अवशेष न बचे। अन्यथा, प्रेम उसे गलत मार्ग का अंधानुकरण करने की ओर प्रवृत्त करेगा और घृणा उसे सत्यमार्ग से अलग कर देगी। तू स्वयं ही देख सकता है कि इस युग में ऐसे ही प्रेम तथा घृणा के कारण अधिकांश लोग अनन्त सुख के दर्शन से वंचित रह जाते हैं, वे दिव्य अवतारों और मार्गदर्शकों के रहस्य को नहीं समझ पाते हैं और पथभ्रष्ट होकर इधर–उधर घूमते रहते हैं।

जिज्ञासु को सदैव प्रभु में विश्वास रखना चाहिये, संसार के लोगों से मोह त्याग कर, धूल–सरीखे संसार से अनासक्त होकर, स्वामियों के स्वामी से प्रेम करना चाहिये। उसे कभी भी अपने को दूसरे से बड़ा नहीं समझना चाहिये। उसे अपने

हृदयपटल से मिथ्याभिमान और दम्भ के हर निशान को मिटा देना चाहिये, उसे धैर्य और संतोष से काम लेना चाहिए, शांत रहना चाहिए और अनर्गल वार्तालाप से दूर रहना चाहिये। जिह्वा एक सुलगते हुए अंगारे की तरह है और अनर्गल वार्तालाप घातक विष है। भौतिक अग्नि शरीर को ही जलाती है, जबकि जिह्वा रूपी अग्नि हृदय और आत्मा, दोनों को जलाकर राख कर देती है। पहली अग्नि की शक्ति कुछ समय के लिये ही प्रभावकारी होती है, जबकि दूसरी अग्नि का प्रभाव सदियों तक होता है।

सच्चे जिज्ञासु को पीठ पीछे की गई बुराई को भी एक दुःखद त्रुटि समझना चाहिये और इसके प्रभाव से अपने को अलग रखना चाहिए, क्योंकि पीठ पीछे बुराई करने से हृदय का दीप बुझ जाता है और आत्मा का प्रकाश भी जाता रहता है। उसे थोड़े में संतोष करना चाहिये और अनुचित इच्छा–आकांक्षाओं से मुक्त रहना चाहिये। उसे सत्संग करना चाहिये तथा अभिमानी और सांसारिक लिप्सा के पुतलों की संगत से दूर रहना चाहिये। प्रत्येक प्रातः उसे प्रभु–भजन करना चाहिये तथा हृदय की सम्पूर्ण आस्था के साथ प्रभु को प्राप्त करने का यत्न करना चाहिये। उसे अपने सभी भ्रमपूर्ण विचारों को प्रभुस्मरण की अग्नि में स्वाहा कर देना चाहिये। उसे निर्धनों की सहायता करनी चाहिये। उसे पशुओं के प्रति दया रखनी चाहिये। उसे अपने प्रिय प्रभु के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने में हिचकना नहीं चाहिये तथा कुमार्गियों की मिथ्या बातों में पड़कर कभी भी सत्यमार्ग से विमुख नहीं

होना चाहिए। दूसरों के साथ उसे वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिये जो वह स्वयं अपने साथ किसी दूसरे द्वारा नहीं चाहता है। उसे ऐसा वायदा भी नहीं करना चाहिए जिसे वह पूरा न कर सकता हो। उसे पापियों से दूर रहना चाहिये और उनके पापों को प्रभु क्षमा कर दें, ऐसी प्रार्थना करनी चाहिये। उसे पापियों को क्षमादान दे देना चाहिए तथा उसकी दयनीय अवस्था के कारण उससे घृणा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कोई नहीं जानता कि स्वयं उसकी क्या अवस्था होगी। अनेक पापियों ने अपने अंतिम समय में प्रभु का विश्वास प्राप्त किया है और उसके अनन्त अमृत का पान करके देवलोक को प्राप्त हुए हैं। और कितनी बार ऐसा हुआ है कि एक परम भक्त अपने देह–विसर्जन के समय फिसल गया है और नरकाग्नि का ग्रास बना है।

इन तर्कसंगत और शक्तिसंपन्न उपदेशों से अवगत करा देने का हमारा उद्देश्य जिज्ञासु को यह बताना है कि उसे प्रभु के अतिरिक्त अन्य सभी सांसारिक वस्तुओं को नश्वर मानकर उस प्रभु में ही ध्यान लगाना चाहिये जो महाशून्य के रूप में प्रशंसा और पूजन के योग्य है।

उच्च विचार वालों के ये गुण हैं और आध्यात्मिक रूझान के प्रमाण चिन्ह हैं। ईश्वर के ज्ञान को पाने के पथ पर बढ़ चलने वाले पथिक के आवश्यक गुणों की चर्चा करते हुये इनके विषय में लिखा जा चुका है। जब अनासक्त पथिक और समर्पित जिज्ञासु इन आवश्यक शर्तों को पूरा कर लेता है, तब और केवल तब ही उसे एक सच्चा जिज्ञासु कहा जा सकता है।

जब जिज्ञासु के हृदय में प्रगाढ़ उत्सुकता, अथक प्रयत्न, समर्पित भक्ति, प्रज्जवलित प्रेम, असीम आनंद और अपार संतोष की ज्योति प्रदीप्त होगी और प्रभु की प्रेममयी कृपा–वायु उसकी आत्मा में प्रवाहित होगी तब ही भ्रम का अंधकार दूर होगा, शंका और कुप्रवृत्तियों की धुंध छंटेगी और ज्ञान तथा आस्था का प्रकाश उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रकाशित करेगा। उस समय परमात्मा का शुभ संदेश लेकर रहस्यमय दूत प्रभु के नगर से शुभ प्रभात की तरह उदित होगा और ज्ञान की तुरही से अज्ञानता के अंधकार में सोये हुये हृदय और आत्मा को जगायेगा। तब प्रभु की कृपा तथा प्रेम जिज्ञासु को वह नवजीवन प्रदान करेगा कि वह अपने को नवनेत्र, नवकर्ण, नवहृदय और नवमस्तिष्क से विभूषित पायेगा। वह विश्व के अवतार के चिन्हों को समझ पायेगा और तब ही आत्मा के गुप्त रहस्यों के प्रति ध्यानमग्न हो सकेगा। प्रभुप्रदत्त दृष्टि से वह प्रत्येक कण में अनंत आस्था के उच्च स्थानों की ओर ले जाने वाले द्वार के दर्शन करेगा। वह तब सभी वस्तुओं में दिव्य प्रकटीकरण के रहस्यों और अनन्त अवतार के प्रमाण प्राप्त कर पायेगा।

वह नगर कुछ और नहीं बल्कि भगवद्वाणी है जो हर युग में प्रकट की जाती है। मूसा के युग में यह पंचग्रंथ था, ईसा के काल में यह गॉस्पल था, मुहम्मद के समय कुरान और इस युग में *बयान* और उस ईश–काल में जिसे प्रभु प्रकट करेगा, उसका अपना महाग्रंथ, वह महाग्रंथ जिससे जुड़े हैं पहले के सभी ईश–काल के ग्रंथ, वह महाग्रंथ जो उन सबके बीच सर्वोपरि है।

126. हे मित्रों! मन की पूरी आस्था के साथ उस एक सत्य ईश्वर की तुम सहायता करो। उसकी कीर्ति बढ़े, ऐसे सद्कर्म करो। अपना व्यवहार और चरित्र ऐसा रखो जो उसे स्वीकार्य हो। इस युग में जो ईश्वर का सहायक बनने की आकांक्षा रखता है, उसे अपनी भौतिक सम्पदाओं से मुंह मोड़ लेना चाहिए और प्रभु की वस्तुओं की ओर उन्मुख होना चाहिये। उसे उस बात से संतोष करना चाहिये जो उसके हित में हो और केवल उन्हीं बातों से संबंध रखना चाहिये जो उस सर्वशक्तिशाली के नाम को गौरवान्वित करती हों। सभी कुप्रवृत्तियों और भ्रष्ट इच्छाओं को अपने हृदय से बाहर निकाल कर उसे अपने हृदय को निर्मल कर लेना चाहिये, क्योंकि ईश्वर का भय ही उसके धर्म की ढाल है और उसे विजयी बनाता है और इससे ही वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति करता है। यह एक ऐसा मापदंड है, जिसे कोई भी व्यक्ति झुठला नहीं सकता। यह एक ऐसी शक्ति है, जिससे लोहा लेने की हिम्मत कोई ताकत नहीं कर सकती। इसकी सहायता से अथवा प्रभुकृपा से जो प्रभु के निकट पहुंच गये हैं उन्होंने मानव–हृदयों के दुर्ग पर विजय प्राप्त कर ली है।

128. अपने हृदय से सांसारिक वस्तुओं का मोह निकाल दो, अपनी वाणी से उस प्रभु के स्मरण के अतिरिक्त अन्य सभी के नामों के उच्चारण को दूर रखो। अपनी बुरी और भ्रष्ट इच्छाओं से तुम दूर रहो। ईश्वर से डरो, हे लोगों ! और वैसे बनो जो तुम्हें सद्मार्ग पर ले जाये।

अपना घर–द्वार छोड़कर प्रभु की शरण में आने वाले हे लोगों ! मानवजाति को प्रभु का संदेश दो ताकि वे बुरी और

भ्रष्ट इच्छाओं के शिकार होने से बच सकें और सर्वोच्च, सर्वमहान प्रभु का स्मरण कर सकें।

तुम्हारे बीच से जो कोई भी प्रभुधर्म की शिक्षा देने के लिये उठ खड़ा हो, उसे, और किसी को शिक्षा देने से पहले, स्वयं को शिक्षा देने दो ताकि उसकी वाणी उनके हृदयों को आकर्षित कर सके जो उसे सुनते हैं। जब तक वह स्वयं को शिक्षा नहीं दे लेता तब तक उसके शब्द जिज्ञासु पर प्रभावशाली नहीं हो पायेंगे। सावधान हो जाओ, ओ लोगों ! तुम उनमें से नहीं बनो जो दूसरों को तो अच्छे परामर्श देते हैं लेकिन स्वयं उनका अनुसरण करना भूल जाते हैं। ऐसे लोगों के शब्दों को, विश्व की वास्तविकतायें और इनसे भी ऊपर प्रभुलोक के निवासी झूठ मानते हैं।

अपने प्रति तथा दूसरों के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार करो, ताकि तुम्हारे कर्मों के द्वारा हमारे सेवकों के बीच न्याय के प्रमाण सुस्पष्ट हो सकें। चेतो, कहीं अपने पड़ोसी की सम्पत्ति के ऊपर तुम बुरी दृष्टि न रखने लगो। अपने को उनके विश्वास के योग्य प्रमाणित करो और गरीबों को उन उपहारों तथा सुविधाओं से वंचित न रखो जो ईश्वर ने तुम्हें दी हैं। वह अवश्य ही दान देने वालों को समुचित प्रतिदान देगा और वे जो कुछ भी गरीबों को देंगे उसका दुगुना प्रभु उन्हें देगा। उसके अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। सम्पूर्ण सृष्टि तथा साम्राज्य उसी का है। वह चाहे जिसे वरदान दे सकता है, जिसे चाहे उसे वह श्राप दे सकता है। वह महान दाता, सर्वदयालु और सर्वकृपालु है।

कहो : हे बहा के लोगों ! प्रभुधर्म का तुम संदेश दो, क्योंकि प्रभु ने प्रत्येक व्यक्ति को उसके संदेश के प्रसार के कर्त्तव्य से विभूषित किया है और इसे ही वह सर्वश्रेष्ठ कर्म मानता है। मनुष्य का ऐसा कर्म प्रभु की दृष्टि में तब ही स्वीकार्य है, जब वह स्वयं उन शिक्षाओं का अनुपालन करता है और एक दृढ़ अनुयायी बनता है। वह सर्वोच्च रक्षक, दयालु और सर्वशक्तिशाली है। प्रभु ने यह आदेश दिया है कि उसके धर्म का संदेश मृदुल वाणी से दिया जाये, न कि हिंसापूर्ण साधनों के माध्यम से। सर्वविद्, सर्वोच्च प्रभु के दरबार से ऐसा ही आदेश भेजा गया है।

इस दुनिया की चीजों और इसके कार्यकलापों के लिये किसी से विवाद न करो, क्योंकि ईश्वर ने इनसे मोह रखने वालों को तिरस्कृत कर दिया है। सम्पूर्ण विश्व में से उसने मानव–हृदय को ही अपना निवास चुना है जिसे प्रकटीकरण की वाणी प्रभावित कर सकती है। इस प्रकार का आदेश उस सर्वज्ञाता, सर्वमहान आज्ञा देने वाले की कृपा से, बहा की महालेखनी ने अपनी अपरिवर्तनीय पाती में अंकित किया है।

129. प्रभु के न्याय की सौगंध! इस युग में जो भी अपना मुख प्रभु के गुणगान में खोलता है और अपने स्वामी के नाम की चर्चा करता है उसके ऊपर मेरे नाम के स्वर्ग से दिव्य–प्रेरणा की वर्षा होगी। उसकी सहायता स्वर्ग के निवासी करेंगे, उनमें से प्रत्येक के पास पवित्र प्रकाश की मशाल होगी। प्रभु के प्रकटीकरण का यही आदेश है। यह सब सर्वशक्तिशाली, सर्वोपरि प्रभु की आज्ञा से ही संभव हो पाया है।

130. समृद्धि में उदार बनो और विपत्ति में कृतज्ञ बनो। अपने पड़ोसी के विश्वास के योग्य बनो और उसे प्रसन्नता तथा मित्रता के भाव से देखो। निर्धनों के लिये खजाना और धनवानों के लिये सचेतक बनो, अभावग्रस्तों के अभावहर्ता और प्रतिज्ञापालक बनो। तुम्हारा निर्णय न्यायपूर्ण हो और तुम्हारी वाणी में संयम हो। किसी भी मनुष्य के प्रति अन्याय मत करो और सब के प्रति विनम्रता दिखलाओ। अंधकार में भटकने वालों के लिये दीपक के समान बनो, शोकमग्नों के लिये आनन्द, प्यासों के लिये एक सागर और विपत्ति में पड़े हुये लोगों के लिये आश्रय बनो, अन्याय से पीड़ित लोगों के रक्षक और आश्रयदाता बनो। ईमानदारी और सदाचारी के कारण तुम्हारे सभी कार्य औरों से अनूठे हों। अनजाने को घर का अपनापन दो, कष्टपीड़ितों के लिये शीतल मरहम, संत्रस्तों के लिये शक्ति के स्तम्भ बनो। नेत्रहीनों के लिये नेत्र और पथभ्रष्टों के भटकते पांव के लिये पथदर्शी प्रकाश बनो। सत्य के मुखड़े के आभूषण, वफा के माथे के मुकुट, सदाचार के मंदिर के स्तम्भ, मानवता की देह के प्राणवायु, न्याय की सेनाओं की ध्वजा, सद्‌गुणों के क्षितिज के जगमगाते सितारे, मानव–हृदय की धरती के लिये ओसबिन्दु, ज्ञान के महासागर के जहाज, प्रभु की अक्षय सम्पदाओं के गगन के सूर्य, प्रज्ञा के मुकुट के रत्न, अपनी पीढ़ी के आकाश के प्रखर प्रकाश और विनम्रता के वृक्ष के फल बनो।

131. मेरा उद्देश्य और कुछ नहीं, अपितु दुनिया का कल्याण और इसके राष्ट्रों के बीच शांति स्थापित करना है। मानव का कल्याण, इसकी शांति और सुरक्षा का वातावरण

तब तक नहीं प्राप्त होगा जब तक इसकी एकता पूरी दृढ़ता के साथ स्थापित न हो जाये। यह एकता तब तक स्थापित नहीं होगी जब तक मनुष्य इस महालेखनी के परामर्श को नहीं मानता।

पवित्र बनो, हे प्रभुभक्तों, पावन बनो, न्यायनिष्ठ बनो, सदाचारी, बनो, ...कहो, हे ईश्वर के लोगों ! शाश्वत सत्य की विजय को जो प्रतिष्ठित कर सकता है, उसके सहायकों को जो विजय दिला सकता है उसका वर्णन हमने पवित्र पुस्तकों में स्पष्ट रूप से कर दिया है और वह इतना स्पष्ट है जितना सूर्य। ये हैं तुम्हारे सद्कार्य और वैसा आचरण तथा चरित्र जो प्रभुदृष्टि में स्वीकार्य हैं। इस युग में जो कोई भी हमारे धर्म के उत्थान के लिये उठ खड़ा होगा और अपनी सहायता के लिये सद्चरित्रता तथा प्रशंसनीय आचरण का आह्वान करेगा, ऐसे सद्कार्य का प्रभाव निश्चय ही सम्पूर्ण विश्व पर पड़ेगा।

132. प्रभु की जय हो! मनुष्य के बीच एक सत्य प्रभु के अवतरित होने का उद्देश्य उन रत्नों को उजागर करना है, जो मानव के अन्दर छिपे पड़े हैं। इस युग में ईश्वर के धर्म का सार यह है कि संसार के विभिन्न धर्मों और मतों को विश्व में घृणा, शत्रुता और संघर्ष को बढ़ाने की अनुमति कभी भी नहीं दी जानी चाहिये। ये नियम और सिद्धान्त, ये सुदृढ़ तथा शक्तिशाली व्यवस्थायें एक ही स्त्रोत से उत्पन्न हुये हैं और एक ही प्रकाश की किरणें हैं। ये अगर एक दूसरे से अलग दिखती हैं तो केवल उस युग की आवश्यकताओं के कारण, जिस युग में उन्हें प्रकट किया गया है।

हे बहा के लोगों ! ऐसी कोशिश करो कि विश्व में धार्मिक मतान्तर की आंधी और राष्ट्रों के बीच पारस्परिक मतभेदों के तूफान समाप्त हो जायें और उनका नाम–ओ–निशान न रहे। ईश्वर के प्रेम के लिये और उनके लिये जो ईश्वर की सेवा करते हैं, इस सर्वाधिक उदात्त एवं महत्वपूर्ण प्रकटीकरण के सेवार्थ उठ खड़े हो। धार्मिक कूपमंडूकता और घृणा विश्व को भस्म कर देने वाली अग्नि है, जिसकी ज्वाला को कोई भी शांत नहीं कर सकता। केवल दिव्य शक्ति का महान हस्त ही मानवजाति को इस यातना से मुक्ति दिला सकता है।

प्रभु की वाणी एक दीपक है, जिसका प्रकाश है ये शब्द : तुम एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाखा की पत्तियाँ हो। एक–दूसरे के साथ प्रेम तथा सद्भाव, मित्रता और भाईचारे का व्यवहार करो। वह जो सत्य का सूर्य है, मेरा साक्षी है! एकता का प्रकाश इतना शक्तिशाली है कि यह सम्पूर्ण धरा को आलोकित कर सकता है। सर्वज्ञाता प्रभु स्वयं इन शब्दों की सत्यता को प्रमाणित करता है।

हे बहा के लोगों ! सभी मनुष्यों के साथ मेल–जोल रखो और उनके साथ मित्रता तथा भाईचारे की भावना के साथ रहो। अगर तुम किसी सत्य को जानते हो, अगर तुम कोई रत्न धारण करते हो जो औरों के पास नहीं है तो तुम इसे दूसरों के साथ मृदुल और विनम्र भाषा में बांटो। अगर उनके द्वारा यह स्वीकार कर लिया जाता है, अगर यह अपना उद्देश्य पूरा कर लेता है तो समझो, तुम्हारे उद्देश्य की पूर्ति हो

गई। अगर कोई इसे नकारता है तो उसे उसी के हाल पर छोड़ दो और ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह उसे मार्गनिर्देश दें। सावधान, कहीं तुम उसके साथ अभद्र व्यवहार न कर बैठो। विनम्र वाणी मानव–हृदय का लौहमणि है। यह आत्मा का भोजन, शब्दों का अर्थरूपी वस्त्र तथा ज्ञान एवं बुद्धि के प्रकाश का उद्‌गम–स्थल है।

133. जिसने प्रभु की एकता को जाना और स्वीकार किया है उसके दायित्व दुहरे हो जाते हैं। पहला यह है कि वह प्रभु के प्रेम में अडिग रहे, ऐसी अडिगता कि शत्रुओं और मिथ्याचारियों के प्रयत्न उसे विचलित न कर सकें, ऐसी दृढ़ता कि वह किसी भी विरोधी बात को अनसुनी कर दे। दूसरा दायित्व है, प्रभु के विधानों का पूरी निष्ठा और गम्भीरता से पालन करना। विधान जो उसने सदा दिये हैं और जो सदा उसके द्वारा मनुष्यों को दिये जाते रहेंगे और जिनकी सहायता से झूठ से सच को बराबर अलग किया जाता रहेगा।

134. मनुष्यों का प्रथम तथा परमोच्च कर्त्तव्य है कि शाश्वत सत्य को पहचानने के बाद वे प्रभुधर्म में अडिग रहें। इसमें अपनी पूरी आस्था रखो और उनमें बनो जिनका विश्वास पूरी तरह से ईश्वर में बना है। कोई भी दूसरा कृत्य चाहे वह कितना ही उच्च क्यों न हो, इससे बड़ा नहीं है। यह सभी कृत्यों का सम्राट है और इसका प्रमाण सर्वकृपालु, सर्वोच्च सर्वशक्तिशाली प्रभु देंगे।

मानव–हृदय को जो भावना प्रेरित करती है वह है ईश्वर का ज्ञान और इसका सच्चा आभूषण इस सत्य को जानना है

कि "वह जो भी चाहता है, करता है और उसकी जैसी इच्छा होती है वैसा आदेश वह देता है।" इसका परिधान ईश्वर का भय है और इसकी पूर्णता प्रभुधर्म में दृढ़ता है। ईश्वर उसे वैसा ही पथनिर्देश प्रदान करता है जो उसकी आकांक्षा रखता है। वह वस्तुतः, उसे प्रेम करता है जो उसकी ओर उन्मुख होता है। उस क्षमाशील, सर्वाधिक दयालु ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है। सभी लोकों के स्वामी, परमेश्वर का गुणगान हो।

135. मेरे सौन्दर्य की सौगंध ! इस युग में तुमसे कुछ भी स्वीकार नहीं किया जायेगा, चाहे कितनी भी उपासना तुम क्यों न करो और ईश्वर के सम्मुख उसके साम्राज्य के अनन्तकाल तक भी तुम क्यों न दण्डवत पड़े रहो। हर चीज उस परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर करती है और प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन उसकी प्रसन्नता और स्वीकृति पर किया जाता है। उसकी मुठ्ठी में सम्पूर्ण संसार मिट्टी की तरह है। जब तक कोई व्यक्ति ईश्वर को पहचान नहीं लेता और उससे प्रेम नहीं करने लग जाता तब तक इस युग में उसकी गुहार ईश्वर द्वारा नहीं सुनी जायेगी। उसके धर्म का यह सार है, अगर तुम जान सकते हो तो जानो।

136. कहो : हे लोगों ! अपनी आत्माओं को स्वार्थ की दासता से मुक्त कर लो और उन्हें सभी आसक्तियों से दूर रखो, सिवाय इसके कि वे मेरे प्रति आसक्त रहें। मेरा स्मरण तुम्हें समस्त बुराइयों से दूर रखेगा, अगर तुम इसे समझ सकते हो तो समझो। कहो : अगर सभी सृजित वस्तुयें

सांसारिक इच्छाओं और भ्रष्ट अभिमान से आच्छादित हो जायें तो प्रभु का महान हस्त इस युग में उन सबको यह वस्त्र प्रदान करेगा– "सृष्टि के साम्राज्य में वह जो चाहता है वही करता है", ताकि उससे उसकी प्रभुसत्ता के चिन्ह सभी वस्तुओं में सुस्पष्ट हो सकें। उस सर्वशक्तिमान, परम रक्षक, सर्वोपरि, सर्वोच्च, सर्वशक्तिशाली प्रभु की जय हो।

हे मेरे सेवक! प्रभु के उन पदों का गान कर जो तुम्हें प्राप्त हुये हैं, जैसे उन लोगों द्वारा गान किया गया था, जो प्रभु का सान्निध्य प्राप्त कर चुके हैं, ताकि तुम्हारे स्वर का माधुर्य तुम्हारे स्वयं की आत्मा को प्रकाशित कर दे और सभी मनुष्यों के हृदयों को आकर्षित कर ले। अपने कक्ष के एकान्त में प्रभु द्वारा प्रकटित इन पदों का जो कोई भी गान करता है, उसके मुख द्वारा उच्चरित शब्दों की सुगंध सर्वशक्तिशाली प्रभु के सर्वत्र विचरण कर रहे स्वर्गदूत दूर–दूर तक फैला देते हैं और प्रत्येक सदाचारी मनुष्य के हृदय को स्पन्दित कर देते हैं। यद्यपि वह, आरम्भ में इसके प्रभाव से अनभिज्ञ रह सकता है, किन्तु देर–सबेर, प्रभु की कृपा के प्रताप से उसकी आत्मा पर इसका प्रभाव होगा। इस प्रकार ईश्वर के प्रकटीकरण के रहस्य उसकी इच्छा के प्रताप से आदेशित हैं, जो शक्ति और प्रज्ञा का स्त्रोत है।

कहो : हे लोगों, मनुष्यों के बीच अधर्म के बीज न बोओ और अपने पड़ोसियों से झगड़ा न करो। सभी परिस्थितियों में धैर्यशील बनो और प्रभु में अपनी सम्पूर्ण आस्था और विश्वास रखो। अपने स्वामी की सहायता बुद्धि और वाणी रूपी तलवार

से करो। यही मानवोचित धर्म है। इससे विमुख होना सर्वोच्च, सर्वोपरि प्रभु की दृष्टि में शोभनीय नहीं है। जो लोग पथभ्रष्ट हो गये हैं, वे अज्ञानी हैं।

हे लोगों ! उसके स्मरण की कुंजी से मानव–हृदयों के द्वार खोलो जो प्रभु का स्मरण है और तुम्हारे बीच बुद्धि का स्त्रोत है। समस्त विश्व में से उसने अपने सेवकों के हृदयों को चुना है और उनमें से प्रत्येक को अपने प्रकाश के प्रकटीकरण का आसन बनाया है। अतः, अपने हृदय को प्रत्येक दोष से मुक्त कर लो ताकि जिन के लिये उनका निर्माण किया गया है, वे उन पर अंकित किये जा सकें। यह वस्तुतः ईश्वर के कृपापूर्ण आशीष का एक उपहार है।

हे लोगों ! अपनी जिह्वा को सत्यवादिता के सौंदर्य से निखारो और अपनी आत्माओं को ईमानदारी के आभूषण से विभूषित करो। हे लोगों ! सावधान, किसी के साथ तुम दुर्व्यवहार न कर बैठो। तुम उसके प्राणियों के बीच ईश्वर के विश्वासपात्र बनो और उसके लोगों के बीच उसकी दयालुता के प्रतीक बनो। वे जो अपनी भ्रष्ट इच्छाओं और मंशाओं का अनुसरण करते हैं, उन्होंने गलत किया है और अपने प्रयत्नों को झुठलाया है। वे वस्तुतः उनमें से हैं जो भटक चुके हैं। प्रयत्न करो, हे लोगों, कि तुम्हारी आत्मायें उसके आशीष और कृपा की ओर उन्मुख रहें। तुम्हारे पग प्रभु के पथ पर ही प्रयाण करें। तुम्हारे लिये यही मेरी सलाह है। ऐसा हमने इसलिये कहा कि तुम मेरे परामर्श पर चल सको।

137. मेरी मधुर वाणी पर ध्यान दो और अपनी शैतानी प्रवृत्तियों तथा भ्रष्ट इच्छाओं से दूर रहो। वे जो ईश्वर की छत्रछाया तले रहते हैं और उसके अनन्त प्रकाश के आसन पर प्रतिष्ठित हैं, अगर वे भूख से मर भी रहे हों तब भी, अपने पड़ोसी की सम्पदा की ओर हाथ नहीं बढ़ायेंगे और गलत ढंग से उसे प्राप्त करने की कोशिश नहीं करेंगे।

एक सत्य ईश्वर के प्रकट होने का उद्देश्य मानव का सच्चाई और निष्ठा, दयालुता और विश्वासपात्रता के पथ पर आह्वान करना है, प्रभु की इच्छा के प्रति समर्पण की भावना का संचार करना है, सहनशीलता और परोपकारिता, न्यायनिष्ठता और बुद्धिकौशल की राह पर ले चलना है। उसका उद्देश्य प्रत्येक मनुष्य को साधुसरीखे चरित्र की ओर प्रवृत्त करना और उसे पवित्र तथा सद्कर्मों के आभूषण से विभूषित करना है।

139. तू यह जान कि हमने तलवार के शासन को समाप्त कर दिया है, और इसके बदले मानववाणी की शक्ति को लाया गया है। यह हमारे धर्म के प्रसार में सहायक होगा। हमने यह आज्ञा अपनी कृपालुता के परिणामस्वरूप दी है। कहो : हे लोगों ! मनुष्यों के बीच विद्वेष के बीज न बोओ और अपने पड़ोसयों के साथ झगड़े की स्थिति से बचो, क्यों कि अपनी प्रभुसत्ता और शक्ति का अंश पृथ्वी के सम्राटों को हमने दिया है और उन्हें प्रभु की शक्ति का प्रतीक बनाया है। ईश्वर की प्रभुसत्ता के कारण ही यह सम्भव हो पाया है। उस ईश्वर ने अपने लिये कोई साम्राज्य या शक्ति को स्वीकार नहीं किया है। इसका प्रमाण स्वयं अनन्त सत्य प्रभु है। उसने

जिन पर स्वयं शासन करने का निर्णय लिया है, वे हैं मनुष्य के हृदय और आत्मा ताकि वह उन्हें, पवित्र बना सकें और उस स्थान तक पहुंच सकें। ओ लोगों ! अपनी वाणी की कुंजी से मानव–हृदय के द्वार खोलो। हमारे सर्वोपरि आदेश ने तुम्हारे कर्त्तव्य के रूप में यही निर्धारित किया है।

ईश्वर के न्याय की सौगंध ! यह संसार और इसके मिथ्याभिमान, इसके वैभव और यह जो कुछ सुख दे सकता है वह सब प्रभु की दृष्टि में धूल और राख के समान है। अगर मानव–हृदय इसे समझ सकते हों तो समझें। हे बहा के लोगों ! संसार की बुराइयों से स्वयं को सम्पूर्णतः दूर रखो। स्वयं ईश्वर मेरा साक्षी है । इस संसार की वस्तुयें तुम्हारे योग्य नहीं हैं। इन्हें उन लोगों के लिये छोड़ दो जो इनकी इच्छा रखते हों। अपना ध्यान पवित्रतम प्रभु में लगाओ।

कहो : सत्यता और शिष्टाचार को अपना आभूषण बनाओ। सहनशीलता और न्याय के वस्त्रालंकार से स्वयं को वंचित न रखो, ताकि पवित्रता की सुरभि जो तुम्हारे हृदयों से निकले वह समस्त सृजित वस्तुओं पर आच्छादित हो जाये। कहो : सावधान! ओ बहा के लोगों, तुम उनके रास्तों पर न चलो जिनकी कथनी और करनी में अंतर होता है। इस बात के लिये प्रयत्न करो कि दुनिया के लोगों के बीच तुम प्रभु के चिन्हों को प्रतिबिम्बित कर सको और उसके आदेशों के दर्पण बन सको। अपने कर्म को मानवजाति का पथनिर्देशक बनने दो, क्योंकि बहुतेरे लोगों के कर्म, चाहे वह बड़े हों या छोटे, उनके आचरण से भिन्न होते हैं। तुम अपने कर्मों से ही

समस्त पृथ्वी पर प्रकाश की चमक स्थापित कर सकते हो। वह व्यक्ति सुखी है जो मेरे परामर्श की ओर ध्यान देता है और सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता, सर्वबुद्धिमान की आज्ञाओं का अनुपालन करता है।

141. कहो : हे लोगों ! जो तुम्हारे लिये हमारी पातियों में दिया गया है उनका अनुपालन करो और उनकी मिथ्या कल्पनाओं की राह पर मत चलो जिन्होंने षड्यंत्र के बीज बोये हैं, क्योंकि ये शैतानी प्रवृत्ति वाले लोग पवित्रतम, सर्वोपरि, सर्वोच्च प्रभु का विरोध करके दुराचार और पाप का मार्ग अपनाते हैं और इसे ईश्वर पर आरोपित कर देते हैं। कहो : हमने दुःख और कष्टों को सहना स्वीकारा है, ताकि तुम स्वयं को समस्त सांसारिक दोषों से मुक्त कर सको। तब भला अपने हृदय की अतल गहराइयों में हमारे उद्देश्य पर विचार करने से क्यों इंकार करते हो ? ईश्वर के न्याय की सौगंध! हमने जो यातनायें सही हैं उन पर जो कोई भी विचार करेगा उसका हृदय दुःख से पिघल जायेगा। मेरे शब्दों की सत्यता का प्रमाण स्वयं तुम्हारा स्वामी है। तुम्हें समस्त सांसारिक बुराइयों से मुक्त करने के लिये हमने इतनी विपत्तियों का बोझ वहन किया है और तुम पर इसका कोई असर नहीं हुआ ?

142. सर्वलोकों के स्वामी की कृपा तुम्हें प्राप्त हो चुकी है और अभी भी तुम्हें मिल रही है। उसकी शक्ति और प्रेरणा से स्वयं को सुसज्जित कर लो और उसके धर्म तथा उसके पवित्र ज्ञान के प्रसार एवं विस्तार के लिये उठ खड़े हो।

मानव–ज्ञान की कमी और अपने अनपढ़ होने की बात से तुम दुःखी न हो। उसकी बहुमुखी कृपा के द्वारों की कुंजी सत्य प्रभु के हाथ में है। इन द्वारों को वह उनके लिये खोलता रहा है और भविष्य में उनके लिये खोलेगा जो उसके सेवक हैं।

143. यदि मेरे लिये तुम्हें यातनायें सहनी पड़े तो मेरे दुःखों और कष्टों को याद कर और मेरे निष्कासन और कारावास के विषय में सोच। सर्वोपरि, सर्वोच्च, सर्वबुद्धिमान, प्रभु से हमें जो भी प्राप्त हुआ है, उसे हम तुम्हें दे रहे हैं।

अपनी सौगंध ! वह दिन निकट आ रहा है जब हम वर्तमान विश्व और इसमें जो कुछ भी है, उसे समाप्त कर देंगे और इसके बदले एक नई व्यवस्था देंगे। वह, वस्तुतः, सभी वस्तुओं को अपनी शक्ति के अधीन रखता है।

अपने हृदय को पवित्र कर लो ताकि तुम मुझे याद कर सको। अपने कानों को शुद्ध कर लो ताकि तुम मेरे शब्दों को सुन सको। तब तुम अपना ध्यान उस ओर लगाओ जहाँ सर्वदयालु का सिंहासन है और कहो : हे मेरे स्वामी, तेरी जय हो, क्योंकि तुमने मुझे इस योग्य बनाया कि तुम्हारे अवतार को मैं पहचान सकूं और मेरी सहायता की है कि अपना ध्यान तुम्हारी ओर केन्द्रित कर सकूं।

144. प्रभु की सेवा की राह पर चलो और उसमें दृढ़ बने रहो। कहो, हे लोगों, सभी धर्मग्रंथों में दिये गये वचनों के पूरा होने का समय आ गया है। ईश्वर से डरो और उसे पहचानने से, जो तुम्हारी सृष्टि का उद्देश्य है, अपने को मत रोको।

उसके निकट पहुंचने की शीघ्रता करो। तुम्हारे लिये इस संसार और समस्त सांसारिक वस्तुओं से श्रेयस्कर यही है। काश! तुम इसे देख पाते।

145. यदि तुम किसी दलित अथवा असहाय से मिलो तो उससे घृणा न करो, उसकी ओर से मुंह न मोड़ लो, क्योंकि ज्योति के सम्राट की दृष्टि उसकी ओर होती है और दया तथा करुणा की बाँहें उसे घेरे होती हैं। इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। इसे केवल वही समझ सकते हैं जिन्होंने अपनी इच्छा–आकांक्षाओं को कृपालु, सर्वज्ञ प्रभु की इच्छा के प्रति अर्पित कर दिया है। ओ पृथ्वी के धनवानों ! धूल से सने गरीब के चेहरे से मुंह न मोड़ो, अपितु उससे मित्रवत् व्यवहार करो और उसकी व्यथा–कथा सुनो कि किस प्रकार प्रभु के रहस्यमय आदेशों ने उसे उत्पीड़न और यातनाओं के दौर से गुजरने के लिये बाध्य किया। ईश्वर के न्याय की सौगंध ! जब तुम उससे बातचीत करते हो तो सर्वोच्च प्रभु के आशीष तुम्हें मिलते हैं, तुम्हारी ओर उसकी दिव्य दृष्टि निहारती होती है, तुम्हारी प्रशंसा करती होती है उस अनन्त प्रभु की वाणी, तुम्हारे नाम और सुकृत्य की चर्चा सर्वोच्च लोक के निवासी करते होते हैं। वैसे विद्वान धन्य हैं जो अपनी उपलब्धियों पर गर्व नहीं करते और वैसे सदाचारी तथा न्यायनिष्ठ लोगों का कल्याण होता है जो पापी की खिल्ली नहीं उड़ाते, अपितु उनकी गलतियों को छुपाते हैं ताकि उनकी अपनी कमियां लोगों की आंखों के सामने न आ पायें।

146. यह हमारी इच्छा तथा कामना है कि तुममें से प्रत्येक सदाचारी, परोपकारी और न्यायनिष्ठ बने और मानवजाति के लिये ईमानदारी का उदाहरण बने। सावधान ! कहीं तुम स्वयं को अपने पड़ोसी से उत्तम न समझने लगो। अपनी दृष्टि केवल उस ओर लगाओ जो मनुष्यों के बीच प्रभु का मंदिर है। उसने विश्व के उद्धार के लिये अपने प्राणों की आहूति दे दी। वस्तुतः, वह सर्वकृपालु, दयालु और सर्वोच्च है। अगर तुम्हारे बीच कोई मतभेद उत्पन्न हो जाये तो बराबर मुझे अपने समक्ष खड़ा देखो और मेरे नाम के वास्ते तथा मेरे प्रकटीकरण के प्रति प्रेम और प्रभुधर्म के सम्मान के लिये एक दूसरे के दोषों को भूल जाओ। हम तुम्हें मित्रतापूर्ण तथा प्रेमपूर्ण वातावरण में सदैव एक–दूसरे से सलाह करते हुये देखना चाहते हैं और तुम्हारे कर्मों से एकता तथा मैत्री, प्रेममयी करुणा और सहयोग की सुरभि पाना चाहते हैं।

इस प्रकार का परामर्श तुम्हें सर्वज्ञाता, सर्वमहान आज्ञापालक की ओर से दिया जाता है। हम बराबर तुम्हारे साथ रहेंगे, हमारे हृदय अवश्य ही आह्लादित होंगे, अगर हम तुम्हारे बीच परस्पर सहयोग की सुरभि पायेंगे, क्योंकि इसके अतिरिक्त अन्य कुछ हमें संतोष नहीं प्रदान कर सकता। प्रत्येक विवेकशील मनुष्य इसकी साक्षी देता है।

147. महानतम नाम मेरा साक्षी है। आज भी अगर कोई व्यक्ति क्षणभंगुर चीजों और सांसारिक विषय–वासनाओं में उलझा रहे तो यह कितना दुःखद होगा। उठो और प्रभुधर्म से दृढ़तापूर्वक जुड़ जाओ। एक–दूसरे के प्रति अत्यन्त प्रेमपूर्ण

व्यवहार करो। सर्वप्रिय के वास्ते, अनन्त ज्वाला की अग्नि से अपने स्वार्थ के आवरण को जला डालो और प्रसन्न और प्रकाशयुक्त चेहरों के साथ अपने पड़ोसी का सहयोग करो।

प्रभु की वाणी ने सम्पूर्ण विश्व के हृदय में पावनता की लौ जगा दी है। कितना दुःखदायी होगा, अगर तुम इस लौ से स्वयं को तेजयुक्त न कर पाओगे। ईश्वर के वास्ते, तुम इस महारात्रि को एकता की रात्रि मानो, अपनी आत्माओं को एक सूत्र में पिरो लो तथा यह दृढ़ निश्चय करो कि स्वयं को तुम सद्चरित्रता और सद्कर्मों के प्रशंसनीय आभूषणों से विभूषित कर लोगे। तुम्हारी मुख्य चिन्ता गिरे हुये लोगों को उठाने की होनी चाहिये, ताकि उनके जीवन–दीप बुझ न जायें और उनकी मदद कुछ इस प्रकार करनी चाहिये कि वह प्रभुधर्म का आलिंगन कर लें। अपने पड़ोसी के साथ तुम्हारा व्यवहार इस प्रकार का हो कि उससे एकसत्य प्रभु के चिन्ह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित हों।

148. मनीषियों तथा रहस्यवादियों के कथन और लेख कभी भी मानव के सीमित मस्तिष्क हेतु निर्धारित कठोर सीमाओं को न तो लांघ पाये हैं और न लांघने की आशा ही कर सकते हैं। सर्वोत्तम मस्तिष्क चाहे कितनी ऊँचाईयों की उड़ान भर ले, अनासक्त और समझदार हृदय चाहे कितनी गहराइयों में प्रवेश कर जाये, ऐसे मस्तिष्क और हृदय भी कभी उस सीमा को पार नहीं कर सकते जो उनकी स्वयं की अवधारणाओं का प्राणी तथा अपने विचारों की उपज है। महान चिंतकों का चिंतन, पवित्रतम संतों की श्रद्धा, मानव

लेखनी अथवा जिह्वा से उपजे महानतम प्रशंसा के शब्द उनके ईश्वर और स्वामी के प्रताप से उनके भीतर जन्म लेने वाले का प्रतिबिम्ब मात्र है। जो कोई भी अपने हृदय में इस सत्य पर विचार करता है, उसे तुरंत ही यह स्वीकार करना पड़ता है कि कुछ निश्चित सीमायें हैं जिनका कोई भी मानव उल्लंघन नहीं कर सकता। अनादि से ईश्वर को जानने और कल्पना करने के समस्त प्रयास ईश्वर के प्राणियों की स्वयं की अपेक्षायें मात्र हैं। ये वे प्राणी हैं जिन्हें ईश्वर ने अपनी इच्छा और अपने उद्देश्य हेतु उत्पन्न किया है। वाणी द्वारा ईश्वर के रहस्यों के वर्णन अथवा मानव मस्तिष्क द्वारा ईश्वरीय सार को समझने के प्रयासों से भी अपरिमेय रूप से ईश्वर परे है। सीधे संसर्ग का कोई भी सम्बंध ईश्वर को उसके द्वारा रचित प्राणियों से बांध नहीं सकता और न ही उसके प्राणियों का गूढ़तम तथा सुदूर संकेत भी ईश्वर के साथ न्याय कर सकता है। अपनी विश्व आच्छादित इच्छा के द्वारा उसने समस्त वस्तुओं को उत्पन्न किया है। वह प्राचीन शाश्वतता के अपने उच्च और अविभाज्य सार में छिपा हुआ है तथा सदैव ही अगम्य तथा अपनी ही आभा और महिमा में अप्रकट रहेगा। जो कुछ भी स्वर्ग अथवा धरती पर है, ईश्वर की आज्ञा से उत्पन्न हुआ है तथा उसी की इच्छा से सभी शून्यता से बाहर प्राणी जगत में कदम रख सके हैं। तब वे प्राणी जो ईश्वर की इच्छा से उत्पन्न हुये हैं, किस प्रकार प्राचीनतम दिवस के सार को समझ सकते हैं।

149. इस युग में यदि कोई मनुष्य उठ खड़ा हो और

स्वर्ग तथा पृथ्वी की सभी वस्तुओं से अनासक्त होकर उसकी ओर अपना सम्पूर्ण ध्यान लगाये जो प्रभु के पवित्र प्रकटीकरण का सूर्य है तो, निश्चय ही, वह ऐसी शक्ति से आभूषित हो जायेगा कि सभी सृजित वस्तुओं को वह अपने अधीन कर लेगा। यह सर्वज्ञाता, सर्वशक्तिमान स्वामी के विभिन्न नामों में एक नाम की शक्ति की सहायता से संभव हो पायेगा। तुम इस सत्य को अच्छी तरह समझ लो कि इस युग में सत्य के सूर्य ने एक ऐसा प्रकाश दिया है जिसे बीते हुये युगों ने कभी नहीं देखा था। हे लोगों! उसकी ज्योति का प्रकाश अपने ऊपर चमकने दो। अपनी गिनती बेखबर लोगों में न कराओ।

150. जब विजयकाल आयेगा तब प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को अनुयायी के रूप में घोषित करेगा और प्रभुधर्म की शरण में जाने की शीघ्रता करेगा। धन्य हैं वे लोग जो विश्वव्यापी यातनाओं के समय भी प्रभुधर्म में दृढ़ रहे और इसके सत्य से अलग होने की बात को नकारते रहे।

151. रात के बाद दिन और दिन के बाद रात तुम्हारे जीवन के घंटे और पल इसी प्रकार बीतते गये और तुममें से किसी ने भी, एक पल के लिये भी, स्वयं को उससे अनासक्त नहीं किया जो नश्वर है। ऐसे कार्य करो कि तुम्हारे जीवन के शेष दिन भी कहीं इसी प्रकार खो न जायें। बिजली की चमक की गति से तुम्हारे दिन बीत जायेंगे और तुम्हारा शरीर मिट्टी तले चिरनिन्द्रा में सुला दिया जायेगा। तब तुम क्या पा सकोगे ? कैसे तुम अपने अतीत की असफलताओं को दूर कर पाओगे तब ?

152. तेरा नेत्र मेरा विश्वास है। व्यर्थ कामनाओं की धूल से इसकी कांति को धूमिल मत करो। तेरी श्रवणेन्द्रियाँ मेरी कृपा के चिन्ह हैं। इन्हें चतुर्दिक व्याप्त मेरे पावन शब्दों के अतिरिक्त और कुछ न सुनने दो। तेरा हृदय मेरा कोषालय है, स्वार्थ के कपटी हाथों को इसमें छिपे उन मोतियों को हरने मत दो जो मैंने इसमें भर रखे हैं। मेरी प्रेममयी कृपालुता के प्रतीक हैं तुम्हारे हाथ, इन्हें मेरी संरक्षित और निगूढ़ पातियों को सम्हालने से वंचित मत करो। बिना माँगे ही हमने तुम्हारे ऊपर अपनी कृपा–वर्षा की है। बिना तेरे कहे ही मैंने तेरी इच्छा पूरी कर दी है, यद्यपि तू इस योग्य नहीं था। फिर भी, मैंने तुझे अपना अमूल्य, अनन्त प्रेम दिया है। ओ मेरे सेवकों ! इतने त्यागी और समर्पित बनो जितनी है धरती, ताकि तुम्हारे शरीर रूपी मिट्टी से मेरे ज्ञान के सुरभियुक्त, पवित्र रंग–बिरंगे फूल खिलें। अग्नि के समान दीप्त हो जाओ ताकि अज्ञानता के आवरण को तुम जला डालो और प्रभुप्रेम की स्फूर्तिदायक शक्ति से सुसुप्त और भ्रमित हृदयों को प्रदीप्त कर सको। पवन के समान शीतल और विनम्र बनो ताकि तुम मेरे लोक में प्रवेश कर सको।

153. ओ मेरे सेवकों ! यदि तुम मेरे पवित्र धन के गुप्त एवं अथाह कोष को पा सकते तो निश्चय ही ज्ञात होता कि उसके सामने समस्त सांसारिक सम्पत्ति कुछ नहीं। अपने हृदय में खोज करने की आकांक्षा की लौ को इस प्रखरता से जलने दो कि तुम अपने सर्वोच्च उद्देश्य को प्राप्त कर सको। तुम्हारे जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है ऐसे स्थान को प्राप्त करना जहां अपने सर्वोत्तम प्रियतम के साथ तुम एकाकार हो सको।

ओ मेरे सेवकों ! स्वयं को उस अनश्वर तथा देदीप्यमान प्रकाश से वंचित न करो जो दिव्य ज्योति के महादीप में प्रज्जवलित है। अपने उल्लसित हृदयों में प्रभु–प्रेम की लौ लगा। इसे दिव्य मार्गदर्शन के तेल से दीप्त रख और सुदृढ़ विश्वास की शरण में इसे सुरक्षित रख। विश्वास तथा ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सब से अनासक्ति के दुर्ग में इसे संरक्षण प्रदान कर, ताकि नास्तिकों की दुष्ट वार्ता इसके प्रकाश को बुझा न दे। ओ मेरे सेवकों, पवित्र और दिव्य आदेश से प्रेरित मेरा प्रकटीकरण महासागर के समान है, जिसकी अतल गहराइयों में असंख्य अनमोल मोती छिपे हैं चमत्कृत कर देने वाली कान्ति विद्यमान है। प्रत्येक जिज्ञासु का यह कर्त्तव्य है कि वह इस महासागर के किनारों तक पहुंचे ताकि अपनी जिज्ञासा और कोशिशों के अनुपात में प्रभु की निगूढ़ पातियों में वर्णित लाभांश प्राप्त कर सके। अगर कोई इसके किनारों तक पहुंचने की इच्छा नहीं रखता हो, अगर हर कोई उस ओर अपने कदम बढ़ाने और उसे पाने में असफल हो जाये तो क्या यह कहा जा सकता है कि महासागर ने अपनी शक्ति खो दी है अथवा इसकी अतल गहराई में मोती नहीं हैं ? कितनी व्यर्थ तथा घृणास्पद हैं वे कल्पनायें जो तुमने अपने हृदय में संजो रखी हैं। ओ मेरे सेवकों! एक सत्य प्रभु मेरा साक्षी है ! यह सर्वमहान, यह अथाह महासागर समीप है, तुम्हारे इतना समीप है कि तुम्हें आश्चर्य होगा जब इसकी निकटता को तुम समझ जाओगे। देखो, तुम्हारी धमनियों से भी अधिक नजदीक है यह। यदि तुम चाहो तो इस प्रभुप्रदत्त कृपा, अमिट प्रेम, सदा पवित्र रहने वाली भेंट और अवर्णनीय आभा से परिपूर्ण दिव्य कृपा के उपहार को प्राप्त कर सकते हो।

तुम उस पक्षी के समान हो जो अपने दृढ़ विश्वास और पंखों की शक्ति के सहारे दूर गगन के विस्तार में विचरण करता रहता है और तब तक नीचे नहीं आता जब तक उसे जल और मिट्टी से अपनी क्षुधा शांत करने की आवश्यकता नहीं होती। तब अपनी इच्छा के जाल में उलझ कर वह वहाँ तक उड़ान भरने में अपने को असमर्थ पाता है जहाँ से वह आया था। अब तक जो स्वर्गिक उल्लास में विचरण कर रहा था, वही पक्षी अपने पंखों को बोझिल पाकर शक्तिहीन हो जाता है और धरती पर अपना घोंसला बनाने को बाध्य हो जाता है। अतः, हे मेरे सेवकों ! अपने पंखों को भ्रम और मिथ्या इच्छाओं की मिट्टी से बोझिल न करो और इन्हें ईर्ष्या तथा घृणा की धूल से गंदा नहीं होने दो, अन्यथा तुम मेरे दिव्य ज्ञान के आसमान तक नहीं पहुंच पाओगे।

ओ मेरे सेवकों ! तुम दुःखी न हो यदि इस दुनिया में तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कुछ घटित होता है अथवा ईश्वर के आदेश तुम्हें तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध लगते हों, क्योंकि निश्चित रूप से आशीषयुक्त प्रसन्नता और स्वर्गिक आनन्द के दिन तुम्हारे लिये संरक्षित हैं। तुम्हारे समक्ष ऐसे लोक प्रकट किये जायेंगे जो पवित्र और आध्यात्मिक ज्योति से परिपूर्ण होंगे। तुम्हारे लिये यह निर्धारित है कि तुम इस लोक में तथा परलोक में इस आनन्द के भागीदार बनोगे।

155. अपने सेवकों के लिये ईश्वर द्वारा निर्धारित पहला कर्त्तव्य है उसको पहचानना, जो उसके प्रकटीकरण का दिवा वसंत है तथा उसके विधानों की निर्झरनी है, जो प्रभुधर्म के

साम्राज्य और सृजित वस्तुओं के बीच ईश्वरत्व का प्रतिनिधित्व करता है। जो कोई भी इस कर्त्तव्य का अनुपालन करता है, वह समस्त अच्छाइयों को प्राप्त कर लेता है, जो कोई भी इससे वंचित रह जाता है वह कुमार्गगामी हो जाता है, चाहे वह कितना ही न्यायनिष्ठ क्यों न हो। जो इस उच्चतम स्थान को प्राप्त कर लेता है, इस अनन्त आभा से पूर्ण स्थान को प्राप्त कर लेता है उसके लिये यह शोभा देता है कि वह उसके प्रत्येक नियम का पालन करे, जो विश्व की "इच्छा" है। ये दोनों कर्त्तव्य एक दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते। एक–दूसरे के बिना कोई पूर्ण नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार का आदेश उसके द्वारा दिया गया है जो दिव्य–प्रेरणा का स्त्रोत है।

ओ दुनिया के लोगों ! तुम यह भलीभांति जान लो कि मेरे आदेश मेरे प्राणियों के लिये प्रेमपूर्ण विधान के दीपक और मेरी दया की कुंजी हैं। स्वर्ग से तुम्हारे प्रकटीकरण के द्वारा ऐसा ही आदेश दिया गया है। अगर कोई व्यक्ति सर्वकृपालु की वाणी से निकले शब्द के माधुर्य का पान करना चाहता है तो वह समस्त सांसारिक सम्पदाओं को त्याग देगा ताकि वह प्रभु के एक आदेश की सत्यता को प्रमाणित कर सके।

कहो : मेरे विधानों से मेरे परिधान की सुरभि का रसास्वादन किया जा सकता है और उनकी ही सहायता से उच्चतम पर्वत श्रेणियों पर विजय के मापदण्ड स्थापित किये जायेंगे। सर्वत्र व्याप्त मेरी ज्योति के स्वर्ग से मेरी शक्ति की वाणी ने इन शब्दों में मेरी सृष्टि को संबोधित किया है : मेरे

सौंदर्य से प्रेम है, इसलिये मेरे आदेशों का पालन करो। वह प्रेमी सुखी है जिसने अपने प्रियतम के इन शब्दों की दिव्य सुरभि का रसास्वादन किया है। ये शब्द आशीष की ऐसी सुगंध से सराबोर हैं, जिनका कोई जिह्वा वर्णन नहीं कर सकती। मेरे जीवन की सौगंध ! जिसने भी सदाचार की सर्वोत्तम मदिरा का पान मेरे कृपालु हस्त से कर लिया है वह मेरे आदेशों के गिर्द ही रहेगा। मेरे आदेश जो मेरी सृष्टि के दिवावसंत में चमकते हैं।

यह नहीं सोचो कि हमने केवल नियमों की आचारसंहिता तुम्हारे सामने रखी है। हमने तो शक्ति और अधिकार की उंगलियों से सर्वोत्तम अमृत के पात्र को खोल दिया है। इसका साक्षी है वह जो इस प्रकटीकरण की लेखनी ने प्रकटित किया है। ओ अन्तर्दृष्टि के लोगों! इस पर विचार करो।

जब भी मेरे विधान मेरी वाणी के स्वर्ग में सूर्य की भांति उदित हों तो उनका अनुपालन पूरी निष्ठा के साथ सब के द्वारा किया जाना चाहिये। यद्यपि मेरे विधान ऐसे प्रतीत हों कि वे सभी मान्य धर्मों की स्थापित मान्यताओं का खण्डन करते हैं तथापि उनका अनुपालन अवश्य ही किया जाना चाहिये। वह जो चाहता है वही करता है। वह चुनाव करता है और उसके चुनाव की ओर अंगुली उठाने का अधिकार किसी को भी नहीं है। जो भी वह सर्वोत्तम प्रियतम आदेश देता है वह, सच ही, सबको प्रिय होना चाहिये। इसका साक्षी स्वयं सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी है। सर्वकृपालु की मधुर सुरभि

का जिस किसी ने भी रसास्वादन किया है और इस वाणी के स्त्रोत को पहचान लिया है वह अपने शत्रुओं के आघातों को सह लेगा ताकि वह ईश्वर के विधानों की सत्यता मानवजाति के बीच स्थापित कर सके। उसका कल्याण होगा जो ईश्वर की ओर उन्मुख हुआ है और जिसने उसके निर्णायक आदेशों को समझ लिया है।

156. तुम अपना ध्यान मनुष्य की संतानों की भलाई तथा शांति के विकास में लगाओ। अपनी सोच तथा इच्छाओं को पृथ्वी के निवासियों की शिक्षा पर लगाओ ताकि सर्वमहान नाम की शक्ति से पृथ्वी को विभाजित करने वाले मतभेदों को दूर किया जा सके और समस्त मानवजाति एक व्यवस्था को अपनाकर एक ईश्वरीय नगर की प्रजा बन सके। अपने हृदयों को पवित्र और स्वच्छ कर लो तथा इसे ईर्ष्या अथवा घृणा के कांटों का शिकार न होने दो। तुम एक ही विश्व में रहते हो तथा एक ही सर्वमहान् इच्छा से उत्पन्न हो। आशीर्वादित है वह जो सभी मनुष्यों से पूर्ण दया और प्रेम के भाव से मिलता है।

157. हमारे धर्म का संदेश देने के लिये जिन्होंने अपना देश छोड़ दिया है उन्हें "आज्ञाकारी आत्मायें" शक्ति प्रदान करेंगी। उनके साथ हमारे चुने हुये देवदूत जायेंगे, जैसा कि सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञ प्रभु द्वारा आदेशित है। जो सर्वशक्तिशाली की सेवा का सम्मानजनक अवसर प्राप्त करते हैं उन्हें महान वरदान प्राप्त होता है। मेरे जीवन की सौगंध ! वैसे कार्यों की तुलना में कोई अन्य कार्य महान नहीं है जो कार्य ईश्वर द्वारा निर्धारित किये गये हैं। ऐसी सेवा, सच, सभी सद्कार्यों के

बीच सर्वोत्तम है और सभी सद्कार्यों का आभूषण है। यही आदेश सर्वोच्च प्रभुसत्ता सम्पन्न अनादि प्रकटकर्ता द्वारा दिया गया है।

जो भी हमारे धर्म का संदेश देने के लिये आगे आता है उसे अवश्य ही सभी सांसारिक वस्तुओं से अपने को अनासक्त कर लेना चाहिये और उसके लिये यह उचित है कि वह हमारे धर्म की विजय के उद्देश्यों को ही प्रधानता दे। परम सुरक्षित पाती में ऐसा ही आदेश दिया गया है। और जब वह अपने स्वामी के धर्म के लिये घर छोड़ने का निश्चय कर लेता है तब उसे ईश्वर में अपनी पूरी आस्था रखनी चाहिये कि ईश्वर उसकी यात्रा के सभी साधन उपलब्ध करायेगा। तब उसे स्वयं को सद्गुणों की पोशाक से विभूषित करना चाहिये। ऐसी ही आज्ञा सर्वशक्तिशाली, सर्वस्तुत्य प्रभु द्वारा दी गई है।

अगर वह प्रभुधर्म की ज्योति से अपने अन्तर्मन को प्रकाशित कर लेता है, अगर वह समस्त सांसारिक वस्तुओं से मुक्ति प्राप्त कर लेता है तो जो शब्द उसकी वाणी से निकलेंगे, उन शब्दों का ऐसा प्रभाव सुनने वालों पर होगा कि वे जाग उठेंगे। प्रभु, वस्तुतः, सर्वव्यापी सर्वज्ञाता है। वह व्यक्ति सुखी है जिसने हमारी वाणी को सुना है और हमारी पुकार पर जिसने ध्यान दिया है। सत्यतः वह व्यक्ति उनमें से है जो हमारे समीप लाये जायेंगे।

158. प्रभु ने अपने धर्म का संदेश देने को प्रत्येक व्यक्ति का परम महान कर्त्तव्य बतलाया है। अपने इस कर्त्तव्य के अनुपालन के लिये जो कोई भी उठ खड़ा होता है उसे

प्रभु–संदेश के प्रसार के पूर्व स्वयं को सदाचार और सद्चरित्रता के आभूषण से सुसज्जित कर लेना चाहिये, ताकि उसके शब्द उन लोगों को आकर्षित करें, जो उसे ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

159. मानव–मस्तिष्क की तुच्छता पर विचार करो। वे उस चीज की कामना करते हैं जो उन्हें हानि पहुंचाती है और उस चीज को दूर हटा देते हैं जो उन्हें लाभ पहुंचाती है। वे, सच में, उन लोगों में से हैं जो पथभ्रष्ट हो चुके हैं। हम कुछ लोगों को स्वतंत्रता की कामना करते हुये पाते हैं और उस पर वे गर्व करते हैं। ऐसे लोग गहन अज्ञान की स्थिति में हैं।

स्वतंत्रता, अन्ततः, अवश्य ही विद्रोह की ओर उन्मुख करेगी, जिसकी ज्वाला कोई भी शांत नहीं कर सकता। इस प्रकार की चेतावनी तुम्हें वह देता है जो सबका लेखा–जोखा रखता है, जो सर्वज्ञाता है। तुम यह जान लो कि स्वतंत्रता का मूर्तरूप और इसका प्रतीक पाशविक है। मनुष्य के लिये जो उचित है वह यह है कि ऐसे नियंत्रक प्रतिबंधों के प्रति वह समर्पित हो जो उन्हें उनके स्वयं की अज्ञानता से बचा सके और षड्यंत्रकारी की दुर्भावनाओं से सुरक्षित रख सके। स्वतंत्रता औचित्य की मर्यादा का उल्लंघन करने के लिये मनुष्य को विवश कर देती है और उसके अपने उच्च स्थान के सम्मान को कम कर देती है। यह तुच्छता और दुष्टता के स्तर की हद तक उसे गिरा देती है।

मनुष्यों को भेड़ों के ऐसे समूह के रूप में जानो जिसकी सुरक्षा के लिये गड़ेरिये की आवश्यकता होती है। यह वस्तुतः सत्य है, निश्चित सत्य है। कुछ खास परिस्थितियों में हम

स्वतंत्रता का अनुमोदन करते हैं और अन्य स्थितियाँ इसकी स्वीकृति देने से इन्कार करती हैं। हम, सत्यतः, सर्वज्ञाता हैं।

कहो : सच्ची स्वतंत्रता हमारी आज्ञाओं के प्रति समर्पण में निहित है। इसके सम्बंध में तुम थोड़ा ही जानते हो। यदि मनुष्य उनका अनुपालन करने लगे जो हमने प्रकटीकरण के स्वर्ग से उनके लिये भेजा है तो यह निश्चित है कि वे सच्ची स्वतंत्रता को प्राप्त करेगा। वह मनुष्य सुखी है जिसने प्रभु का उद्देश्य उन सब के माध्यम से समझ लिया है जो उस प्रभु ने अपनी इच्छा के स्वर्ग से प्रकट किया है और जो समस्त सृजित वस्तुओं में व्याप्त है। कहो : वह स्वतंत्रता जो तुम्हें लाभ देती है वह और कहीं नहीं अपितु ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पण में है। ईश्वर जो शाश्वत सत्य है। जिस किसी ने भी इसकी मधुरता को परख लिया है वह धरती और स्वर्ग के सभी साम्राज्य के बदले समर्पण अधिक पसंद करेगा।

160. वह व्यक्ति प्रभु की एकता में सच्चा विश्वास करने वाला है जो, इस युग में प्रभु को सर्वोच्च, अद्वितीय तथा अतुलनीय मानता है और उन सभी तुलनाओं से परे मानता है जिससे मनुष्य ने प्रभु की तुलना की है। वह भारी गलती करता है जो इन तुलनात्मक समानताओं को ही ईश्वर समझ बैठता है। कारीगर और उसकी हस्तकला, चित्रकार और उसके चित्र के बीच के सम्बंध पर विचार करो। क्या यह कभी माना जा सकता है कि जो कला उन्होंने रची है वह कला स्वयं वह कलाकार है? उसकी सौगंध जो स्वर्गलोक के सिंहासन का और धरती का स्वामी है, वे अन्य किसी दृष्टि से

नहीं देखे जा सकते सिवाय इसके कि वे उनके नियंता की श्रेष्ठता तथा सम्पूर्णता के प्रमाण हैं।

161. पवन की तरह निर्बन्ध बनो जब तुम उसके संदेश का संवहन करो, जिसने दिव्य मार्गदर्शन के प्रभात को प्रकट किया है। इस पर विचार करो कि किस प्रकार ईश्वर ने जो आदेश दिया है, उसके प्रति आज्ञाकारी होकर हवा धरती के समस्त क्षेत्रों में बहती है, चाहे वह निर्जन स्थान हो या घनी आबादी वाली जगह। न तो निर्जनता का दृश्य और न ही सम्पन्नता के प्रमाण उसे दुःखी अथवा प्रसन्न कर सकते हैं। अपने रचयिता की आज्ञा के अनुसार यह प्रत्येक दिशा में बहती है। ऐसा ही प्रत्येक वैसे व्यक्ति को होना चाहिये जो एकसत्य प्रभु के प्रेमी होने का दावा करते हैं। उसके लिये यह उचित है कि प्रभुधर्म की मूलभूत बातों की ओर वह अपनी दृष्टि लगाये रखे और इसके प्रसार के लिये अथक परिश्रम करे। सम्पूर्णतः ईश्वर के निमित्त उसे प्रभु के संदेश का उद्घोष और प्रसार करना चाहिये और उसके शब्दों के प्रति उसके श्रोताओं की जो भी प्रतिक्रिया हो उसे उसी रूप में स्वीकार करना चाहिये। जो स्वीकारेगा और विश्वास करेगा, वह पुरस्कृत होगा और वह जो विमुख होगा, अपनी ही सजा भुगतेगा।

मैं सत्य कहता हूँ, इस सर्वशक्तिशाली प्रकटीकरण में अतीत के सभी ईश–दिवसों ने अपनी सर्वोच्च परिपूर्णता प्राप्त की है। इस प्रकार का परामर्श सर्वज्ञाता, सर्वबुद्धिमान तुम्हारे स्वामी ने दिया है। ईश्वर का गुणगान हो, वह सर्वलोकों का स्वामी है।

163. अगर कोई व्यक्ति अपने हृदय में इस पर विचार करे जो सर्वोच्च लेखनी ने प्रकट किया है और उसके माधुर्य का पान करे तो यह निश्चित है कि वह समस्त सांसारिक इच्छाओं से स्वयं को मुक्त पायेगा और सर्वशक्तिशाली की इच्छा के प्रति समर्पित हो जायेगा। वह व्यक्ति धन्य है जिसने इतना उच्च स्थान प्राप्त कर लिया है और स्वयं को इस उदार अनुकम्पा से वंचित नहीं किया है।

इस पवित्र भूमि का उल्लेख तथा प्रशंसा समस्त पवित्र ग्रंथों में की गई है। यहाँ पर ईश्वर के अवतार तथा उसके चुने हुए लोग प्रकट हुए हैं। इस भूमि के बियाबान में ईश्वर के संदेशवाहकों ने विचरण किया है तथा यहीं से उनकी आवाज "मैं यहाँ हूँ, मैं यहाँ हूँ, हे मेरे ईश्वर" सुनाई दी है। यह वह प्रतिज्ञापित भूमि है जहां ईश्वर के प्रकटीकरण का अवतरित होना निश्चित था। यह ईश्वर की अन्वेषणविहीन आज्ञा की घाटी, श्वेत स्थल तथा कभी फीका न पड़ने वाले शौर्य का स्थल है। जो कुछ भी आज हो रहा है, पूर्व के धर्मग्रंथों में इसका वर्णन है। इन्हीं धर्मग्रंथों ने एक स्वर में इस धरा के निवासियों की निंदा की है। एक समय तो उन्हें "विश्वासघातियों की पीढ़ी" भी बताया गया। देखो विश्वासघातियों की पीढ़ी से घिरा हुआ यह प्रताड़ित किस प्रकार ऊँची आवाज में समस्त मानवजाति को उस ओर बुला रहा है जो विश्व की अंतिम इच्छा, पराकाष्ठा तथा भव्यता का दिवावसंत है। प्रसन्न है वह व्यक्ति जो अभिव्यक्ति के साम्राज्य के स्वामी की आवाज को सुनकर उठ खड़ा हुआ है, दुःखों का भागी होगा वह पथभ्रष्ट जो इस सत्य से दूर हो गया है।

164. मृत्यु प्रत्येक दृढ़ अनुयायी को वह प्याला अर्पित करती है जो वस्तुतः जीवन है। यह आनंद की वर्षा करती है और प्रसन्नता की संवाहिका है। यह अनन्त जीवन का उपहार देती है।

165. पूरे एक हजार साल बीत जाने के पहले जो कोई भी सीधे ईश्वर से प्राप्त प्रकटीकरण का दावा करता है वह निश्चय ही मिथ्यावादी और ढोंगी हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह ऐसे लोगों द्वारा अपने दावे को वापस लेने और उनको नकारने में कृपापूर्वक उनकी सहायता करें । अगर वह प्रार्थना करे तो ईश्वर निश्चय ही उसे क्षमा–दान प्रदान करेंगे। अगर वह अपनी गलती पर अड़ा रहे तो निश्चय ही ईश्वर ऐसे व्यक्ति को भेजेगा जो उसके साथ क्रूरतापूर्वक पेश आयेगा। दण्ड देने में ईश्वर सच, बहुत भयानक है। जो भी इस पद के स्पष्ट अर्थ से अलग हटकर इसकी व्याख्या करता है वह ईश्वर की आत्मा और दया से वंचित रह जाता है; ईश्वर की आत्मा और दया जो सभी सृजित वस्तुओं में व्याप्त है। ईश्वर से डरो और अपनी मिथ्या कल्पनाओं की राह पर मत चलो। अपितु सर्वशक्तिशाली, सर्वबुद्धिमान अपने ईश्वर की आज्ञाओं का अनुपालन करो।

बहाई आदर्श

समृद्धि में उदार बनो और विपत्ति में कृतज्ञ बनो। अपने पड़ोसी के विश्वास के योग्य बनो और उसे प्रसन्नता तथा मित्रता के भाव से देखो। निर्धनों के लिये खजाना और धनवानों के लिये सचेतक बनो, अभावग्रस्तों के अभावहर्ता और प्रतिज्ञापालक बनो। तुम्हारा निर्णय न्यायपूर्ण हो और तुम्हारी वाणी में संयम हो। किसी भी मनुष्य के प्रति अन्याय मत करो और सब के प्रति विनम्रता दिखलाओ। अंधकार में भटकने वालों के लिये दीपक के समान बनो, शोकमग्नों के लिये आनन्द, प्यासों के लिये एक सागर और विपत्ति में पड़े हुए लोगों के लिये आश्रय बनो, अन्याय से पीड़ित लोगों के रक्षक और आश्रयदाता बनो। ईमानदारी और सदाचारी के कारण तुम्हारे सभी कार्य औरों से अनूठे हों। अनजाने को घर का अपनापन दो, कष्टपीड़ितों के लिये शीतल मरहम, संत्रस्तों के लिये शक्ति के स्तम्भ बनो। नेत्रहीनों के लिये नेत्र और पथभ्रष्टों के भटकते पाँव के लिये पथदर्शी प्रकाश बनो। सत्य के मुखड़े के आभूषण, वफा के माथे के मुकुट, सदाचार के मंदिर के स्तम्भ, मानवता की देह के प्राणवायु, न्याय की सेनाओं की ध्वजा, सद्‌गुणों के क्षितिज के जगमगाते सितारे, मानव–हृदय की धरती के लिये ओसबिन्दु, ज्ञान के महासागर के जहाज, प्रभु की अक्षय सम्पदाओं के गगन के सूर्य, प्रज्ञा के मुकुट के रत्न, अपनी पीढ़ी के आकाश के प्रखर प्रकाश और विनम्रता के वृक्ष के फल बनो।